ब्रजभाषा : रीति-शास्त्र ग्रंथ-कोश

संपादक
जवाहरलाल चतुर्वेदी

शक १८८६ : सन् १९६५
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशन वर्ष	शक १८८६ : सन् १९६५ ई०
संस्करण	प्रथम संस्करण : ११०० प्रतियाँ
मूल्य	[illegible] ५०
प्रकाशक	श्री [illegible] सिंह सचिव, प्रथम शासन-निकाय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
मुद्रक	रामप्रताप त्रिपाठी, शास्त्री सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी ब्रजभाषा और उसके साहित्य के जाने-माने विद्वान् लेखक हैं। आपने ब्रजभाषा के रीति-शात्र के ग्रंथों के नामों का संकलन कर उनका सम्पादन किया है। यह आपके कई वर्षों के श्रम और धैर्य का सुफल है। आपकी इस साधना से ब्रजभाषा-साहित्य की कितनी ही लुप्तप्राय कड़ियाँ प्रकाश में आयी हैं।

रीति-शास्त्र भारतीय काव्य-शास्त्र का एक प्रमुख अंग है। ब्रजभाषा में न केवल सरस भक्ति की काव्य-धारा प्रवाहित हुई है, अपितु समय पाकर उसमें रीति-शास्त्र भी निर्मित हुए हैं, जिनका प्रभाव परवर्ती साहित्य के लिए प्रेरणा-दायक सिद्ध हुआ है।

हमें आशा है कि 'ब्रजभाषा : रीति-शास्त्र ग्रंथ-कोश' अपने विषय के जिज्ञासुओं और अनुसंधित्सुओं के लिए उपयोगी सन्दर्भ-ग्रंथ का काम देगा। सम्मेलन को, ऐसा ग्रंथ प्रकाशित करने पर प्रसन्नता है।

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव, प्रथम शासन-निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

समर्पण

जिनके प्रेम-सुगंध से सुरभित नाना-विधि से दिये गये आर्थिक अमृत
को पीकर यह 'ब्रजभाषा-साहित्य' की अमर-वेली
नित्य नयी खोज-रूपों में लहलहाई, उन्हीं
मान्यवर 'राजा तथा रानी साहिबा'
बंबई के कर-सरोजों में...

—संपादक

पुस्तक के संबंध में

राष्ट्रभाषा 'हिंदी' में भारत के कुछ और यूरोप के प्राय: समस्त पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों में विभूषित 'संस्कृत' साहित्य की अजरामर हस्त-लिखित कृतियों का अंग्रेजी में लिखा और छपा—'कैटलॉग ऑफ कैटलॉग्रस'[1], अर्थात् 'सूचीपत्रों का सूचीपत्र' जैसी कोई रचना नहीं है, जिससे उसके—हिंदी के पुरा साहित्यिक अंगों की हस्त-लिखित सामग्री से जान-पहचान हो जाय...। फलत: उसका जिज्ञासु इधर-उधर भटकता फिरता है। उसे अपने अभीष्ट हस्त-लिखित तथा मुद्रित ग्रंथ की सूचना कि वह कहाँ-कहाँ मिलता है, किस-किस समय का है तथा वह मुद्रित कहाँ-कहाँ हुआ है, एक स्थान विशेष पर नहीं मिलती। यह राष्ट्रभाषा मानी जाने वाली भाषा के लिए खेद की बात है। गुजराती-भाषा में इस प्रकार की जानकारी देने वाला एक अल्प-प्राण ग्रंथ है—"गुजराती हाथ-प्रतोनी संकलित यादी", जो विद्वद्वर 'पं० केशवराम-काशीरामजी शास्त्री' की देख-रेख में 'अहमदाबाद' (गुजरात) की 'वर्नाक्यूलर सोसाइटी' से सं०—१९९५ वि० में प्रकाशित हुआ था। यह 'हाथ-लिखी' पुस्तकों का, उनकी प्राप्ति-स्थान विशेषों को बतलाने वाला छोटा-सा प्रथम प्रयास था, जो घर-बैठे कुछ 'मुद्रित-अमुद्रित'-ग्रंथ-सूचियों, जैसे—फार्बस गुजराती सभा, बंबई; डाही लक्ष्मीबाई पुस्तकालय, नडियाद (गुजरात); प्राच्य-विद्यामंदिर पुस्तकालय, बड़ौदा; भंडारकर इन्स्टीट्यूट पुस्तकालय, पूना (महाराष्ट्र); गुजराती-प्रेस, बंबई; अंबालाल बु० जानी तथा पुरुषोत्तम विश्राम मावजी के निजी पुस्तकालय, एम० टी० बी० आर्ट कालेज, सूरत और छगनलाल मोदी का संग्रह-इत्यादि को लेकर बटोरा गया था। अत: इसमें समूचे गुजरात-प्रांत में प्राप्य गुजराती की 'हाथ-लिखी' पुस्तकों की सूचना देने की बात तो दूर, जहाँ (अहमदाबाद) से वह प्रकाशित हुआ है, उस नगर के विविध विख्यात 'जैन-ग्रंथ भंडारों' में मिलने वाली संख्या से परे गुजराती की हाथ-लिखी प्रतियों का उल्लेख उसमें नहीं है। फिर भी वह शोभनीय है, क्योंकि

१. संपादक—आफ्रेट थियोडोर; प्रका०—ओरियंटल सोसायिटी, लिपिजिग (जर्मनी), सं०—१८९१ ई०।

वह एक छोटे-से दायरे का ही सही, गुजराती-भाषा की 'हाथ-प्रतियों'—हस्तलिखि प्रतियों—का उनके यत्र-तत्र मिलने के भ्रामक स्थान-विशेषों की सूचना देने वाला अस्तव्यस्त प्रकाशन है, जो भारतीय-भाषाओं में सर्वप्रथम होने के कारण नमन-योग्य ही कहा जा सकता है, इसमें कोई 'नू-नच' नहीं। इसके बाद कुछ समय हुआ—'मदरास-विश्वविद्यालय' से संस्कृत-अंग्रेजी के ख्यातनामा विद्वान् डा० वी० राघवन के तत्त्वावधान में 'मदरास-सरकार' के संपूर्ण व्यय पर पूर्व-लिखित 'कैटलॉग ऑफ कैटलॉग्रम' का परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण 'न्यू कैटलॉग ऑफ कैटलॉग्रम'[1] नाम से घर-बैठे कुछ और भी भारतीय-ग्रंथागारों की खोज-खबर के साथ संपादित होकर प्रकाशन का कार्य प्रारंभ हुआ। उसका प्रथम खंड—'अ प्रकाशित भी हुआ, पर आजकल वह बंद-सा पड़ा है। आगे के हिस्से प्रकाश में' नहीं आ पाये हैं। जो खंड प्रकाशन में आया है, उसे भी पूर्ण नहीं कहा जा सकता; कारण, भारत के अनेक प्रसिद्ध नगरों के ग्रंथागारों में सुरक्षित संस्कृत के संख्यातीत हस्त-लिखित ग्रंथों का उसमें समावेश नहीं हो पाया है।

भारत में संस्कृत के हाथ-लिखे ग्रंथों की खोज का कार्य बहुत दिन पहले (स० १८६८ ई०) 'भारतीय अंग्रेजी-सरकार' की देखरेख में प्रारंभ हुआ था। परिणाम भी अच्छा रहा। बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, मदरास, मध्य-प्रदेश तथा पंजाब-आदि में, खोज होने पर जो भी संस्कृत के हाथ-लिखे ग्रंथ मिले, उन सबका वर्गी-कृत विवरण विविध भारतीय विद्वानों द्वारा संपादित कराकर तद् समय की सरकार ने उनके पूर्ण परिचय के साथ प्रकाशित किये। उस समय के कई उन्नतशील राज्यों ने, जिनमें 'गायकवाड़ सरकार' प्रधान है, इस प्रकार के सुंदर उपक्रम किये। कुछ भारत के विविध नगरों में सुशोभित पुस्तकालयों; जैसे—एशियाटिक सोसा-यिटी, कलकत्ता-बंबई; खुदाबख्श-लायब्रेरी, पटना (बिहार); भंडारकर इन्स्टी-ट्यूट, पूना—इत्यादि ने भी इस महान् कार्य में हाथ बटाया और अपने-अपने यहाँ की संस्कृत हस्त-लिखित पुस्तकों के सूचीपत्र प्रकाशित किये; अतः इन सब आद्यंत के सूचीपत्रों से संस्कृत के हस्त-लिखित ग्रंथों का अच्छा खासा परिचय मिल जाता है। हिंदी में भी 'उत्तर प्रदेश' की 'अंग्रेजी-सरकार' के सद्प्रयत्न से 'काशी' की स्वनामधन्य संस्था 'नागरी प्रचारिणी सभा' की देखरेख में स०—१९०० ई० से 'हिंदी पुरा-ब्रजभाषा-साहित्य' की हस्त-लिखित पुस्तकों की खोज का कार्य प्रारंभ हुआ, जो येनकेन आज भी मंथर गति से चल रहा है। उसके

---

१. संपादक—डा० वी० राघवन; प्रका०—मदरास-विश्वविद्यालय, स०-१९४९ ई०।

कितने-ही 'त्रैवार्षिक-विवरण' प्रकाश में आये हैं, पर जैसे भारतीय विविध प्रांतों की सरकारों ने अपने-अपने यहाँ प्राप्त 'संस्कृत-हस्त-लिखित ग्रंथों के खोज-विवरण' भारत के मान्य संस्कृत विद्वानों-द्वारा संपादित कराकर प्रकाशित किये, वैसे इन हिंदी-पुरा-साहित्य के विवरणों को नहीं कहा जा सकता...। उनमें अनेक, संख्या से परे, भद्दी भूलें हो गयी हैं। इन हिंदी-पुरा-साहित्य-खोज-विवरणों के मान्य संपादक विद्वान् थे—वे संस्कृत-अंग्रेजी साहित्य के विशेषज्ञ भी थे; पर जिस भाषा के ग्रंथ-रत्नों का इन 'खोज-विवरणों' में विवरण प्रस्तुत किया गया है, उसके—"कुल, जाति, रूप, गुण और शील-स्वभाव के ज्ञाता नहीं थे, दूर के रिस्तेदार बनने वाले थे; अतः हर प्रकार की भूलें होना स्वाभाविक था। कितने ही विवरणों की असंगत भूलें तो इतनी हास्यास्पद रूप में लिखी गयी हैं कि उन्हें देखकर रोना आता है, क्योंकि वे भूलें, हिंदी के विविध साहित्येतिहास-ग्रंथों में बार-बार दुहरायी जा रही हैं; अतः इस प्रकार अनेक अनभिज्ञ हाथों-द्वारा जोरी-बटोरी तथा संजोयी गयी हिंदी-पुरा-साहित्य की सामग्री को देखकर मन में कभी-कभी विचार करवटें लेने लगता था कि 'हिंदी के इस अस्तव्यस्त पुरा-साहित्य-सागर' का फिर से आलोडन कर उसे कुछ तथ्ययुक्त खोज-खबर के साथ विशेष-ग्रंथों के रूपों में तद्-तद् विषय के कोमल कगारों से उन्हें आबद्ध कर प्रवाहित किया जाय, तो उसके चाहनेवालों को उनके मनोवांछित विषयों की यत्र-तत्र बिखरी हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुरा-साहित्यिक सामग्री की जानकारी उनके विविध मिलने वाले स्थानों के साथ मिल जाय, तो कैसा...? साथ-ही काल के गाल में नित्य-प्रति जाती हुई हिंदी की 'पुरा-साहित्यिक' कृतियाँ नाम-रूप में ही सही, सुरक्षित हो जायँ....। विचार चलता रहा—चलता रहा और समय दिन, मास तथा वर्षों में बिखर कर हँसता-बोलता रहा। अकस्मात् एक ऐसी घटना घटी कि इन पंक्तियों के लेखक को सारे अपने-पराये कार्य, जो भागवत-अनुसार—

"या दुस्त्यजं स्वजनमार्यं पंथ च०....।"

—भा०—१०।४७।६१,

थे, उनसे विमुख होकर संस्कृत-साहित्य के एक विशेष विषय को लेकर "संस्कृत, हिंदी, गुजराती-आदि भाषाओं" के हाथ-लिखे तथा मुद्रित ग्रंथों की खोज में निकलना पड़ा तथा संपूर्ण भारत के पूर्व से लेकर पश्चिम और उत्तर से लेकर दक्षिण-दिशांतर्गत उसके सारे नगरों, एवं जहाँ तक हो सका उसके गाँवों और घरों में मिलने वाले तद्-विषयक ग्रंथ-रत्नों को जा-जाकर उलटना-पलटना पड़ा। अस्तु इस प्रयास में 'हिंदी पुरा-साहित्य' के भी अनेक संख्या से परे सुंदर-से-सुंदर ज्ञाता-ज्ञात कवियों के हस्त-लिखित तथा मुद्रित ग्रंथ-रत्न भी देखने में आये। उन सब की

सूची भी ग्रंथों में लिखे गये नाम और समय (संवत्) के साथ बटोरता गया। फिर अज्ञात समय में अपने-से बिछुड़े हुए यूरोप के ग्रंथागारों में प्रतिष्ठित हिंदी-पुरा-ग्रंथों के परिचय की ओर ध्यान गया, उन्हें भी तद्-तद् स्थानों के पुस्तकालयों की सूचियाँ प्राप्त कर पालता-पोषता गया, तद्-फल आपके सामने हैं। यह छोटा-सा प्रयास अभी चार वर्गों में विभक्त—"नायिका-भेद, नख-सिख, बारह-मासा तथा षट्-ऋतु-वर्णन" के प्राप्त हस्त-लिखित ग्रंथों की सूची, उनके विविध मिलने के स्थानों के साथ, फिर वे यदि कहीं से प्रकाशित हुए हैं, तो उसकी सूचना भी तद्-तद् ग्रंथों के साथ देते हुए एवं सहादत रूप में—जार्ज ग्रीयर्सन का इतिहास, शिवसिंह सरोज, नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी की खोज-रिपोर्ट एवं मिश्रबंधु-विनोद इत्यादि के साथ अन्य खोज-विवरणों के उल्लेखों को लेकर प्रस्तुत कर रहा हूँ—भूल-चूक लेनी-देनी। यदि हिंदी-जगत् को मेरा यह क्षुद्र-प्रयास जरा भी रुचिकर हुआ, तो इसके दूसरे-दूसरे अंग—छंद, अलंकार, शास्त्र, कोष, व्याकरण—के हस्त-लिखित ब्रजभाषा-ग्रंथों की सूचियाँ ही नहीं, उसके 'गद्य' और 'कला'-ग्रंथों की सूचियाँ भी, जो प्रस्तुत हो चुकी हैं, इसी सजधज के साथ प्रकाश में लाने का उपक्रम करूँगा।

एक बात और, वह यह कि आज बहुत दिनों के पाले-पोसे ये मन के मीत डायरी तथा नोट-बुकों की गोदों से उतरकर ग्रंथ-रूप में बन-ठनकर नये-नये साथियों के साथ हिल-मिलकर हँसते-बोलते खेलने चले हैं, यह हर्ष की बात है। डायरी तथा नोट बुकों की गोद में इन्होंने बड़े-बड़े दुःख उठाये हैं। वहाँ ये वर्षा के पानी-से भींगे, मूसों से कुतरे गये तथा दीमकों से बुरी तरह खाये तथा पचाये गये, अतः अंग-भंग होना स्वाभाविक था। फलतः किसी का रचयिता, किसी का रचना-काल (समय) तथा किसी का ठौर-ठिकाना (प्राप्ति-स्थान) बिछुड़ गया...। उनकी सही पहचान के लिये—जैसा पूर्व में निवेदन किया जा चुका है—"जार्ज ग्रियर्सन का इतिहास, शिवसिंह सरोज"—इत्यादि का पल्ला पकड़ना पड़ा, जिससे उनकी सही-सही पहचान का पता लग सके और शोध-कर्त्ताओं की भूख मिट जाय।

दूसरी बात, ग्रंथ-नामों में कहीं-कहीं सादृश्य के साथ-साथ उनका उल्लेखनीय प्रकरण-भंग भी (इस पुस्तक में) हो सकता है। लेखक इस दोष से मुक्त है, क्योंकि भारतीय भाषाओं में यह कार्य प्रथम है। यूरोप आदि के सूची-विशेषज्ञों से इस संबंध में परामर्श किया गया, तो आज्ञा मिली—"जो-जो ग्रंथ जिस-जिस नाम से उसके प्राप्ति-स्थानों में मिलें, उनका तद्तद् उल्लेख किया जाय, जिससे उनके पुनः पुनः सार-संभाल करने वाले को भ्रम में न पड़ना पड़े; अतः

"या दृशं पुस्तकं दृष्ट्वा ता दृशं लिखितं मया....।

—फिर, विविध स्थानों पर प्राप्त 'नाम-सोम्य' वाले ग्रंथों का एक-दूसरे से मिलान करने का कार्य भी एक कठिन समस्या ही है, क्योंकि एक नाम-साम्यवाला ग्रंथ पूर्व में मिलता है, तो दूसरा अति दूर पश्चिम में. . . । अतः दोनों मिलाये नहीं जा सकते। दोषारोपण अवश्य किया जा सकता है। इस अभद्रता के लिये लेखक क्षमा चाहता है।

एक तीसरी बात भी, ब्रजभाषा के हीरे जैसे उजले 'नायिका-भेद' विषयक विविध आगे-पीछे की रचना-विशेषों को यथास्थान बैठांने का उपक्रम करते हुए संग्रह-कर्ताओं तथा उनके सहारे डाक्टरेट प्राप्त करने के लिये 'डी० फिल्०' या 'डी० लिट्०' उपाधि प्राप्त करने के लिये उद्यत निबंध-लेखकों ने अथवा तत्संबंधी कोई नया ग्रंथ-रचनेवाले विद्वद्जन ने अपनी-अपनी मान्य कृतियों में ब्रजभाषा, विशेषकर उसके नायिका-भेद संबंधी साहित्य-श्रेष्ठ की रचनाओं के प्रति जो उनके 'रूप-रंग' एवं सहज सुंदर भाषा-सौष्ठव को बिगाड़ने की विकृतियाँ, जैसे—"किसी कवि-कृत नायिका के मान्य उदाहरण को उसके विपरीत दूसरी नायिका-वर्णन के उदाहरण प्रस्तुत करना, नायिका-भेद-विभूषित उसके मोटे-मोटे भेद—'धीरा-खंडिता' तथा 'वचन विदग्धा' और 'स्वयं दूतिका'—इत्यादि को न समझ उनका एकत्रीकरण करना, स्पष्टीकरण के बहाने उद्धृत छंद के साथ अपने भावहीन अभिलेखों को नत्थी करना, जन्म-जात मधुर भाषा के स्वाभाविक स्वरूप का नाना विधि से संस्कृतज्ञ बनाते हुए उसे सौंदर्यहीन करना और तल्लिखित भाषा के स्व-मुखों से दूर-पास के नये नातेदार बनना इत्यादि अनेक उपहास किये गये हैं, वह सब भी उल्लेखनीय था, क्योंकि इन नये नातेदार बनने वालों तथा समझ-दारों से ब्रजभाषा-साहित्य को काफी हानि पहुँची है, उसका मधुर स्वभाव बिगड़ा है, उसके यशः स्वरूप शब्द-यष्टि का गठन तथा भाव बिगड़े हैं एवं उसका नाना-विध अलंकृत आंतरिक नष्ट-भ्रष्ट हुआ है, जिसे देख-सुनकर विचार हुआ कि इन सब मसलों पर कुछ प्रकाश डाला जाय तथा ऊपर लिखे नायिका-भेद के इन मिले-जुले भेदों को यथावत रूप प्रस्तुत करते हुए कुछ कहा-सुना जाय, पर वह सब—

"बित्तेभर के मियाँ, नौ बित्ते की दाढ़ी।"

जैसी बात बनते देख "कागद थोरौ, हित घनो"—जैसी लोकोक्ति का सहारा ले, कम-से-कम इस समय उस सब से नाता नहीं जोड़ रहा हूँ—उसको दूर-से ही नमस्कार कर रहा हूँ, वह सब बा-मौक़ा फिर कभी. . . . ।

मथुरा
देवोत्थान एकादशी
सं० २०२१ वि०

विनीत :
जवाहरलाल चतुर्वेदी

अनुक्रम

संकेत

अ० भा=अखिल-भारतीय।

अ० भा० ब्र० सा०=अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य-मंडल।

ई०=ईस्वी।

उना०=उपनाम।

उपना०=उपनाम।

उप्र०=उत्तर प्रदेश।

कुँ०=कुँवर।

जसं०=जन्म संवत्।

जस०=जन्म सन्।

जा० ग्री०=जार्ज ग्रीयर्सन।

ठा०=ठाकुर।

डा०=डाक्टर।

द० भा०=दक्षिण-भारत।

दे०=देखिये।

ना० प्र०=नागरी प्रचारिणी सभा।

ना० प्र० स०=नागरी प्रचारिणी सभा।

पं०=पंडित।

पुं० सं०=पुस्तक संख्या।

पु० सं०=पुस्तक-संवत्।

पुं० स०=पुस्तक-रचना सन्।

प० स०=पुस्तक-मुद्रण सन्।

पो०=पोष्ट।

पृ ०=पृष्ठ।

प्र०=प्रकाशक।

प्र० का०=प्रकाशित काल।

प्रति सं०=प्रति संख्या।

प्राप्र०=प्राप्त-प्रति।

प्राप्तस्था०=प्राप्त स्थान।

प्रास्था०=प्राप्त स्थान।

प्राहलिरि०=प्राचीन हस्त लिखित खोज रिपोर्ट।

प्रा० ह० पो०=प्राचीन हस्त-लिखित-पोथी।

बंसं०=बंध-संख्या।

बा०=बाबू।

म० प्र०=मध्य-प्रदेश।

म० भा०=मध्य-भारत।

मि० बं० वि०=मिश्र बंधु-विनोद।

मु०=मुद्रक।

मूना०=मूल नाम।

रच०=रचयिता।

रचसं०=रचना-संवत्।

रचस०=रचना-सन्।

रा० खो० रि०=राजस्थान; खोज-रिपोर्ट।

रा० पू०=राजपूताना।

ला०=लाला।

लिका०=लिपिकाल।

लिसं०=लिपि संवत्।

वि०=विक्रमी।

शिस०=शिवसिंह-सरोज।

सं०=संपादक।

सं०=संवत्।

संक०=संकलयिता।

स०=सन्।

हिं०इ०=हिंदी इतिहास।

हिं० सा०=हिंदी साहित्य।

हिं० सा० सं०=हिंदी-साहित्य सम्मेलन।

हिं० सा० का इति०=हिंदी-साहित्य का इतिहास।

हिं० सा० का वृ० इ०=हिंदी साहित्य का वहृद इतिहास।

नायिका-भेद

नायिका-भेद

नायिका-भेद: प्रकृति, अवस्था और स्थिति के अनुसार 'स्त्रियों' के वर्णन को कहते हैं। वय के उतार-चढ़ाव के साथ प्रेम की अवस्था में उनकी विभिन्न-दशाओं को अंकित करने के बाद प्रिय के मिलन और विछोह तथा आगमन या प्रतीक्षा के, प्रेम की प्रतिकूलता में अथवा काम के जाग्रत होने पर लज्जा और संकोच के द्वंद में, सपत्नी-प्रति ईर्षा के भावों में स्त्री-मन की क्या-क्या दशाएँ होती हैं, वह वर्णन—"नायिका-भेद"। यथा :

१. **प्रकृति-अनुसार**—"उत्तमा, मध्यमा, अधमा।"

२. **धर्मानुसार**—"१. स्वकीया (ज्येष्ठा-कनिष्ठा)।" २. परकीया—"ऊढ़ा (परोढ़ा), अनूढ़ा (उद्‌बोधिका)।" ३. गुप्ता—"भूत, भविष्यत्, वर्तमान।" ४. "विदग्धा—वचन और क्रिया।" ५. लक्षिता। ६. कुलटा। ७. अनुशयाना—"संकेत-विघट्टना, भाविसंकेतविनष्टा, रमण-गमना।" ८. मुदिता। ९. स्वयं दूतिका। १०. सामान्या।

३. **वय-अनुसार**—"१. मुग्धा (ज्ञात-अज्ञात यौवना, नवोढ़ा, विश्रब्ध-नवोढ़ा)।" २. मध्या। ३. प्रौढ़ा (मान-भेदानुसार—"मध्या और प्रौढ़ा के "धीरा, अधीरा, धीराधारा", क्रिया-भेदानुसार—"रति-प्रीता, आनंद-संमोहिता", स्वभावानुसार—"अन्य संभोग-दु:खिता, वक्रोक्ति-गर्विता, मानवती", गर्विता—"रूप और प्रेम से)।"

४. **अवस्थानुसार**—१. "प्रोषितपतिका, २. खंडिता, ३. कलहांतरिता, ४. विप्रलब्धा, ५. उत्कंठिता, ६. वासकसज्जा, ७. स्वाधीनपतिका, ८. अभिसारिका (कृष्णा, शुक्ला, दिवा), ९. प्रवत्स्यत्पतिका, १०. आगत्पतिका।"

५. **जाति-अनुसार**—"१. पद्मिनी, २. चित्रणी, ३. शंखनी, ४. हस्तिनी।"

६. **लोक-भेदानुसार**—"१. दिव्य, २. अदिव्य, ३. दिव्यादिव्य वा दिव्याति-दिव्य।"

७. **भरत: मतानुसार**—"१. देवी, २. देविरीध, ३. गांधर्वी, ४. मानुषी, ५. शुद्ध मानुषी, ६. गौरी, ७. लक्ष्मी, ८. सरस्वती, ९. कन्या, १०. वाला, ११. तरुणी, १२. प्रौढ़ा इत्यादि।"

नायिका-भेद (संबंधी) ग्रंथ

अकबर : शृंगार-दर्पण, रच०—अज्ञात। प्रा० स्था०—रत्नाकर : संग्रह, ना०-प्र० सभा, काशी।

अजब-मंजरी, रच०—बा० गोपालसिंह, रच० सं०—१९०१ वि०।[1]

अटक-पचीसी, रच०—देवदत्त कवि, रच० सं०—१८०९ वि०।[2]

अनंतानंद, रच०—अनंत या आनंद कवि, रच० सं०—१६९२ वि०।

अनन्य-शृंगार, रच०—चंद्र कवि, रच० सं०—१९४० वि०।[3]

अनुराग-बाग, रच०—दीनदयाल गिरि, रच०सं०—१८८८ वि०। प्रा०स्था०—पं० गंगासागर त्रिवेदी, सफ़दरगंज, बाराबंकी। राज्य-पुस्तकालय भिनगा, बहराइच।[4]

अनुराग-बाटिका, रच०—कवि कर्ण, रच० सं०—अज्ञात।[5]

अनुराग-मंजरी, रच०—बेनीप्रसाद तिवारी।

अनुराग-लतिका, रच०—शिवराज मिश्र।[6]

अनुराग-लतिका, रच०—बा० श्यामलाल।[6]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०९०।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ७१८।—मिश्रबंधुओं ने यहाँ इसका रचयिता "देवीदत्त" लिखा है।

३. मि० बं० वि०—३, पृ० १३११। आपका 'चंद्र-प्रकाश' नाम का ग्रंथ भी देखने में आया था।

४. खोज रिपोर्टः ना० प्र० स० काशी, स०—१९२३ ई० पृ० ५१०। यह पुस्तक पृथक् तथा आपकी अन्य कृति 'अन्योक्ति-कल्पद्रुम' के 'साथ लायट प्रेस' बनारस स०-१८९४ ई० और 'भारत जीवन प्रेस' काशी से स०-१८८२ ई० में छप चुकी है।

५. यह पुस्तक सं०-१९१३ ई० में 'विनोद प्रेस अलीगढ़' से प्रकाशित हुई है।

६-६. ये दोनों पुस्तकें नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से स०-१८८५ तथा १८८७ ई० में प्रकाशित हुई हैं।

अनूप-रसाल, रच०—खतरगच्छी जैन उदयचंद, रच० सं०—१७२८ वि०। तीन स्तवकों में—"नायिका-भेद, नायक-भेद और अलंकारों का वर्णन।"

अनूप-शृंगार, रच०—अभयराम सनाढ्य, रच० सं०—१७५४ वि०, जैसे : "संवत् सतरह चोपना-ग्रथ-जनम जग-जाँनि"। रसों के साथ नायिका-भेद वर्णन।

अमर-प्रकाश, रच०—खुमान कवि, रच० सं०—१८३६ वि०।[1]

अमर-मंजरी, रच०—जयदेव कवि, रच० सं०—अज्ञात। स्त्रियों (नायिकाओं) के जाति-भेद तथा नवरस वर्णन। प्रा० स्था०—त्रिगृही : वंशीधर भट्ट, गोकुल।[2]

अमरेश-विलाश, रच०—नीलकंठ, मूना०—जटाशंकर त्रिपाठी, रच० सं०—१६९८ वि०।[3] संस्कृत—"अमरु-शतक" का अनुवाद।

अर्जुन-विलाश, रच०—फतुहावासी मदनगोपाल शुक्ल, रच० सं०—१८७६ वि०।[4]

अलस-मेदिनी, रच०—नंदराम कवि, रच० सं०—१७२६ या ५७ वि०। नायिका-भेद तथा रसों का वर्णन। प्रा० स्था०—अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, कोट।[5]

असक-विनोद, रच०—बाँदा-निवासी स्कंदगिरि, रच० सं०—१९१६ वि०।[6]

अष्टकाल, रच०—मंजरीदास, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० दोपचंद, नोनेरा, भरतपुर। संभवतः रचयिता—गुन मंजरीदास, जो रूप सनातन गोस्वामी कृत—"अष्टकाल" के टीकाकार हैं।

अष्टयाम, रच०—प्रसिद्ध कवि 'देव', रच० सं०—१७४६ वि०। नायिका-नायक के अष्टयाम, अर्थात् दिन-रात्रि की चौंसठ घड़ियों के विविध विलासों का

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८६६।
२. इसका नाम—'अमृत-मंजरी' भी मिलता है। खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० ११२।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ४१६।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८७।
यह ग्रंथ बलरामपुर के लोथो प्रेस—"जगबहादुरी यंत्रालय" में सं०—१९१८ वि० में छप चुका है। मदन गुपाल जी का—'नखसिख' ग्रंथ भी सुनने में आता है।
५. खोज रिपोर्ट : राजस्थान २, पृ० १५२।
६. मि० बं० वि०—३, पृ० ११४६।

क्रम-बद्ध वर्णन। प्रा०स्था०—"याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० स० काशी, पाँच प्रतियाँ, जिनमें एक प्रति सं०—१८९९ वि० की।[1] २. पं० रेवती शर्मा, कन्हौवा-कोटकी, आगरा। ३. मन्नूलाल लाइब्रेरी (पुस्तकालय) गया, दो प्रतियाँ, पु० सं०—'क' ७-८। अंतिम प्रति सं०—१८९२ वि० की। ४. पं० रामाज्ञा शर्मा, बड़ागाँव, आगरा। ५. पं० छोटेलाल शर्मा बाह, आगरा। सं०—१८८४ वि० की। ६. पं० अयोध्याप्रसाद डिप्टी इन्स्पेक्टर, बीकानेर : राजस्थान। ७. बा० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, गणेशगंज, लखनऊ। ८. पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज, लखनऊ। ९. पं० बद्रीनाथ भट्ट, लखनऊ।[2] १०. ठा० चंद्रिका बख्श सिंह, वड़ागाँव, लखनऊ। ११. सरस्वती-भंडार, उदयपुर (मेवाड़), दो प्रतियाँ, पु० सं० ६० तथा २२१। सं०—१८१६ तथा १८८८ वि० की। १२, पं० रामाधीन मिश्र, नवाबाद, प्रतापगढ़, अवध। सं०—१९१३ वि० की। १३. नवनीत कवि-पुस्तकालय, मथुरा, बंसं०—४४, पु० सं०—१५। बंसं०—५३, पु० सं०—१७।

अष्टयाम-प्रकाश, रच०—गोकुल कायस्थ, रच० सं०—१९२१ वि०। प्रा० स्था० —रामसिंह, ठाकुर, मकरंदा, बहराइच।[3]

अष्टयाम, रच०—अग्रअली, रच० सं०—१९३० वि० की प्राप्त प्रति।

आ

आठ सात्विक भाव, रच०—सुखसखी, रच० सं०—१८५१ वि०। आठ-सात्विक : स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय इत्यादि। आत्मा में अंतर्भूत रस को प्रगट करनेवाले अंतःकरण के विशेष धर्म-सत्त्व से उत्पन्न अंग-विकार। कोई-कोई 'रस-शास्त्रज्ञ' इन्हें 'अनुभाव' भी कहते हैं। आचार्य

१. खोज रिपोर्ट, ना० प्र० स० काशी, स०—१९२३-२५, ४३ ई०, पृ० ४३९।

२. खोज रिपोर्ट, ना० प्र० स० काशी, स०—१९२९-१९३१ ई०, पृ० २१९-२२०। सं०—८० ए०, बी०, सी०, डी०।

३. खोज रिपोर्ट, ना० प्र० स० काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ५७-७१। कवि ने पुस्तक में बलरामपुर-नरेश महाराज दिग्विजय सिंह के आठों यामों का आठयाम (खंड) में वर्णन किया है। अतः इसके पंचम याम में : 'उपखान, फारसी के कवित्त, काव्य के दश अंग, लक्षणा-व्यंजना, ध्वनि, रस, नायिका-नायक-भेद, चित्र-काव्य, अंतर्लापिका, बहिर्लापिका तथा अनुप्रास' का सुंदर वर्णन किया है।

'हेमचंद्र' ने सत्त्व का अर्थ 'प्राण' मानकर इनकी व्याख्या करते हुए कहा है—"स्थायी भाव-ही प्राण-तक पहुँचकर सात्त्विक-रूप धारण कर लेते हैं। अत: प्राण में पृथ्वी-तत्व का भाव प्रधान होने पर 'स्तंभ', जल-प्रधान होने पर 'अश्रु', तेज-प्रधान होने पर 'स्वेद', तेज के तीव्रता-शून्य होने पर 'वैवर्ण्य', आकाश-तत्त्व के प्रधान होने पर 'प्रलय', वायु के मंद होने पर 'रोमांच', वायु के मंद होने पर 'कंप' तथा वायु के उत्कृष्ट आवेश से 'स्वरभंग' होता है। संस्कृत में 'भानुदत्त' की रस-तरंगणी के अनुसार इनका एक नया भेद "जृंभा" नाम का भी मिलता है। इसे हिंदी (ब्रजभाषा) वालों ने भी अपनाया है। वहाँ इसे "आलस्य" से उत्पन्न माना गया है। पद्माकर ने आलस्य के अतिरिक्त इसके दो कारण और दिये हैं, जैसे—"पिय-बिछोह, संमोह कै, आलस-ही अवगाहि" (जगद्विनोद)-इत्यादि। प्रा० स्था०—ला० कन्नोमल, लोई बाजार, वृंदावन, मथुरा।[1]

आनंद-रस, रच०—लाल बंदीजन : काशी, रच० सं०—१८४७ वि०।[2]

आनंद-रस, रच०—दयानाथ दुबे, रच० सं०—१८८९ वि०।

आनंद-रस, रच०—रामप्रसाद कवि, रच० सं०—१८७७ वि०। प्रा० स्था०—मन्नूलाल पुस्तकालय, गया विहार, पु० सं०—'क' : ९। रस और नायिका-भेद का सरस वर्णन।[3]

आलंबन-विभाव, रच०—सुकवि बैजनाथ, रच० सं०—१७३४ वि०। प्रा० स्था०—मन्नूलाल पुस्तकालय, गया, विहार। पु० सं०—'क' १०। संस्कृत—"साहित्य-दर्पण" के अनुसार आलंबन-विभाव—'जिनके सहारे रस उत्पन्न हो' उसे कहते हैं। अर्थात् जिस व्यक्ति तथा वस्तु के कारण अन्य व्यक्ति में कोई भाव जाग्रत हो तो उस व्यक्ति वा वस्तु को, उस भाव वा जनित भाव को 'आलंबन-विभाव' कहते हैं। वास्तव में 'आलवन' विभाव ही रस की उर्वर भूमि है। इसके विना काव्य तथा उसका आस्वाद दोनों फीके लगते हैं। जहाँ आलंवन स्पष्ट नहीं हो पाता, वहाँ प्रसंगानुसार उसका आरोप कर लिया जाता है। वह दो रूपों में होता है। कभी तो वह पात्र-विशेष के भावों को बढ़ावा देता है और कभी कवि-भावों को। भिन्न-भिन्न आलंबनों का एक

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८३५।
२. हिं० इ०—जार्ज, पृ० २४४। मि० बं० वि०—२, पृ० ८१२।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी स०—१९२६—२८ ई०, पृ० ५६७। यहाँ इस पुस्तक का "आनंद-रस-कल्पद्रुम" नाम भी मिलता है।

भाव में अंतर भी उतर सकता है, जैसे भागवत के एक श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण को कंस की रंगशाला में भाई बल्देव के साथ उतरते हुए अनेक लोगों ने अनेक प्रकार से देखा था। मल्लों ने उन्हें महाबली मल्ल के रूप में देखा, साधारण जनों ने उन्हें आदर्श पुरुष-रूप में देखा, स्त्रियों ने उन्हें सशरीर काम-रूप में देखा, गोपों ने उन्हें अपने बंधु-रूप में देखा, अत्याचारी राजाओं ने उन्हें दंड देने में समर्थ शासक-रूप में देखा, नंदादि वृद्धजनों ने उन्हें अपने बालक-रूप में देखा, कंस ने उन्हें अपने काल-रूप में देखा, देह में आत्म-बुद्धि रखने वाले अज्ञानियों ने उन्हें साधारण-जन-रूप में देखा, योगियों ने उन्हें 'परब्रह्म'-रूप में देखा तथा भक्तों ने उन्हें अपने आराध्य-देव के रूप में देखा—इत्यादि. . . ।

विविध रसों के विचार से यह 'आलंबन' भी विविध हो जाता है। काव्य-शास्त्र में उनके रूप, आकार, प्रकार और भेद का विस्तृत वर्णन किया गया है । जैसे श्रृंगार-रस के आलंबन—मधुर, सुकुमार, रूप-यौवन-संपन्न रमणी तथा पुरुष। इन्हें वहाँ 'नायिका-नायक' कहा गया है। इनके स्वभाव, आयु और कार्यादि के अनुसार अनेक भेद बनते हैं। विकृत-आकार तथा दूसरे की चेष्टाओं का व्यंग्यात्मक अनुकरण करनेवाले 'हास्य-रस' के आलंबन माने गये हैं। त्यागी, सत्य-संपन्न, शूरवीर और विक्रमशील व्यक्ति-विशेष 'वीर-रस' का आलंबन कहा गया है। इसी प्रकार विचित्र आकार-प्रकार और प्रकृति वाले 'अद्भुत'-रस के, बहु बाहु, बहु मुख, भीम-दंष्ट्र, क्रूर और उद्धत एवं शठादि 'रौद्र-रस' के, कृश, विषण्ण, मलिन, रोगी, दुखी, दारिद्र से युक्त 'करुण-रस' के एवं निंदित आकृति वाले, वेश वाले, कर्म वाले, रोगी, पिशाचादि 'बीभत्स-रस' के आलंबन कहे गये हैं—इत्यादि. . . ।

आलम-केलि, रच०—कविवर आलम और उनकी स्त्री शेख, रच० सं०—१७०० वि० के आस-पास। प्रा० स्था०—बद्रीनाथ भट्ट, यूनिवर्सिटी, लखनऊ। दो प्रतियाँ।[१]

आलीजाँह-प्रकाश, रच०—पद्माकर भट्ट (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८३८ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० स०, काशी।

१. यह पुस्तक 'ला० भगवानदीन' जी द्वारा संपादित होकर 'आदर्श प्रेस' काशी से सं० १९७९ वि० में प्रकाशित हो चुकी है। श्री भट्ट जी के यहाँ प्राप्त इन दोनों पुस्तकों का नाम—"आलम कवि के कवित्त" रूप में मिलता है।

इ

इश्क़ दर्याव, रच०—रसरासि। प्रा० स्था०—सरस्वती भंडार, काशी : संस्कृत-विश्वविद्यालय। पु० सं०—४६४,२६।

इश्क़नामा, रच०—कवि बोधा, रच० सं०—१८०४ वि०।

इश्क़ महोत्सव, रच०—रघुनाथ, अरसेला बंदजन (काशी), रच० सं०—१८०२ वि०।

इश्क़लता, रच०—सवाई महाराज प्रतापसिंह साहि, जयपुर (राजस्थान), उना०—'ब्रजनिधि', रच० सं०—१८३८ वि०।

उ

उक्ति जुक्ति-रस-कौमुदी, रच०—गो० कृष्णचैतन्य, रच० सं०—अज्ञात, प्रा०-स्था०—नागरी प्रचारिणी-सभा काशी—अपूर्ण प्रति।[1] बा० ब्रजरत्नदास, बुलानाला, काशी।

उड़दाम-प्रकाश, रच०—कवि उड़िदाम चौबे : मथुरा-निवासी, रच० सं०—१६४७ वि०। प्रा० स्था०—कवि नवनीत चौबे, गोलपाड़ा-मथुरा।[2] शृंगार-रस के छंदों का बिना किसी अनुक्रम के संग्रह।

उदाहरण-मंजरी, रच०—लल्लूभाई भृगुपुर (भड़ोच : गुजरात) निवासी। प्रा० स्था०—दयाराम-संग्रहालय, अहमदाबाद। गद्य-पद्य में नायिका-भेद तथा अलंकारों का वर्णन। रच० सं०—१८३३ वि०।

उमराव-प्रकाश, रच०—सुवंश मिश्र, रच० सं०—१८६२ वि०।

उपालंभ : शतक, रच०—रसरूप, रच० सं०—१७८८ वि०।

क

कंदर्प-कल्लोल, रच०—अज्ञात।[3]

कनक-मंजरी, रच०—काशीराम, रच० सं०—१७४० वि०।[4]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी स० १९१७-१८-१९ ई०, पृ० ३९७ तथा मि० बं० वि०—३, पृ० ११११।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८५९।

३. यह पुस्तक अहमदाबाद : गुजरात के सेठ छगन भाई के यहाँ देखने में आयी थी—पुस्तक शृंगार-रस के फुटकल कवित्तों की बिना किसी अनुक्रम के है।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स० काशी, स० १९०३ ई०।

कन्हैया-रत्न-मंजरी, रच०—कन्हैया बक्शपाल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा०-स्था०—रामनाथ पाँडे, कुरही, प्रतापगढ़ (अवध) खंडित प्रति। ग्यारह-तरंगों में नायिका-नायक-भेद, विभाव, नायक-सखा, उद्दीपन-विभाव, नायिका-सखी, उनके कार्य, दूती-भेद, उनके कार्य, अनुभाव, हाव इत्यादि का वर्णन।[1]

कमरुद्दीन खाँ-हुलास, रच०—गंजन कवि, रच० सं०—१७८५ वि०। प्राप्त-पुस्तक सं०—१९४६ वि० की। प्रा० स्था०—हिंदी-साहित्य-संमेलन, इंदौर, मध्यभारत। २. पं० कृष्णविहारी मिश्र, सिधौली, सीतापुर, अवध। मुहम्मद-शाह बादशाह के उदार वजीर 'कमरुद्दीन खाँ की प्रशंसा के साथ—नायिका-भेद, भाव-अनुभाव, सखी, दूती-इत्यादि का वर्णन।[2]

कमल-प्रकाश, रच०—कमलनैन, उप-नाम—'रससिंधु', रच० सं—१८१० वि०।[3]

कमलानंद-कल्पतरु, रच०—कवि लच्छीराम, रच० सं०—१९४० वि०।[4]

कर्ण-जत्त-मणि, रच०—उद्धव कवि (औघड़) लख्तर : काठियाबाड (सौराष्ट्र) निवासी, रच० सं०—१९२५ वि०।[5]

कल्लोल-तरंगिणी, रच०—चंदन : चंदनराय, शाहजहाँपुर, रच० सं०—१८३० या १८४५ वि०।

कवि-कल्पद्रुम, रच०—रामदास, रच० स०—अज्ञात। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, टीकमगढ़ : मध्य-भारत।

कवि-कुल-कल्पतरु, रच०—चिन्तामणि त्रिपाठी, टिकमापुर (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७५१ वि०।[1] प्रा० स्था०—ठा० गणेशसिंह, कठोला : बहराइच। २. महाराज राजेंद्र बहादुरसिंह : बहराइच। ३. पं० रामाधीन, गंगादीन का पुरबा : बहराइच। ४. ठा० नौनिहालसिंह, काँथा : उन्नाव। रस, ध्वनि, अलंकारादि का वर्णन।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स० १९२६-२७ ई०, पृ० ३५५।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स० १९१७-१९ ई०, पृ०—१६० तथा स० १९२६-२८ ई०, पृ० २५६।
३. मि० बं० वि० २, पृ०—७०६।
४. मि० बं० वि० ३, पृ०—११३४।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ४०१। इस पुस्तक में रस-प्रकरण, अर्थात् नायिका-भेद का अधिक वर्णन होने से यहाँ उल्लेख किया गया है। साथ ही यह नवलकिशोर प्रेस (लीथो) लखनऊ से स०—१८७५ ई० में छप चुकी है।

कवि-कुल-तिलक-प्रकाश, रच०—कवि महीपति, उपनाम—महीप, अमेठी-(अवध) के राजा, रच० सं०—१७६६ वि०। नायिका-भेद, रस और अलंकारों का वर्णन। प्रा० स्था०—अमेठी-राज्य पुस्तकालय: अमेठी-अवध।

कविता-रस-विनोद, रच०—जनराज वैश्य, जयपुर : राजस्थान-निवासी, रच० सं०—१८३३ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय, अलीगढ़, सं०–१९०९ की प्रति (खंडित)। २. जवाहरलाल चतुर्वेदी, कूबागली मथुरा। शास्त्रीय-रस, ध्वनि, अलंकार और व्यंजनादि वर्णन के साथ नायिका-भेद वर्णन।[1]

कवित्त-रत्न-मालिका, रच०—रामनारायण, उपनाम—"रसराज", रच० सं०—१८२७ वि०।

कवित्त-रत्नाकर, रच०—मातादीन मिश्र, रच० सं—१९३३ वि०।[2]

कवित्त-रत्नाकर, रच०—राजा रणवीरसिंह: सिरमौर, रच० सं०—१९३४ वि०।

कवित्त-रसिकराय, रच०—'रसिकराय', (संग्रह-ग्रंथ-शृंगार-रस)। प्रा० स्था०—महावीरसिंह गहलौत, जोधपुर (राजस्थान)।

कवित्त-विचार, रच०—प्रसिद्ध : कविकुल-कल्पतरु के रचयिता—चिंतामणि। रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—कन्हैयालाल महापात्र, असनी : फतेह-पुर-उत्तरप्रदेश।[3]

कविंद्र-कल्पलता, रच०—कविंद्र : दूसरे (काशी), रच० सं०—१६२२ वि०। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार उदयपुर (मेवाड़)।

कवि-विनोद, रच०—जैन मुनिमान। वैद्यक-ग्रंथ है। रच० सं०—अज्ञात। रस-ग्रंथ।

कवि-प्रभेद, रच०—खतरगच्छीय जैन साधु 'मान', रच० सं०—१७४६ वि०। रस-अलंकारों का वर्णन।[4]

कवि-भूषण-विनोद (संग्रह), सं०—पातीराम, प्र०—डायमंड जुबली प्रेस कानपुर, सं०—१९००। वि०।

१. इस पुस्तक में चिंतामणि-कृत 'कविकुल-कल्पतरु' की भाँति 'रीति-काव्य-शास्त्र' विधियों का वर्णन है।

२. किसी-किसी हिंदी-साहित्येतिहासकारों ने 'कवि' मातादीन को मिश्र अल्ल के बजाय 'शुक्ल' भी लिखा है।

३. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० स० काशी, स०—१९२०-२२ ई० पृ० १९४।

४. इसका नाम 'कवि-प्रिया' भी मिलता है।

कवि-माला, रच०—कवि तुलसी, रच० सं०—१७१२ वि० । केवल-रसों का वर्णन ।

कवि-मुख-मंडल, रच०—कवि गोकुलनाथ, रच० सं०—१८३३ या १८७० वि० ।

कवि-वल्लभ, रच०—हरिचरणदास, रच० सं०—१८३५ वि० । प्रा० स्था०—रत्नाकार-संग्रह : ना० प्र० सभा, काशी । २ कविराव मोहन सिंह, उदयपुर : मेवाड़ । ३. गीता-प्रेस पुस्तकालय, गोरखपुर । नायिका-भेद, अलंकार तथा अन्य साहित्य-शास्त्रीय-विषयों का वर्णन ।

कवि-वल्लभ, रच०—वल्लभ कवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० स०, काशी ।

कवि-विनोद, रच०—कृष्णदत्त कवि ।

कवि-विनोद, रच०—मुनि मान । प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार काशी : संस्कृत विश्व-विद्यालय । पु० सं०— ४६४,३४ ।

कवि-हृदय-सुधाकर, रच०—संतोषीसिंह ।

कवि-सर्वस्व, रच०—जयगोविंद बाजपेयी, रच० सं०—अज्ञात । नायिका-भेद, रस-अलंकारों का वर्णन । प्रा० स्था०—देवकीनंदनाचार्य-पुस्तकालय, कामवनः भरतपुर-राज्य ।

का

कांता-भूषण, रच०—रत्नेश कवि, रच० सं०—१८७१ वि० । प्रा० स्था०—पं० शिवलाल वाजपेयी असनी : फतेहपुर ।[१]

काम-कुतूहल, रच०—ईश्वर कवि, धौलपुर (राजस्थान) ।

काम-विलास, रच०—रघुनाथ, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—सरस्वती भंडार : काशी-संस्कृत विश्वविद्यालय, पुसं०—४६२,८५ ।

काव्य-कंदब, रच०—दिनेश कवि टिकारी-राज्य, रच० सं०—१६५० वि० ।

काव्य-कलाधर, रच०—रघुनाथ बंदीजन, रच० सं०—१८०२ वि० । प्रा० स्था०—गंगाचरण भट्ट, परसहट्टा, पो०—मैगलगंज, सीतापुर, (अवध) । २. पं० त्रिभुवननाथ अवस्थी, कोटरा : सीतापुर-अवध । ३. ठा०—नरेशसिंह, मज्जूपुर, पो०—महमूदाबाद—सीतापुर-अवध । ४. बलरामपुर-राज्य-पुस्तकालय, बलरामपुर-अवध । ५. भिनगा-राज्य-पुस्तकालय, भिनगा-अवध ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० ४२१ ।

६. मिश्र-बंधु, गोलागंज, लखनऊ। ७. हिंदी-साहित्य-संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग। पृ० सं०—२००।[1] नायिका-भेद, भाव और रसों का वर्णन।

काव्य-कला-निधि, रच०—गुमान मिश्र, रच० सं०—१८०५ वि०।

काव्य-कल्पद्रुम, रच०—सेनापति वृंदावनवासी, रच० सं०—१६८०।[2]

काव्य-कल्पद्रुम, रच०—कवि श्रीपति—प्रयागपुर, जिला बहराइच, रच० सं०—१७०० वि०।

काव्य-कल्पद्रुम, रच०—विश्वनाथसिंह, सुलतापुर, रच० सं०—१९४८ वि०।

काव्य-कुतूहल, रच०—चित्रशाल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—कविराज मोहनसिंह, उदयपुर, मेवाड़। रस तथा पिंगल-वर्णन।

काव्य-कुतूहल, रच०—हरदेव कवि, रच० सं०—१७२६ वि०।

काव्य-पीयूष-रत्नाकर, रच०—जगन्नाथ भट्ट—तिघरा, गोकुल (ब्रज) बासी, उपनाम-'सुखसिंधु', रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था—ला० घुर्रीमल मोदी, गोकुल, मथुरा। आठ-तरंगों में विभक्त-नायिका-भेद वर्णन।[3]

काव्य-प्रकाश, रच०—चिंतामणि त्रिपाठी, प्रसिद्ध रच० सं०—१७२९ वि०।

काव्य-प्रकाश, रच०—अज्ञात, प्रा० स्था०—ना० प्र० सभा, काशी। नायिका-भेद तथा संचारी भावों का ४२ दोहों में वर्णन।

काव्य-प्रकाश, रच०—महाराज विश्वनाथसिंह रीवाँ, रच० सं०—१८९१ वि०। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय : रीवाँ—बघेलखंड।

काव्य-प्रभाकर, रच०—रामराज (रामराव-राजा), रच० सं०—अज्ञात। प्रा०-

१. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० स० काशी, स०—१९०९ ई० पृ० ३२८। स०—१९२३-२५, पृ० ११७१। स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ५३४। मि०बं० वि० २, पृ० ६५३-५४। रघुनाथ वंदीजन का 'काव्य कलाधर' ग्रंथ के अतिरिक्त एक सुंदर नायिका-भेद का ग्रंथ "जगत-मोहन" भी देखने में आया है, जिसमें भगवान श्रीकृष्णचंद्र की संपूर्ण दिनचर्या का वर्णन बड़े विशद रूप में किया गया है।

२. यह ग्रंथ बैजनाथ कुर्मी की टीका-सहित नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से स०—१८८० ई० में छप चुका है।

३. इस ग्रंथ में कवि ने लिखा है—"इति श्रीमत्तैलंग कुलोद्भव श्री गोकुलस्थ चिप्रहोपाह्न श्री व्रजनाथस्य कनिष्ठात्मज जगन्नाथ—"सुखसिंधु" विरचिते 'काव्य-पीयूष-रत्नाकरे' भाव, विभाव, सात्विक-भाव, संचारी-भाव, स्थायी-भाव, नव रस के स्वामी, रंग-वर्णनोनाम अष्टम-तरंग:"। अत: विषय स्पष्ट है।

स्था०—राजा श्रीप्रकाशसिंह, मल्लापुर : अवध। २. पं० कृष्णबिहारी मिश्र, सिधौली-सीतापुर : अवध। ३. हिं० सा० संमेलन, प्रयाग।[1]

काव्य-प्रभाकर, रच०—धनीराम बंदीजन, रच० स—१८८८ वि०।

काव्य-मंजरी, रच०—पदुमनदास (प्रद्युम्नदास) रच० सं०—१७३९ या ४१ वि०। प्रा० स्था०—मन्नूलाल पुस्तकालय, गया : बिहार, पु० सं०—'क' १५। रस-अलंकार वर्णन।[2]

काव्य-रत्नाकर, रच०—रणधीरसिंह—सिंगरामऊ (जौनपुर) के राजा, रच० स०—१८४० ई०। प्रा० स्था०—महेंद्र पुस्तकालय, ओरछा (टीकमगढ़)।

काव्य-रस, रच०—राजा जयसिंह, रच० सं०—१८०२ वि०। प्रा० स्था०—पं० हरिकृष्ण वैद्य, दीग : भरतपुर-मथुरा। नायिका-भेद के साथ अलंकारों का वर्णन।

काव्य-रसकलस, रच०—जवाहिरलाल पन्ना-निवासी, रच० सं०—अज्ञात।

काव्य-रसायन, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१६६१ वि०। प्रा० स्था०—हिंदी-साहित्य-संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग। २. मुं० ब्रजबहादुरलाल, प्रतापगढ़ : अवध। ३. पं० कन्हैयालाल महापात्र, असनी : फतेहपुर (उत्तर-प्रदेश)। ४. बा० मैथलीशरण गुप्त (राष्ट्र-कवि) चिरगाँव : झाँसी। ५. सवाई महेंद्र-पुस्तकालय, ओरछा-टीकमगढ़। ६ पं० विपिन विहारी मिश्र, गँधौली : सीतापुर-अवध। शब्दार्थ-वृत्ति, अभिधा-लक्षणा, रूढ़ि-प्रयोजना, व्यंग्य और नव रसों का वर्णन। इसका 'काकु-रसायन' नाम भी मिलता है।[3]

काव्य-लता, रच०—सत्यनारायण कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिंदी-साहित्य-संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग।

काव्य-विनोद, रच०—मुरलीधर, रच० सं०—१७७० वि०।

काव्य-विनोद, रच०—प्रताप साहि, रच० सं०—१८८८ वि०।

काव्य-विभूषण, रच०—समनेश कवि कायस्थ-रीवाँ (बघेलखंड), रच० सं०—१८८१ वि०। प्रा० स्था०—गंगाप्रसाद वक्सी उपरहटी : रीवाँ, विंध्यप्रदेश।

काव्य-विलास, रच०—प्रताप साहि, रच० सं०—१८८६ या १८८८ वि०।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स० काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ५७१। मि० बं० वि० २, पृ०—९३९।

२. यह लक्ष्मी-वेंकटेश्वर प्रेस बंबई से स०—१८९७ ई० में छप चुकी है।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स० काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० २०९, स०—१९२३-२५, पृ० ४५७ तथा स०—१९२६-२८, पृ० २१८।

प्रा० स्था०—रत्नाकर संग्रह : ना० प्र० स०, काशी। २, पं० जनार्दन जी, खेले का बाजार, लखनऊ। ३. ला० कन्नोमल गौरया कलाँ, पो०—फतेहपुर : उन्नाव। ४, पं० रघुवरदयाल मिश्र, इटावा। ५, पं० कृष्ण विहारी मिश्र, सिधौली : सीतापुर-अवध। ६, पं० रघुवरदयाल, अध्यापक—मिडिल स्कूल, कबीर चौरा, काशी।[1]

काव्य-विवेक, रच०—कवि चिंतामणि त्रिपाठी (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७२९ वि०।[2]

काव्य-शिरोमणि, रच०—कवि भावन पाठक मुरावाँ, रच० सं०—१८९३ वि०।[3]

काव्य शिरोमणि, रच०—कवि कुंदनलाल आगरा, रच० सं०—अज्ञात। इसे "काव्य-कल्पद्रुम" भी कहते हैं।

काव्य-संग्रह, सं०—अज्ञात। विविध कवियों-द्वारा रचित नायिका-भेद संबंधी रचनाओं का संग्रह। प्रा० स्था०—ला० टुंडाराम वैश्य, बरसाना, मथुरा।

काव्य-सरोज, रच०—कवि श्रीपति बहराइच, रच० सं०—१७७७ वि०। प्रा० स्था०—पं० जुगलकिशोर मिश्र, गँधौली, सीतापुर, अवध। २ पं० चुन्नी लाल वैद्य, ढुंढपाणि, काशी। ३. प० कृष्ण बिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर, अवध। ४. ठा० बीर सिंह भुदरा, सीतापुर-अवध। ५. राज्य-पुस्तकालय, भिनगा।[4]

काव्य-सिद्धांत, रच०—सुरत मिश्र (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७८५ वि०। काव्य-रीति और नायिका-भेद वर्णन। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर, मेवाड़। २. कविराव मोहनसिंह, उदयपुर, मेवाड़। ३. सवाई महेंद्र-पुस्तकालय, ओरछा (टीकमगढ़)।

काव्य-सुधाकर, रच०—श्रीपति कवि, रच० सं०—अज्ञात, प्रस्तुत-पुस्तक सं०—१७९७ वि० की लिखी। प्रा० स्था०—हिंदी साहित्य संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग।

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ९२०। श्री प्रतापसाहि जी की इस रचना के "काव्य-विनोद, काव्य-कला, काव्य-कला-विलास" नाम भी मिलते हैं।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ४०९।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० ९५३-१०६७। इसका नाम 'काव्य-कल्पद्रुम' भी मिलता है।
४. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० स० काशी, स०—१९०९-११ ई० तथा स० १९२३-२४ प० ४१०-११।१३८६। मि० बं० वि०—२, पृ० ५७८।

काव्य-सुधाकर, रच०—जानकीप्रसाद : कनक-भवन-अयोध्या के महंत। रच०-सं०—अज्ञात।[1]

काव्योदय, रच०—कवि लीलाधर भट्ट, रच० सं०—१८७४ वि०। प्रा० स्था०—हिंदी-साहित्य-संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग।

किशोर : संग्रह, रच०—युगल किशोर बंदीजन। दिल्ली, (मुहम्मदशाह सं०—१७६६-१८०५ वि० के दरबारी कवि), रच० सं०—१७०० का अंत।

की

कीर्ति-लतिका, रच०—हुलासी कवि हमीदनगर, गोह (गया) वासी। रच० सं०—१९४८ वि०।

कु

कुँवर-विलास, रच०—नरहरि:महापात्र (प्रसिद्ध) के वंसज—रामकुँवर वंदीजन-शिवपुर काशी। रच० सं०—१९४८ वि०।

कुशल-विलास, रच०—कवि देव (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७८३ वि० के आस-पास। प्रा० स्था०—ब्रजराज-पुस्तकालय, गँधौली: सीतापुर-अवध। २. हिंदी ऐकेडमी, प्रयाग। नौ-विलासों में विभक्त—"शृंगार-रसोत्पत्ति, उसके विविध अंग—विभाव, अनुभाव, संचारी-भाव, नायक-नायिकाओं का वर्णन।[2]

के

केलि-कल्लोल, रच०—मोहन कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—अनूप संस्कृत-पुस्तकालय-बीकानेर-राज्य, राजस्थान।[3]

केसर-सभा-विनोद, रच०—गदाधर भट्ट, दतिया : मध्यप्रदेश (पद्माकर-वंशज), रच० सं०—१९३९ वि०।[4]

केसरी-प्रकाश, रच०—चंदन कवि, नाहत : पबायाँ—शाहजहाँपुर वाले, रच०—

१. यह ग्रंथ अहमदाबाद-गुजरात में सं०—१८६६ वि० में यूनाइट प्रेस से लीथो टाइप में छपा है। विषय-शृंगार-रस वर्णन। आपके "कवित्त-संग्रह", "फुटकर-कवित्त" (संग्रह) ग्रंथ भी मिलते हैं।

२. "देव और उनकी कविता"—डा० नगेंद्र, पृ० ५१।

३. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७५।

४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०६९ तथा ११२५।

सं०—१८३० वि०। कोई-कोई आपका यह ग्रंथ सं०—१८१७ वि० में रचा भी मानते हैं। प्रा० स्था०—सेठजीदयाल तालुकदार, कटरा, सीतापुर, अवध।[१]

केसौ-सागर, रच०—कवि केसौराय, मथुरा, रच० सं०—१७५० वि०। प्रा० स्था०—ला० बलदेवदास वैश्य, गली रावलिया, मथुरा।

कृ

कृष्ण-कल्लोल, रच०—मान कवि, हरिहरापुरा (बहराइच) के राजा रूपसिंह के आश्रित, रच० सं०—१६६० वि० के आसपास।

कृष्ण-चंद्रिका, (कृष्ण लीला) रच०—गुमान मिश्र, रच० सं०—१८३८ वि०।[२]

कृष्ण-चंद्रिका, रच०—वीर कवि, रच० सं०—१७७६ वि०।[३]

कृष्ण-चंद्रिका, रच०—मधुकर, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं० सा० संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग।

कृष्ण-चंद्रिका, रच०—रामप्रसाद कायस्थ, रच० सं०—१७७९ वि०। प्रा० स्था०—रमणलाल हरीचंद्र चौधरी, कोसी-कलाँ, मथुरा।[४]

कृष्ण-चंद्रिका, रच०—शंकरलाल कवि, रच० सं०—१९२४ वि०।[५]

कृष्ण-विनोद, रच०—कृष्णलाल, बूँदी, राजस्थान, रच० सं०—१८७२ वि०।[६]

कृष्ण-विनोद, रच०—परमेश बंदीजन, रच० सं०—१९२५ वि०।[७]

कृष्ण-विनोद, रच०—कवि लच्छीराम, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ब्रजभूषणलाल होलीपुर, पो०—हैदरगंज, बाराबंकी।[८]

कृष्ण-विनोद, रच०—विनोदीलाल कवि, रच० सं—१८६९ वि०।[९]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० ४०। मि० बं० वि० २ पृ० ७८३।
२. कविरत्न-माला, पृ० ६२।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ५८०।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ६१७।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० ११६०।
६. कवि-रत्नमाला, पृ० ६२।
७. मि० बं० वि०—२, पृ० ८९१।
८. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ९३३।
९. मि० बं० वि०—२, पृ० ८८८।

कृष्ण-विलास, रच०—मानदास, रच० सं०—१८६३ वि०।[1]

कृष्ण-विलास, रच०—शिवराज महापात्र, मझौली-राज्य (गोरखपुर) के आश्रित, रच० सं०—१८०० वि०।[2]

कृष्ण-विलास, रच०—सविता दत्त—सार्दी : हरदोईवाले, रच० सं०—१७३५ वि०। प्रा० स्था०—ला० रामदयाल, नदपुरवा, पो०—नेरी सीतापुर, अवध। २. राज्य-पुस्तकालय : अमेठी-सुलतापुर अवध।[3]

को

कोक-कलानिधि, रच०—ईश्वर कवि, (धौलपुर राजस्थान), रच० सं०—अज्ञात।

ख

खट्-ऋतु-विलास, रच०—भैरों कवि-खेतड़ी : जयपुर, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—रेवतीप्रसाद शर्मा, तहसीलदार का रास्ता, जयपुर, राजस्थान।

ग

गर्जसिंह-विलास, रच०—गर्जसिंह, रच० सं०—१७८० वि० वा सं०—१८०८ वि०।[4]

गु

गुण निधि-सागर, रच०—गणेश कवि, रच० सं०—१८८२ वि०।

गुण-सागर, रच०—ताहर, रच० सं०—अज्ञात।

गुलाल-चंद्रोदय, रच०—गुमान मिश्र, रच० सं०—१८२० वि०। प्रा० स्था०—राजा श्रीप्रकाश सिंह मल्लापुर, सीतापुर, अवध। २. पं० विपिन विहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर, अवध। ३. आनंद-भवन पुस्तकालय, बिसवाँ, सीतापुर-अवध।[5]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८६०।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० ११६०।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १३६६।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० ७०४।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२३-२५ ई० तथा स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ५९३ और २७६। मि० बं० वि०—२, पृ० ६७४।

गो

गोपीश्वर-विनोद, रच०—गोपीश्वर सिंह, रच० सं०—अज्ञात।[1]

गोपीश्वर-विनोद, रच०—शिवप्रसाद कवीश्वर, रच० सं०—अज्ञात।[2]

गोविंद-चंद्रिका, रच०—इच्छाराम, रच० सं०—१८२० वि०। प्रा० स्था०—सरस्वती भंडार, रीवाँ-राज्य विंध्य प्रदेश।[3]

गोविंद-विनोद, रच०—गोविंद कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—बालमुकुंद चतुर्वेदी, मानिकचौक, मथुरा।

गोविंद-विलास, रच०—कृष्ण कवि, रच० सं०—१८४३ वि०।[4]

गोविंद-विलास, रच०—हरिविलास खत्री लखनऊ, रच० सं०—अज्ञात।

गोविंद-सुखद-विहार, रच०—गोकुलनाथ, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ला० घुर्रीमल मोदी, गोकुल, मथुरा।

गोविंदानंदघन, रच०—गोविंद कवि, जसं०—१८५४ वि०, रच० सं०—१८८५ वि०। प्रा० स्था०—ला० विहारी दास वैश्य, लोई बाजार, वृंदावन, मथुरा।[5]

च

चंद्र-प्रकाश, रच०—चंद्र कवि सनाढ्य; रच० सं०—१८३० वि०।

चंदन-प्रकाश : हजारा, संक०—पं० जगदीश।

चतुर-रसाल, रच०—चतुरदान, रच० सं०—१८९० वि० के आस-पास।

चर-नायिका, रच०—कवि देवमणि, रच० सं०—अज्ञात।

चि

चित्र-चंद्रिका, रच०—सरदार कवि, काशी-नरेश महाराज ईश्वरी नारायण सिंह के आश्रित, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, रामनगर, काशी। चित्र-काव्य में नायिका-भेद वर्णन।[6]

१. यह 'दरभंगा-विहार' से स०—८८१८ ई० में प्रकाशित हुआ है।

२. यह पुस्तक काशी के 'बनारस लायट' प्रेस सं० १९४५ वि० में छप चुकी है।

३. ना० प्र० पत्रिका, काशी, सं०—२००९ वि०, व० ५७, अं० १।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९१२-१४ ई०, पृ० ९४। मि० बं० वि०—२, पृ० ८४९ तथा ८७७।

५. ना०प्र०स०, काशी का 'हिं० सा० का बृहद् इतिहास' (षष्ठ खंड), पृ० १७८।

६. यह पुस्तक 'नवलकिशोर' प्रेस, लखनऊ से स०—१८७५ ई० में प्रकाशित हो चुकी है।

चित्र-चंद्रिका, रच०—बलवान कवि, रच० सं०—१८८४ वि० ।

चित्र-विलास, रच०—अमृत कवि ।

छ

छंद-शृंगार, रच०—सिंह कवि, रच० सं०—१८५३ वि०, मेड़ता (रा० पू०) के ब्राह्मण ।

छत्र-विलास, रच०—महाराज छत्रशाल।

ज

जगत-प्रकाश, रच०—राजा जगत सिंह भिनगा (बहराइच), रच० सं०—१८६५ वि० । प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय भिनगा-बहराइच ।

जगत-विनोद, रच०—पद्माकर भट्ट (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८६७ वि० । प्रा० स्था०—पं० मवासी लाल शर्मा, अछनेरा, आगरा । २. राज्य-पुस्तकालय, अमेठी, अवध । ३. महंत राम विहारीशरण, कामद-कुंज, अयोध्या । ४. पं० अमृत लाल, मुह०—पीपलवाला, आगरा । ५. सरस्वती-भंडार-राज्य, उदयपुर : मेवाड़—तीन प्रतियाँ, पु० सं०—२७७,४८७ तथा ८३७ सं०—१८७५, १८४३ तथा १९३१ वि० ।[1] ६. सरस्वती-भंडार—काँकरौली : मेवाड़, बंसं०—६५ पु० सं०—२ । ७. याज्ञिक-संग्रहालय: 'ना०प्र०स० काशी । ८. कन्हैयालाल महापात्र, असनी, फतेहपुर (उ० प्र०) ।[2] ९. मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया, विहार सं०—१९२२ वि० की प्रति । १०. गीता-प्रेस-गोरखपुर, पु० सं०—४७० । ११. रामनाथ लाल 'सुमन' काशी । १२. आयुर्वेद-सोसायिटी-पुस्तकालय जामनगर, सौराष्ट्र, पु० सं०—५८, सं०—१९३४ वि० की प्रति । १३. राज्य-पुस्तकालय—परसेनी, सीतापुर (अवध) ।[3]

१. राजस्थान: खोज-रिपोर्ट, भाग—२, में 'जगत-विनोद' की—बारह प्रतियों का उल्लेख मिलता है, पर विवरण एक प्रति का ही दिया गया है (परिशिष्ट-"ख") ।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ३३९ ।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स०, काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १११६ । यह अनेक स्थानों से छप कर प्रकाशित भी हुआ है, जैसे—"मुंबै उल् उलूम प्रेस, स०—१८८६ ई० तथा लोक-साहित्य प्रेस, मथुरा । भारत जीवन प्रेस, काशी, स०—१९०२ ई० सीताराम प्रेस, काशी, सं० १९९२ वि० । बनारस—

१४. भंडारकर इन्सटीट्यूट पूना, (महाराष्ट्र), पु० सं०—७४८। १५. संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग, उ० प्र०। १६. राज्य-पुस्तकालय, भिनगा, अवध। १७. सरस्वती-भंडार, भींड़र-राज्य, मेवाड़, सं०—१९०७ वि० की प्रति। १८. माणिक्य-ग्रंथ-भंडार, भींड़र-राज्य, (मेवाड़), सं०—१९२७ वि० की प्रति। १९ ठा० हरीहर बक्स सिंह, ममरेजापुर, पो०—बेनीगंज हरदोई। २०. जटाशंकर-कानजी भाई शास्त्री-पुस्तकालय, राजकोट, (सौराष्ट्र) पु० सं०—९६। २१. बा० नारायण दयाल, रायबरेली। २२. राजकवि अंबिकेश, उपरहटी—रीवाँ, विंध्य-प्रदेश, सं०—१८८१ वि० की प्रति। २३. राज्य-पुस्तकालय, जयपुर, राजस्थान।

जगत-रस-रंजन, रच०—कवि जगदीश, रच० सं०—१८६२ वि०। प्रा०-स्था०—रामकृष्ण लालाजी, गोकुल, मथुरा।[1]

जगत-विलास, रच०—म० रा० जगत सिंह राणा, उदयपुर, रच० सं०—१६८५ वि० के आस-पास। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर, मेवाड़।[2]

जगत-विलास, रच०—राजा जगत सिंह भिनगा, रच० सं०—१८६४ वि० के आस-पास। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, भिनगा, (बहराइच)।

जग-मोहन, रच०—रघुनाथ बंदीजन, रच० सं०—१८०२ वि०। प्रा० स्था०—बलरामपुर-राज्य-पुस्तकालय, बलरामपुर, अवध।[3] नायक-नायिका की दिनचर्या का वर्णन।

जनार्दन-विनोद, रच०—जनार्दन कविराय, रच० सं०—अज्ञात।[4]

लायट प्रेस, काशी स०—१८८५ ई०। ६. वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई स०—१९५६ वि०। ७. नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, स०—१८७९ ई०। ८. लखनऊ, प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, स०—१८९५ ई०। ९. इलाही प्रेस, आगरा। १०. नूर महम्मद प्रेस, (लीथो), जयपुर (राजस्थान), स०—१८९० ई० इत्यादि...।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२-१४ ई०, पृ०११० तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ८८१।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ४२०।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० ३२८ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ६५३।

४. यह पुस्तक मथुरा-प्रेस, मथुरा स०—१८८५ ई० में छपी है।

जय-चंद्रिका, रच०—द्विज प्रहलाद (छत्तीसगढ़), रच० सं०—१८३० वि०।
जय-प्रकाश-सर्वस्व, रच०—जयप्रकाश लाल।
जयदेव-विलास, रच०—महाराणा जयसिंह, उदयपुर, मेवाड़, रच० सं०—१६८१ वि०।
जयसिंह-प्रकाश, रच०—राजा प्रताप साहि, जयपुर-नरेश, रच० सं०—१८५२ वि०।[1] प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, जयपुर, राजस्थान।
जसवंत-उदोत, रच०—दलपति मिश्र माथुर ब्राह्मण, रच० सं०—१७५० वि०। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर-राज्य, राजस्थान।[2]
जसवंत-विलास, रच०—निधान कवि, रच० सं०—१६७४ वि०। प्रा० स्था०—जयदयाल तालुकदार, कटरा, सीतापुर, अवध।[3] (रस और अलंकार ग्रंथ)।
जसवंत-विलास, रच०—नारायण कवि, रच० सं०—अज्ञात[4]। प्रा० स्था०—हनुमान पुस्तकालय. सलकिया हबड़ा, कलकत्ता।
जसवंत-विलास, रच०—जसवंत सिंह बुंदेला, रच० सं०—अज्ञात।[5]
जवाहर-रत्नाकर, रच०—जवाहर बंदीजन : विलग्रामी, रच० सं०—१८८६ वि०।[6]

जा

जागेश्वर-विलास, रच०—हीरालाल कायस्थ : विजावर, छत्रपुर, (म० प्र०), रच० सं०—अज्ञात।[7]
जाति-विलास, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७८० वि० के आस-पास। प्रा० स्था०—राजा ललिता बक्स सिंह, नीलगाँव, सीतापुर, अवध[8]। २. पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज, लखनऊ। ३. पं० अंबिका प्रसाद व्यास, गणेशगंज, लखनऊ। ४, मल्लापुर-राज्य-पुस्तकालय।[9] ५, पं० गोकुलचंद

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ९२२।
२. खोज रिपोर्ट : राजस्थान—२। पृ० १५०।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० १५४।
४. यह पुस्तक काशी में छपी है।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ७७०।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ८२८।
७. मि० बं० वि०—३, पृ० १२२६।
८. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ४५१।
९. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० २१८।

दीक्षित, लखनऊ। श्री देव कवि-विरचित यह ग्रंथ उनकी देश-व्यापी यात्रा का मधुर फल है। जहाँ-जहाँ वे गये वहाँ-वहाँ का उन्होंने स्त्री-सौंदर्य भली-भाँति निरखा-परखा। उसे आपने जाति (वर्ण-व्यवस्था), वास और देशों के क्रम से नायिका-भेद में परिणत किया तथा (उसे) 'जाति-विलास' नामक ग्रंथ की संज्ञा दी। अष्टांगवती-नायिका का भी इसमें वर्णन है।[१]

जु

जुक्ति-तरंगिणी, रच०—कुलपति मिश्र, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिंदी-साहित्य-संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग।

जुगल-किशोर-विलास, रच०—गोकुल नाथ, रच० सं०—अज्ञात।

जुगल-प्रकाश, रच०—उजियारे कवि, रच० सं०—१८३७ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० स०, काशी।[२]

जुगल-रस-प्रकाश, रच०—उजियारे कवि, रच० सं०—१८३७ वि०। हाथरस के जुगल किशोर दीवान के लिये रचित।

जुगल-विलास, रच०—रामसिंह नरबर-नरेश, रच० सं०—१८२६ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० स०, काशी, सं०—१८३६ की प्रति। २. पं० गौरीशंकर मिश्र, अगड़ाल, पो०–रीवाँ : विंध्य-प्रदेश, सं०—१८३६ की प्रति। ३. सरस्वती-भंडार, उदयपुर, मेवाड़, पु० सं०-२३०, सं०—१८५० की प्रति।[४] बा० ब्रजरत्न दास, बी० ए०, काशी, सं०–१८७४ की प्रति।

जै

जैसिंह-कल्पद्रुम, रच०—सवाई जयसिंह, आमेर—जयपुर-नरेश, रच० सं—१७९० वि०।[३]

जो

जोग-दर्पन-सार, रच०—अकबर खाँ, रच० सं०—अज्ञात। श्रृंगार रस के द्वितीय पक्ष—"विप्रलंभ" का सरस वर्णन।

१. "देव और उनकी कविता", डा० नगेंद्र, पृ० ५३। हिं० सा० का बृ० इति० : ना० प्र० सभा काशी, पृ० १७७।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३२-३४ ई०, पृ० ३५९।

३. मि० बं० वि०—२, पृ० ५६४।

जोराबर-प्रकाश, रच—सूरत मिश्र, रसं०—अज्ञात।[1] प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, भरतपुर, राजस्थान।

ट

टीकैतराय-प्रकाश, रच०—बेनी कवि, रच० सं०—अज्ञात।

ठ

ठाकुर : सतक, रच०—ठाकुर कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ठा० जगदेव सिंह, कामद-कुंज, अयोध्या, संग्रह-ग्रंथ।[2]

ढ

ढेकी-चरित्र, रच०—कवि शिवप्रसाद, रच० सं०—१९०० वि०। प्रा० स्था०—राज्यपुस्तकालय, प्रतापगढ़ : अवध।[3]

त

तखत-विलास, रच०—शिवदास दधीच, रच० सं०—१८९९ वि०। प्रा०-स्था०—राव मोहनसिंह, उदयपुर : मेवाड़।[4]

ति

तिलक-बिंदु-विनोद, रच०—कवि पजनेश, रच० सं०—अज्ञात।

ते

तेरिज : रस-सारांश, रच०—भिखारी दास 'प्रसिद्ध', रच०सं०—१७९१ वि०। प्रा०-स्था०—महाराज-पुस्तकालय, प्रतापगढ़—अवध, सं०—१९१४ की प्रति।[5]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ५५३।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० ४६१।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० ३४८।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७४। रा० खो० रि०—३, १३०।
५. यह पुस्तक अभी-अभी "ना० प्र० सभा काशी" से सं० २०१३ वि० में 'भिखारीदास-ग्रंथावली' में प्रकाशित हो चुकी है। श्री भिखारीदास का यह ग्रंथ कोई पृथक् ग्रंथ नहीं है, उनके 'रस-सारांश' का ही बिना उदाहरण के केवल लक्षण-संयुक्त ग्रंथ है।

त्र

त्रिया-विनोद, रच०—मुरली कवि मेवाड़ी, रच० सं०—१७६३ वि०। प्राप्त-प्रति सं०—१८०० वि०। प्रा०स्था०—सरस्वती-भंडार उदयपुर : मेवाड़, पु०-सं०—४२९, ९४३—दो प्रतियाँ।

त्री

त्रीकम-प्रकाश, रच०—प्रभुराम डाँगध्रा : कठियावाड़, (सौराष्ट्र), रच० सं०—१९०० वि०।[1]

द

दंपति-द्युति-भूषण, रच०—जानी विहारी लाल औदीच्य मथुरा, रच० सं०—अज्ञात, प्राप्त-प्रति-१९२० वि०। प्रा० स्था०—पं० श्रीवर चतुर्वेदी, मथुरा।

दंपति-ध्यान-मंजरी, रच०—विहारी लाल—ओरछा मध्यप्रदेश, रच० सं०—१८१० वि०।[2]

दंपति-रंग, रच०—कवि लच्छीराम (प्रसिद्ध प्राचीन), रच० सं०—अज्ञात, प्राप्त-प्रति १७०९ वि०। प्रा० स्था०—अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर (राजस्थान)।[3] २. नाहटा—पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान,) गुटका नं०—१०।

दंपति-वाक्य-विलास, रच०—गोपालराय बंदीजन, रच० सं०—१८८५ वि०। इसका नाम—'दंपति-काव्य-विलास' भी मिलता है।[4] प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, रीवाँ (मध्य-भारत)।

दंपति-विनोद, रच०—कवि विश्वपाल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं०-सा० संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग, पु० सं०—९२।

दंपति-विनोद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर—राजस्थान। पु० सं०–२०७–२०६, २१०, तीन प्रतियाँ।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३२।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ७०७।
३. रा० स्था० खो० रि०—२, पृ० १५७।
४. मि० बं० वि०—२, पृ०—४९९,-८२६ तथा ३, पृ०—१०८४। यह पुस्तक बंबई के 'वेंकटेश्वर प्रेस' से सं० १९६८ वि० में प्रकाशित हो चुकी है।

दंपति-विलास, रच०—बलवीर कवि, रच० सं०—१७५९ वि०। प्रा० स्था०—सुखानंद बाजपेयी, कुट्टवा नगर, सीतापुर—अवध।[1]

दंपति-विलास, रच०—इंद्रभान ।

दंपति-विलास, रच०—ललित लड़ैती ।

दक्षिण-विलास, रच०—दक्षिण कवि, काव्य-प्रयुक्तनाम—'दच्छिन' या 'दच्छन', शुद्ध-नाम—'अहमदुल्लाह', रच० सं०—१७७३ वि०। प्रा० स्था०—पब्लिक-पुस्तकालय, भरतपुर राज्य।[2]

दया-विलास, रच०—दयाराम, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—प्रयाग-संग्रहालय प्रयाग, सं०—१८७२ वि० की प्रति, पृ० सं०—१८६, ४०।[3]

दलसिंहानंद-प्रकाश, रच०—कवि दलसिंह, उप ना०—दास, रच० सं०-१८९० वि०, प्रा० प्र० सं०-१९१० वि० की।[4]

दलेल-प्रकाश, रच०—कवि थानेराम, उप ना०—'थानकवि', रच० सं०—१८४८, १८८६ वि०, लिका० सं०—१९४६ वि०। प्रा० स्था०—पं० कृष्ण बिहारी मिश्र, सिधौली, सीतापुर—अवध। इस प्रति में रच० सं०—१८४८ वि० लिखा है।[5] २. पं० जुगलकिशोर मिश्र, गंधौली, सीतापुर—अवध।[6]

दि

दिग्विजय-भूषण, रच०—गोकुल कवि कायस्थ, उपना०—"ब्रज", रच० सं०—१९-१९ वि०। प्रा० स्थ०—बलरामपुर : राज्य-पुस्तकालय।[7]

दिग्विजय-विनोद, रच०—ललिताप्रसाद त्रिवेदी, उप ना०—ललित, रच० सं०-१९३० वि०।[8]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० २५५। हिं० सा० का बृ० इतिहास (ना० प्र० स०, काशी), पृ० १७७।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ६०६, ६१६।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० ७०।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०५५।
५. ना० प्र० पत्रिका : काशी, वर्ष—५५, अंक—३, सं०—२००७ तथा खोज-रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ७१२।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० ४२६।
७. यह पुस्तक "अवध-साहित्य मंदिर" बलरामपुर" से प्रकाशित हो गयी है।
८. मि० बं० वि०—३, पृ०—१२०५।

दिलाराम-विलास, रच०—दौलतराम, रच० सं०—१७६८ वि०। प्रा० स्था०—जैन-ग्रंथ-भंडार : आमेर-जयपुर राजस्थान।

दिलीप-रंजन, रच०—उत्तमचंद, रच० सं०—१७६०।[1]

दी

दीप-प्रकाश, रच०—कवि ब्रह्मदत्त, रच० सं०—१८६६ वि०।[2]

दु

दुकूल-चितावनी, रच०—लाल कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—मुं० प्रह्लादराय, महावन मथुरा।

दुर्गसिंह-शृंगार, रच०—जनार्दन भट्ट, रच० सं०—१७३५ वि०। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर—राजस्थान।

दू

दूनी-दर्पण, रच०—कवि गोकुलप्रसाद कायस्थ, उप ना०—'ब्रज', रच० सं०—१९१९ वि०।[3] प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, बलरामपुर।

दूती-दर्पण, रच०—विहारीसिंह, रच० सं०—१७८२ वि०।

दूती-विनोद, रच०—दूलह कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८०२ वि०।

दूती-विलास, रच०—गंगाप्रसाद ब्राह्मण, उप ना०—'गंग', सपोली, सीतापुर—अवध, रच० सं०—१८९० वि०।[4]

दूलह-विनोद, रच०—दूलह कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७६० वि० के पास। प्रा० स्था०—अभय-जैन ग्रंथालय : बीकानेर—राजस्थान।

दे

देवीसिंह-विलास, रच०—देवीसिंह, चँदेरी-नरेश, रच० सं०—१७२३-वि०।[5]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ५६७।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८५५।

३. इनका द्वितीय नाम—'गोपीनाथ' भी मिलता है।

४. मि० बं० वि०—३, पृ० १२९४।

५. मि० बं० वि०—३, पृ० ११०९।

देशाटन-विनोद, रच०—गदाधर कवि, उपना०—गजाधर, दतिया-निवासी, रच० सं०—अज्ञात, । विविध देशों की नायिकाओं का वर्णन ।[1]

दौ

दौलत.: बाग-विलास, रच०—शिव कवि, रच० सं०—१४५७ वि०।[2]

द्य

द्यानत-विलास, रच०—द्यानत कवि, रच० सं०—अज्ञात ।[3]

ध

धीर-रस-सागर, रच०—कवि मोतीराम, रच० सं०—१८२७ वि० । प्रा०स्था०—ला० दामोदर दास वैश्य कोठीवाले, लोई बाजार, वृंदावन—मथुरा ।[4]

न

नटनागर-विनोद, रच०—रतनसिंह, राजा-सीतामऊ, उपना०—नटनागर ।[5]

नवरंग-विलास, रच०—नवरंग कायस्थ, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया—विहार । २. जैन सिद्धान्त-भवन, आरा (विहार), पु० सं०—७७ । १७ ।[6]

नवरतन, रच०—रतन कवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, पन्ना-राज्य—मध्य प्रदेश ।

नवरस, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात, लिका०—१९१६ वि० । प्रा० स्था०—पं० श्रीवल्लभ, शेरगढ़, ब्रज—मथुरा ।[7]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०६९ ।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८७७ ।
३. सूचना—ना० प्र० सभा : काशी, सं०—२०१७ वि० ।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा—काशी, स०—१९१२-१४ ई०, पृ० १४७ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ७७५ ।
५. यह पुस्तक सं०—१९३५ वि० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से पं० कृष्णबिहारी मिश्र के संपादन के साथ प्रकाशित हो चुकी है। इससे प्रथम स०—१८९७ ई० में द्वितीय बार वेंकटेश्वर प्रेस बंबई में भी छपी थी।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ४७७ ।
७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३८-४० ई०, पृ० ४४० ।

नवरस, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात, लिका०—१८२० वि०। प्रा० स्था०—बा० धीरज लाल, कोसी कलाँ, मथुरा।

नवरस, रच०—आदित्यशाह्-इब्राहीम—बीजापुर-नरेश, रच० सं०—१६०८ वि०। प्रा० स्था०—पं० अयोध्या प्रसाद, बेगम बाजार, हैदराबाद—दक्षिण।

नवरस, रच०—गणपति भारती चौबे, जयपुर के महाराज सवाई प्रतापसिंह के आश्रित, रच० सं०—१८६० वि०।

नवरस, रच०—नानादास भरूची, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—जामनगर-पुरातत्त्व-संग्रहालय, जामनगर—सौराष्ट्र।

नवरस-तरंग, रच०—बेनी कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८७८ वि०। प्रा०-स्था०—रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० स०, काशी। २. पं० कृष्णविहारी मिश्र, सिधौली : सीतापुर—अवध, सं०—१६४१ वि० की प्रति। ३. पं० जुगल किशोर मिश्र, गँधौली, सीतापुर—अवध।[1] ४. पं० उमाशंकर महता, रामघाट, काशी।[2] ५. पं० श्यामविहारी, पांडेय, बहराइच। ६. ठा० विजय सिंह, दिकुटिया, सीतापुर—अवध।[3]

नवरस-बहार, रच०—सिया : रघुवरशरण, उपना०—'झूमक लाल', रच० सं०— अज्ञात। प्रा० स्था०—कनक-भवन, अयोध्या।[4]

नवरस-रंग, रच०—लोकमणि मिश्र (चौबे), रच० सं०—१८४६ वि०। प्रा० स्था०—संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग।

नवरस-रंजिता, रच०—दिनेश पाठक, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० सभा काशी।

नवरस-रत्नाकर, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—भंडारकर-इंस्टीट्यूट, पूना : महाराष्ट्र, बं० सं०—२५, पु० सं०—३६४।

नवरस-रत्नाकर, रच०—मंडन भट्ट तैलंग जयपुर, रच० सं०—१८७७ वि०। प्रा० स्था०—पब्लिक-लायब्रेरी, जयपुर—राजस्थान।[5]

---

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९-११ ई०, पृ० ४५।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२, ई० पृ० १६० तथा खो० रि० स०—१९२३-२५ ई०, पृ० २७८।

३. यह पुस्तक स०—१९२५ ई० में 'एस० एस० मेहता प्रेस', काशी से पं० कृष्ण विहारी मिश्र के संपादकत्व में छप कर प्रकाशित हो चुकी है।

४. मि० बं० वि०—२, पृ० ८३९।

५. इस पुस्तक का नाम—"रस-रत्नाकर" भी मिलता है।

नवरस-रहस्य-प्रकाशिका, रच०—चंद्र अली, सं०—१९७२ वि० की प्रति।

नवल-नेह, रच०—घनदेव या 'धनदेव' कान्यकुब्ज काशी, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—उमाशंकर महता, रामघाट, काशी।

नवलरस-चंद्रोदय, रच०—शोभा कवि, रच० सं०—१८१८ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी। २. पब्लिक-लायब्रेरी, भरतपुर—राजस्थान।[१]

नवीनाख्यान, रच०—दशरथराय, रच० सं०—१७९१ वि०। प्रा० स्था०—पं० मुरलीधर मिश्र, गुरु टोला, आजमगढ़। २, सेठ शिवप्रसाद साहु सदावर्ती, आजमगढ़। सं०—१७९२ वि० की प्रति।[२] पाँच प्रकरणों में विभक्त। ३, ना० प्र० सभा : काशी, सं०—१८६९ वि० की प्रति।

नवोढ़ा-वर्णन, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० रामेश्वर प्रसाद, काँमर (ब्रज), कोसीकलाँ, मथुरा।

नवीन-ललाम, रच०—दसरथ। प्रा० स्था०—ना० प्र० सभा : काशी। सं०—१७९२ वि० की प्रति।

ना

नाथ-चंद्रिका, रच०—उत्तमचंद, रच० सं०—१८६४ वि०। प्रा० स्था०—ला० संतोषीलाल, पुराना शहर, वृंदावन—मथुरा।

नानाराव-प्रकाश, रच०—बेनीप्रबीन (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात।

नायक-रासो, रच०—दुर्गाप्रसाद, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० यज्ञदत्त शर्मा, छीपी टोला, आगरा।[३]

नायिका-दर्शन, रच०—राजा जगतसिंह द्युतिहा (देवतहा) के ठाकुर, रच०—सं० १८७७ वि०। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, भिनगा (बहराइच)।

नायिका-दीपक, रच०—खड्गराय, उपना०—'खंगराय', रच० सं०—१६७५-वि०। प्रा० स्था०—ला० बद्रीप्रसाद, वैश्य, वृंदावन—मथुरा।[४]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ७६७।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९-११ ई०, पृ० १०२ तथा खो० रि० : स०—१९४१-४३ ई०, भा०—१, पृ० ३७२।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० ९७७।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२-१४ ई०, पृ० १२४।

नायिका-निरूपण, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—पं० कन्हैया-लाल शर्मा, पसरट्टा हाथरस—अलीगढ़।

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—मा० छिद्दासिंह, जैत, सिहाना—मथुरा।[१]

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—काँकरौली : सरस्वती-भंडार (मेवाड़), बं० सं०—८२, पु० सं०—१४।

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच०सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—पुरातत्त्व-संग्रहालय प्रयाग, पु० सं०—२५७-३३। दोहा-सोरठा छंदों में।

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पुरातत्त्व-संग्रहालय, प्रयाग, पु० सं०—२१६-२२१।

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात।[२]

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात, सं०—१८९० वि० की प्राप्त प्रति।[३]

नायिका-भेद, रच०—उदयनाथ कवींद्र, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—जगदीशचंद्र उपमन्यु, लाल दरवाजा, मथुरा।

नायिका-भेद, रच०—कमलेश कवि, रच० सं०—१८७० वि०।[४]

नायिका-भेद, रच०—कान्ह कवि, रच० सं०—१८५२ वि०।

नायिका-भेद, रच०—कुंदन कवि (बुंदेलखंडी), रच० सं०—१७५२ वि०।[५]

नायिका-भेद, रच०—केशव कवि-बघेलखंडी, रच० सं०—१७३९ वि०।[६] कोई इसका रचना-काल सं०—१७५४ वि० भी मानते हैं।[७]

नायिका-भेद, रच०—खड्गराय, वा—खड्गराम, रच० सं०—१७६५ वि०।[८]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३८-४० ई०, पृ० ४३७।
२. ना० प्र० सभा— पत्रिका : काशी, वर्ष-५५, अंक-३, सं०-२००७ वि०।
३. ना० प्र० स०—पत्रिका : काशी, वर्ष-५५, अंक-३, सं०-२००७ वि० विवरण।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८३।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ५५७।
६. हिं० सा० का बृ० इतिहास : ना० प्र० सभा काशी, पृ० १७८ में रचना-संवत् १७९३ वि० लिखा है।
७. मि० बं० वि०—२, पृ० ५६२।
८. हिं० सा० का बृ० इतिहास : ना० प्र० सभा काशी, पृ० १७७।

नायिका-भेद, रच०—खुशाल पाठक, रच० सं०—अज्ञात ।[1]

नायिका-भेद, रच०—खेतल कवि, रच० सं०—१७४८ वि० ।[2]

नायिका-भेद, रच०—खेमराय (क्षेमराय), रच०सं०—१६५० वि० ।[3]

नायिका-भेद, रच०—गिरिधर देव, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पुरातत्त्व-संग्रहालय, प्रयाग । प्रति सं०—२१७-११० ।

नायिका-भेद रच०—गिरिधरलाल, रच० सं०—१७०७ वि० । प्रा०स्था०—ठा० नोनिहालसिंह, काँठा उन्नाव ।[4]

नायिका-भेद, रच०—गुमान कवि मिश्र ।

नायिका-भेद, रच०—घासीराम, रच० सं०—१६४० वि० के आसपास ।

नायिका-भेद, रच०—जनकेश बंदीजन मऊ : बुंदेलखंडवाले, रच० सं०—अज्ञात ।

नायिका-भेद, रच०—ताहर कवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—मोटी हवेली, जामनगर—सौराष्ट्र, प्रति सं०—६०-१० ।

नायिका-भेद, रच०—नंदन कवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—पुरातत्त्व-संग्रहालय, प्रयाग ।

नायिका-भेद, रच०—नरेश कवि, रच० सं०—१६४८ वि० । प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी ।[5]

नायिका-भेद, रच०—नाथूराम शुक्ल झालावाड़, रच० सं०—१८८० वि० ।

नायिका-भेद, रच०—नीलकंठ, रच० सं०—अज्ञात ।[6]

नायिका-भेद, रच०—पुरुषोत्तम भट्ट, अजयगढ़-नरेश के आश्रित, रच०सं०—अज्ञात ।

नायिका-भेद, रच०—बेनीप्रवीन, (प्रसिद्ध) रच० सं०—१८७६ वि० ।

नायिका-भेद, रच०—मनसाराम, रच० सं०—१९११ वि० ।

नायिका-भेद, रच०—मून कवि असोथर—(गाजीपुर), रच० सं०—१८६० वि० ।[7]

१. शिस०—२७ ।

२. शिस०—२७ ।

३. जार्ज ग्रियर्सन, पृ० १११ ।

४. पदों, गीतों में नायिका-भेद वर्णन । दे०—खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा-काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ५५५ ।

५. मि० बं० वि०—३, पृ० १२२१ ।

६. ना० प्र० पत्रिका : काशी, वर्ष-५५, अंक-३, सं० २००७ वि० ।

७. मि० बं० वि०—२, पृ० ८५१ ।

नायिका-भेद, रच०—यशोदानंदन, रच० सं०—१८७२ वि० । बरवै छंदों में नायिका भेद-वर्णन ।[१]

नायिका-भेद, रच०—रंग खाँ तथा हित कृष्ण, रच० सं०—१८४० वि० । प्रा०-स्था०- याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० स०, काशी ।

नायिका-भेद, रच०—रामकृष्ण चौबे, रच० सं०—१८८६ वि० ।

नायिका-भेद, रच०—लच्छीराम बंदीजन, होलपुरवाले, रच० सं०—अज्ञात ।[२]

नायिका-भेद, रच०—लक्ष्मीप्रसाद, रच० सं०—१९०० वि० ।[३]

नायिका-भेद, रच०—लाल गिरधर, रच० सं०—१८८७ वि० । प्रा० स्था०—ला० मोहन लाल वैश्य, आजमगढ़ ।

नायिका-भेद, रच०—रामजी सुकवि, रच० सं०—१७३० वि० । प्रा० स्था०—पं० शिवदीन, लाठी मुहाल, कानपुर ।

नायिका-भेद, रच०—शंभु कवि, शंभुनाथ-सोलंकी, रच० सं०—१७०७ वि० ।[४] प्रा० स्था०—पुरुषोत्तम विश्राम मावजी भाई, फूलगली, बंबई ।

नायिका-भेद, रच०—श्रीधर कवि, उप ना०—'मुरलीधर', रच० सं०—१७५० वि० । प्रा० स्था०—गोकुल नाथ कवि, मिर्जापुर ।

नायिका-भेद, रच०—सेवक कवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—पं० राम-आसरे, गोपीगंज—मिर्जापुर । २ हिंदी-साहित्य-संमेलन : पुस्तकालय, प्रयाग ।

*

नायिका-भेद, रच०—बेनी कवि, रच० सं०—१६६० वि० । प्रा० स्था०—गोकुलचंद, सदरबाजार, मथुरा ।

नायिका-भेद, रच०—रामकृष्ण चौबे, रच० सं०—१८८६ वि० (दोहा छंदों में) ।[५]

नायिका-भेद, रच०—मानदास, रच० सं०—१८०७ वि० (दोहा छंदों में) ।

नायिका-भेद, रच०—अब्दुल रहीम खानखाना, प्रसिद्ध नाम—'रहीम', रच०-

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८४३ ।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० १२३४ ।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १०९९ ।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ४३७ । हिं० सा० का बृ० इतिहास : ना० प्र० सभा, काशी, पृ० १७७ ।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० ११५५ ।

सं०—अज्ञात, (बरवै छंद में)। प्रा० स्था०—पं० चुन्नीलाल वैद्य, ढुंढ़पाणी, काशी। २, रामनगर सरस्वती भंडार, काशी।[1]

नायिका-भेद, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात (बरवै छंद में)। प्रा० स्था०—पं० गोपीनाथ मिश्र, लक्ष्मणजी के मंदिर के पास, भरतपुर : राजस्थान।

नायिका-भेद, संपा०—रामकृष्ण वर्मा काशी (विरहा-छंद में)।[2]

*

नायिका-भेद-वर्णन, रच०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पुरातत्त्व-संग्रहालय, प्रयाग।

नायिका-भेद वर्णन, रच०—अज्ञात। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर : राजस्थान, प्रति सं०—२७८।

नायिका-भेद : संग्रह, रच०—मतिराम त्रिपाठी (प्रसिद्ध)।[3]

नायिका-भेद : संग्रह, (जसवंत सिंह कृत—'भाषा-भूषण' नामक ग्रंथ से संग्रहीत)। प्रा० स्था०—आयुर्वेद सोसायिटी, जामनगर : सौराष्ट्र, प्रतिसं०—३१। २, ग्राम-विकाश-मंडल अलियाबाड़ा-पुस्तकालय, जामनगर : सौराष्ट्र।

नायिका-लक्षण, रच०—हरदेव कवि (वृंदावन : वैश्य) रघुनाथराव पेशवा—नागपुर के आश्रित, रच० सं०—१८५७ वि०। प्रा० स्था०—ला० रामप्रसाद वैश्य, पथरपुरा, वृंदावन।[4]

नायिका-भेद शंकावली, रच०—जगन्नाथप्रसाद भानु। यह मुद्रित देखने में आयी है।

नायिका-रूप दर्शन, रच०—शिवसहाय उपाध्याय, रच० सं०—अज्ञात,। प्रा० स्था०—रामजी दास वैश्य, महावन : मथुरा।

ने

नेह-तरंग, रच०—चरनदास, रच० सं०—१८२३ वि०। प्रा०स्था०—नीमराना-राज्य पुस्तकालय।[5] इनका द्वितीय नाम 'चंद्रदास' भी मिलता है।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० २५।
२. यह संभवतः रामकृष्ण जी वर्मा के लहरी प्रेस काशी में छपा है।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९०६-८ ई०, पृ० १७१। मि०-बं० वि०—२, पृ० ८७७।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० ७०।

"**विशेष**" : नेह, संस्कृत—'स्नेह' का ब्रजभाषा-रूप है। प्रेम भी इसे कहते हैं और 'भक्ति' भी इसमें समा जाती है। अतः स्नेह तथा प्रेम का शब्दार्थ है—नेह, प्रेम, प्यार, अनुराग, केलि, आनंद तथा मुहव्वत-इत्यादि ··· ···। यह दो प्रकार का है—अलौकिक और लौकिक। अलौकिक-स्नेह व प्रेम परमेश्वर—राम-कृष्णादि के प्रति तथा लौकिक नायक-नायिका के प्रति एवं अन्य प्राणियों के प्रति। इन ग्रंथों में यह नायक-नायिका के प्रति ही माना गया है। शास्त्रज्ञों ने, कवियों ने तथा शायरों ने इसकी—स्नेह व प्रेम की, विविध परिभाषाएँ की तथा मानी हैं, पर उन्हें पूर्ण नहीं कहा—जाना हुआ नहीं माना, जैसा 'मीर-तकी' कहते हैं :

"छाती जला करै है, सोज़े-दरूँ बला है।
इक आग-सी रहे है, क्या जानिये कि क्या है॥"

अथवा, जैसा 'शेफ़्ता' साहिब कहते हैं :

"शायद इसी का नाम मुहब्बत है 'शेफ़्ता'।
इक आग-सी है सीने के अंदर लगी हुई॥"

अतः उसे बताना हर किसी को सहज नहीं है, कारण उसकी कोई राह (मार्ग) नहीं है। न मालूम कब और कैसे हो जाय :

"इश्क की दो-चार-राहें हों तो दिल को ढूँढ़ लूं।
मुझ को क्या मालूम, किस कूंचे में मरकर रह गया॥"

—साक़िब लखनवी

किंतु ब्रजभाषा-जननी संस्कृत ने इन—'स्नेह' और 'प्रेम' में भेद माना है। वहाँ—भाव, प्रेम, प्रणय स्नेह, राग, अनुराग और व्यसन का अर्थ—परिभाषा, एक के बाद एक की बड़ी सुंदर की गयी है जैसे :

"भावः प्रेमप्रणयः स्नेहोरागाऽनुराग व्यसनानि।
अंकुर, कंदल, शाखा, कलिका, प्रसून, पुष्प, फलानीति॥"

—गो० विट्ठलनाथ

नेह-निधान, रच०—नवीन कवि, रच० सं०—१७३० वि०। प्रा०स्था०—मिश्र-बंधु, माडल हाउस, लखनऊ[1]। इसका द्वितीय नाम "नेह-निदान" भी मिलता है।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १३१।

नेह-प्रकाश, रच०—बालकृष्ण दास, रच० सं०—१७४१ वि०, लिका०—१८८५ वि०।[1]

नेह-प्रकाश, रच०—बाल अली।[2]

नेह-प्रकाशिका, रच०—चरनदास, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ला० मोहनलाल वैश्य, नमकमंडी, आगरा।

नेह-निवाह, रच०—ग्वाल कवि प्रसिद्ध, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—नवनीत-पुस्तकालय, मथुरा। प्रति सं०—५३, ११।

नेह-विवाद, रच०—ग्वाल कवि प्रसिद्ध, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—नवनीत (कवि) पुस्तकालय, मथुरा। पु० सं०—४४, २४।

प

पंछी-चेतावनी, रच०—हरिवंश, रच० सं—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० गोबिंद प्रसाद,-हिंगोटखिरिया, पो०—बमरौली, कटरा—आगरा। २. चौधरी केहरी सिंह, नयाबास—इटावा।[3]

पक्षी-मंजरी, रच०— कविवर बोधा, रच० सं०—१६३६ वि०। प्रा०-स्था०—शंकर लाल कुलश्रेष्ठ, खैरागढ़—मैनपुरी।[4]

पक्षी-विलास, रच०—घासीराम, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० कृष्ण-विहारी मिश्र, सिधौली-सीतापुर—अवध।[5]

पजनेस-प्रकाश, रच०—पजनेश कवि(प्रसिद्ध), रच० सं०—१८७३ वि० के पास। यह 'भारत जीवन प्रेस', काशी से स०—१८९४ ई० में छपकर प्रकाशित हुआ है।

पति-मिलन, रच०—बृंद कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पुस्तक प्रकाश, जोधपुर—राजस्थान। संयोग-श्रृंगार वर्णन।

पद्यावली, रच०—रामचरणदास अयोध्यावासी, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भवन, लक्ष्मणकोट अयोध्या।[6] श्रीरामचंद्र जी की बाल-पौगंड लीलाओं के वर्णन के साथ नायिका-भेद वर्णन।

१. २. संभव है, ये दोनों कृतियाँ एक हों।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ३११ तथा स०—१९३८-४० ई०, पृ० ४४१।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३२-३४ ई०, पृ० ९८।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ५५५ तथा स०—१९२६-२८ ई०, पृ० २६१।

६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० २९८।

परमानंद-रस-तरंग, रच०—जगदीश लाल, उप ना०—"लाल कवि", रच० सं० अज्ञात ।[1]

पशु-जाति नायक-नायिका-वर्णन, रच०—बोधा कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात । प्रा०स्था०—शंकर लाल कुलश्रेष्ठ, खैरागढ़ : मैनपुरी । सं०—१८३६ वि० की प्रति ।[2]

पी

पीतम-वीर-विलास, रच०—चंदन कवि, रच० सं०—१८६५ वि० । प्रा०-स्था०—कुँवर रामेश्वर सिंह, सीतापुर ।[3]

पीयूष-रत्नाकर, रच०—जगन्नाथ कवि, उप ना०—"सुखसिंधु", रच० सं०—अज्ञात । प्रा०स्था०—जगन्नाथ लाला जी भट्ट त्रिगृही, गोकुल—मथुरा ।[4]

पु

पुहुप-प्रकाश,[5] रच०—देवेश्वर माथुर (चौबे), रच० सं०—१८३९ वि०, भरत-पुर के राजा बहादुर सिंह के पुत्र—पौहौप सिंह के आश्रित । प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी । २. सरस्वती-भंडार-भरतपुर—राज्य ।

प्र

प्रताप-मातंड, रच०—गंगाधर भट्ट, ओड़छाबासी, रच० सं०—१९३०वि० ।

प्रताप-रत्नाकर, रच० लच्छीराम कवि (प्रसिद्ध) ब्रह्मभट्ट, रच० सं०—अज्ञात ।[6] प्रा० स्था०— सरस्वती-भंडार, राज-सदन—अयोध्या ।

१. यह 'जगदीशलाल' कृत नहीं, 'नवीन कवि : बृंदावन' कृत है । रच० सं० १८९९ वि० ।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी ।

३. मि० बं० वि०—२, ७८३ ।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० १११ ।

५. इसका नाम "पौहौप-प्रकाश" भी मिलता है ।

६. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३४ । राज-सदन : अयोध्या के 'सरस्वती-भंडार' में 'कवि लच्छीराम' के निम्नलिखित ग्रंथ हमारे देखने में आये हैं, जैसे—"कमलानंद-कल्पतरु, प्रताप-रत्नाकर, प्रेम-रत्नाकर, माहेश्वर-विलास, महेंद्र-

प्रताप-विनोद, रच०—बल्देव कवि (अवस्थी) उप ना०—"द्विज बलदेव", रच०-सं०—१९२६ वि० । कोई-कोई इसका रचना-संवत् १९३४ वि० भी मानते हैं ।

प्रबीन-सागर, रच०—प्रभानाथ, रच० सं०—१८३८ वि० । प्रा० स्था—ना० प्र०-सभा काशी । प्रस्तुत पुस्तक–७१ लहरों में विभक्त है । नायिकभेद—१५, १६, २५, ३३, ३४, ३६, ३७—इत्यादि आगे की लहरों में भी वर्णन किया गया है ।

प्रबोध-रस-सुधा-सागर, रच०—नवीन कवि बृंदावन, रच० सं०—१८९५ वि० । प्रा० स्था०—याज्ञिक-पुस्तकालय, अलीगढ़ ।[१] २. लालाराम, जनरल-मर्चेंट छत्ताबाजार, मथुरा ।

प्रमदा-पारिजात, रच०—बल्देव कवि (द्वितीय), उप ना०—"द्विज गंग", रच० सं०—१९५७ वि० ।[२]

प्रवीन-सागर (प्रवीण-सागर), रच०—प्रवीण, उपना०—"कलाप्रवीन", रच० सं०—१८३८ वि० ।[३] प्रा० स्था०—नवनीत पुस्तकालय मारू गली, मथुरा, (मुद्रित) प्रति-सं०—१।१।१-१३।१।

प्रेम-चंद्रिका, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच०सं०—अज्ञात, प्राप्त-प्र०-सं०—१९४१ वि० । प्रा० स्था०—राजा श्रीप्रकाशसिंह मल्लापुर-राज्य (सीतापुर-अवध)[४] । २.राजा : ललिताबख्श सिंह, नीलगाँव-राज्य, (सीतापुर: अवध) । ३. पं० श्यामविहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर-अवध ।[५] ४. ना० प्र० सभा, काशी, सूचना सं०-२०१८ वि०, प्रा० प्रति०—१९४१ वि० की ।

भूषण, मुनिश्वर-कल्पतरु, रावणेश्वर-कल्पतरु, लक्ष्मीश्वर-रत्नाकर, रणधीर-विलास, मानसिंहाष्टक, रामचंद्र-भूषण, हनुमत-शतक" इत्यादि... ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३५-३७ ई०, पृ० २०२। इसका नाम "रस सुधा-सागर" या "सुधा-सागर" भी मिलता है।

२. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३६ ।

३. मि० बं० वि०—२, पृ० ८२० । यह संपूर्ण पुस्तक जो बहुत बड़ी है, अहमदाबाद-गुजरात के "महादेवराम जागुष्ठे" बुक्सेलर के यहाँ से प्रकाशित हुई है। ला० भगवानदीन जी ने भी इसका एक अल्परूप संपादन कर प्रकाशित किया था।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० २२० ।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ४६६ ।

प्रेम-तरंग, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० जुगलकिशोर मिश्र, गँधौली, सीतापुर—अवध।[1]

प्रेम-तरंग, रच०—बलदेव कवि, उप ना०—''द्विज कवि'', रच० सं०—अज्ञात, ।

प्रेम-तरंगिणी, रच०-मुरलीधर भट्ट, अलवर-राजस्थान, रच०सं०—१८२० वि०। प्रा० स्था०—ला० गोवर्धन दास' अलवर (राजस्थान)।

प्रेम-तरंगिणी, रच०—यदुनंदन, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार काशी: संस्कृत-विश्वविद्यालय, पु०सं० ४६१५२।

प्रेम-दर्पण, रच०—अज्ञात। प्रा० स्था०—गोपाल मंदिर काशी पुस्तकालय।

प्रेम-दीपिका (द्वितीय नाम–प्रेमरंग), रच०—वीर कवि मंडला-वासी, रच०-सं०—१८१८ वि०।[2]

प्रेम-पचीसी, रच०—सोमनाथ माथुर ब्राह्मण (प्रसिद्ध), रच०सं०—१८१० वि०। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय : भरतपुर (रा० पू०)।

प्रेम-पयोनिधि, रच०—राजा दलसिंह बुंदेलखंड, रच० सं०—१७८१ वि०।[3]

प्रेम-पयोनिधि, रच०—मृगेंद्र, रच०सं०—१९०० वि०।[4]

प्रेम-पयोनिधि, रच०—ईश्वर कवि धौलपुर–राजस्थान।

प्रेम-पीयूष, रच०—छेदीलाल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—उमाशंकर दुबे, गाजीपुर, सं०—१९४४ वि० की प्रति।[5]

प्रेम-प्रकाश, रच०—छत्रसाल झाँसी, रच० सं०—१८३३ वि०।[6]

प्रेम-प्रवाह, रच०—अचरलाल नागर, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—जामनगर-राज्य-पुस्तकालय, सौराष्ट्र।[7]

प्रेम-मंजरी, रच०—अज्ञात, रच०सं०—१७४० वि०। प्रा०स्था—खरतर आचार्य-शाखा : चुन्नी-भंडार, जेसलमेर : राजस्थान।

प्रेम-रत्न, रच०—फ़ाज़िलशाह, बनिया—छतरपुर, मध्यप्रदेश, रच०सं०—१९०० वि०।[8] प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय छतरपुर : मध्यप्रदेश।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९-११ ई०, पृ० १०७।
२. मि० बं० वि०—२, ७६७।
३. मि० बं० वि०—२, ६१९।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० ११०७।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० २०४।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ८१२।
७. मि० बं० वि०—३, पृ० ९५५।
८. मि० बं० वि०—३, पृ० १०९५।

प्रेम-रत्नाकर, रच०—देवीदास, रच०सं०—१७४२ वि० । प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी । २. नवनीत पुस्तकालय, मारुगली मथुरा । प्रतिसं०—४४।१२ ।

प्रेम-रत्नाकर, रच०—लच्छीराम (प्रसिद्ध), रच०सं०—१९३१ वि० । प्रा०-स्था०— बा० जगन्नाथ दास—रत्नाकर, शिवाला घाट, काशी ।[1]

प्रेम-रस-सागर, रच०—अखैराम, रच०सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—पं० रेवती-रमण शर्मा, बेरी, पो०—बरारी, मथुरा ।[2] विषय : वियोग-शृंगार ।

प्रेम-सतसई, रच०—गुलाबसिंह भरतपुर, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, भरतपुर (राजस्थान) ।

प्रेम-सुधा-रत्नाकर, रच०—पं० रमाकांत बलिया, रच० सं०—१९४२ वि० ।

फ

फतेह-प्रकाश, रच०—कवि खेमराज (क्षेमराज), रच० सं०—१९६० वि०, द्वितीय मत सं०—१६८६ वि० ।[3]

फतेह-प्रकाश, रच०—रतन कवि, रच० सं०—१८२२ वि० ।

फा

फाजिल-अली-प्रकाश, रच०—सुखदेव मिश्र, रच० सं०—१७३३ वि० । प्रा०-स्था०—मन्नूलाल पुस्तकालय गया : बिहार, सं०—१७३३ वि० की प्रति । २. पं० दुर्गादत्त अवस्थी, कंपिला, फर्रुखाबाद ।[4] ३. राज्य पुस्तकालय, बलरामपुर—गोंडा ।[5] ४. ठा० हरिहर बख्श सिंह, ममरेजापुर, पो०—बेनीगंज : हरदोई । ५. ठा० रणधीरसिंह ज़मीदार, खानीपुर, पो०—तालाब-बख्शी (लखनऊ) ।[6]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३४ ।
यह प्रथम 'बनारस लायट प्रेस' तथा बाद में 'भारत जीवन प्रेस' काशी में छपा है। लायट प्रेस वाला संस्करण खंडित रूप में बा० ब्रजरत्नदास वकील, काशी के पास भी देखने में आया है।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० स० काशी, स०—१९३८-४० ई०, पृ० ८६ ।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ४२० ।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० ३६५ ।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० ४४४ ।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ६७१ ।

फू

फूल-चितनी, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ला० गुलजारी-लाल रीतौरा—इटावा।[१]

फूल-चेतनी, रच०—गुरुदास, रच० सं०—१८३० वि०। प्रा० स्था०—भागीरथ-प्रसाद दीक्षित, हिंदी-साहित्य-संमेलन, प्रयाग।[२] २. पं० लल्लूलाल मिश्र, मवैया, फतेपुर।[३] इसका नाम—"रस-प्रसून" भी मिलता है।

फूल-मंजरी, रच०—नंददास (अष्टछाप), रच० सं०—अज्ञात। प्र० स्था०—सरस्वती-भंडार-नाथद्वारा (मेवाड़)। २. पं० श्रीराम, भीखनपुर, पो०—फतहाबाद, आगरा। विषय : फूलों को लक्ष्य मानकर नायिका-भेद।

ब

बखत-विलास, रच०—भोगीलाल दुबे, रच० सं०—१८५६ वि०। प्रा० स्था०—मातादीन द्विवेदी, कुसुमरा, मैनपुरी। इसका नाम—"बसंत-विलास" भी मिलता है।[४]

बधू-विनोद, रच०—कालिदास त्रिवेदी (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७४९ वि०, इसका नाम—"बारबधू-विनोद" भी मिलता है। प्रा० स्था०—"याज्ञिक-संग्रहालय" (दो प्रतियाँ) तथा "रत्नाकर-संग्रहालय"—ना० प्र० सभा, काशी। २. बा० गिरधारी लाल, रायबरेली (अवध)। ३. महंत रामविहारी शरण कामदकुंज, अयोध्या[५]। ४. ठा० अनुरुद्ध सिंह, मैनेजर नीलगाँव-राज्य, सीतापुर—अवध।[६] ५. पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज लखनऊ। ६. राज्य-पुस्तकालय, दतिया (म० प्र०)। ७. कैप्टन शूरवीर सिंह, अतिरिक्त जिलाधिकारी—बुलंदशहर।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३८-४० ई०, पृ० ४४५।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० २३५।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० ३६१।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ८५७ तथा खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० १७८।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० २६३।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ७९७।

बधू-विनोद, रच०—चंद्रबंधु, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ला० किशनलाल, चौक बाजार मथुरा, मस्जिद के नीचे।

बनिता-भूषण, रच०—कविराव 'गुलाब सिंह' बूँदी, राजस्थान, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती भंडार, बूँदी—राजस्थान।

बनारसी-विलास, रच०—बनारसी दास जैन, रच० सं०—अज्ञात।[1]

बरबंड-विनोद, रच०—जीवन कवि, रच० सं०—१८७३ वि०। प्रा० स्था०—कुँवर रामेश्वर सिंह, नेरी, सीतापुर।[2]

बरवै : नायिका-भेद, रच०—रहीम पूर्णनाम—"अब्दुल रहीम खानखाना", रच० सं०—१५८० वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय: ना० प्र० सभा काशी। २. संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग। ३. पुरातत्व संग्रहालय, प्रयाग, पु० सं०— १८७।४६। ४. राज्य पुस्तकालय, अमेठी—अवध।[3]

बरवै : नायिका-भेद, रच०—मतिराम (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं०—कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर—अवध।[4]

बरवै : नायिका-भेद, रच०—यशोदानंदन (जसोदानंद), रच० सं०—१८७? वि०।

बरवै : नायिका-भेद, रच०—राम? कवि, फर्रुखाबाद, रच० सं०–१७२० वि०।[5]

बरवै : नायिका-भेद, रच०—रामभट्ट, फ़र्रुखाबाद; रच० सं०—१८३० वि०।[6]

बलदेव-विलास, रच०—दयाकृष्ण, रच० सं०—अज्ञात।[7]

बलभद्र-विलास, रच०—रामकवि, रच० सं०—१८९३ वि०। यह शास्त्र-ग्रंथ भी है. . . .।

बलवंत-विलास, रच०—सूर्यमल्ल बूँदी (राजस्थान), रच० सं०—१८९० वि०। प्रा० स्था०—राज्यपुस्तकालय, बूँदी राजस्थान।[8]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२-१४ ई०, पृ० ११८।

३. दे० 'नायिका-भेद : बरवै।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १०४१। इस पुस्तक में लक्षण 'मतिराम' कृत और उदाहरण कविवर 'रहीम' के हैं।

५. मि० बं० वि०—२, पृ० ४८७।

६. मि० बं० वि०—२, पृ० ७७९।

७. मि० बं० वि०—२, पृ० ९३४ तथा "कवि-रत्नमाला" पृ० ११३।

८. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० २४३ तथा मि० बं० वि०—२, ८८६।

बसंत-मंजरी, रच०—माखन पाठक, रच० सं०—१८६० वि० । प्रा०स्था०—ला० घनश्यामदास वैश्य, फ़िरोज़ाबाद, आगरा ।[1]

बसंत-विलास, रच०—विष्णुदत्त महापात्र, रच० सं०—१८६६ वि०। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, कालाकाँकर (अवध) ।[2] नायिका-भेद के साथ अलंकारवर्णन भी ।

बसंत-विलास, रच०—भोगीलाल (कुसुमरा : मैनपुरी), रच० सं०—१८५६ वि०, लिपि सं०—१८५७ वि० । प्रा० स्था०—पं० मातादीन दुबे, कुसुमरा, मैनपुरी ।

बा

बाग-विलास, रच०—सेवकराम असनी, उप ना०—'सेवक', रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—ठा० अनुरुद्धसिंह, नीलगाँव, सीतापुर—अवध, सं०—१९२१ वि० की प्रति ।[3] २. परशुराम चतुर्वेदी, एम० ए० : बलिया ।

बाग-विलास, रच०—सरदार कवि काशी, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, रामनगर—काशी-राज्य ।

बाग-विलास, रच०—शिव कवि, रच० सं०—१९०३ वि० के पास (दौलतराव सिंधिया के आश्रित) ।

बाम-विनोद, रच०—गोकुल कायस्थ, बलरामपुर, उप ना०—"ब्रज कवि", रच० सं०—१९२९ वि० ।[4]

बाम-विलास, रच०—वैजनाथ, रच० सं०—१७३४ वि० के आसपास । प्रा० स्था०—मन्नूलाल पुस्तकालय, गया—बिहार ।[5]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८५६ ।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० ४०४ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ८८४ ।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १३४७ तथा मि० बं० वि०—३, पृ० १०४० ।

४ मि० बं० वि०—३, पृ०—१०८४ तथा ११४५ । गोकुल कवि के "दिग्विजय-प्रकाश, कृष्णदत्त-भूषण, अचल-प्रकाश, दिग्विजय-भूषण, अष्टयाम-प्रकाश"—आदि ग्रंथ भी मिलते हैं ।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० १३५ तथा प्रा० ह० पो०—विवरण : पटना, पृ० १३७ ।

बामा-मनोरंजन, रच०—सागर बाजपेयी लखनऊ रच० सं०—१८६० वि०।[1]

बारबधू-विनोद, रच०—कालिदास (प्रसिद्ध-हिंदी कवि), रच० सं०—१७४९ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।[2] २. राज्य-पुस्तकालय, दतिया—मध्यभारत। ३. काँकरौली-सरस्वती-भंडार, मेवाड़, बं० सं०—६०, प्रति सं०—७। ४, रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१८९६ वि० की प्रति।[3]

बारांगना-चरित्र, रच०—लालचंद पाँडे, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० शिवरत्न शुक्ल, बछरावाँ, रायबरेली।

बालकराम-विनोद (नवरस), रच०—हरिप्रसाद, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।[4]

बाल-विलास, रच०—दास कवि, रच० सं०—१७३१ वि०। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान), सं०—१७३१ वि० की प्रति।

बि

बिक्रम-विलास, रच०—परमानंद कायस्थ ललितपुर, रच० सं०—१९४२ वि०।[5]

बिक्रम-विलास, रच०—श्रीपति, रच० सं०—१७८० वि०।

बिक्रम-सतसई, रच०—राजा विक्रमसिंह, चरखारी-नरेश, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, चरखारी—मध्यभारत।

बिरह-वारीश, रच०—बोधा कवि, रच० सं०—१८१५ वि० के लगभग। प्रा०-स्था०—राज्य पुस्तकालय : छतरपुर—मध्यप्रदेश।

बिरही-सुभाँन, अर्थात् दंपति-विलास, रच०—बोधा कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात।

बिहारी-सतसई, (नायिका-भेद के अनुसार "बिहारी-सतसई" के दोहों का संकलन), संक०—अज्ञात, संकलन-संवत्—अज्ञात। प्रा० स्था०—माखन कवि, डिहिया, पो०—खास, रीवाँ (बघेलखंड)। २. गयाप्रसाद बक्सी, उपरहटी, रीवाँ—बघेलखंड।

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८६५।
२. याज्ञिक-संग्रहालय : काशी में दो प्रतियाँ हैं।
३. इसका नाम "बधू-विनोद" भी मिलता है।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३२-३४ ई०, पृ० १३३।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० १२२७।

बी

बीर-शृंगार, रच०—रूपनगर-नरेश 'राजसिंह', रच० सं०—१८०१ वि० । प्रा० स्था०—अ० भा० ब्रज-साहित्य-मंडल मथुरा, पु० सं०—६३-१००।

बु

बुधिजन-विलास, रच०—बुधजन, रच० सं०—१८९२ वि०।[1] प्रा० स्था०—ला० केशवदेव, गोकुलपुरा—आगरा ।

बुद्धि-प्रकाश, रच०—कवि हुलासराय, (हुलास मिश्र), रच० सं०—१८०० वि० । प्रा० स्था०—पं० मथुरा प्रसाद मिश्र, रामनगर : बाराबंकी ।[2]

बृ

बृहद्-कवि-वल्लभ, रच०—कवि वल्लभ, रच० सं०—अज्ञात ।

बृहद्-कवि-वल्लभ, रच०—हरचरणदास, रच० सं०—१८३९ वि० ।

बृहद्-वनिता-भूषण, रच०—कविबर 'गुलाबसिंह, रच० सं०—१९०० वि० । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय : झालरापाटन (राजस्थान) ।[3]

बृहद्-व्यंग्यार्य-चंद्रिका, रच०—कविराव 'गुलाब', रच० सं०—१९३३ वि० ।[4] प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, बूँदी : राजस्थान ।

ब्र

ब्रज-चंद्रिका, रच०—राव ताराचंद, रच० सं०—१८५७ वि० ।[5] इसका नाम—"ब्रजचंद्र-चंद्रिका" भी मिलता है ।

ब्रज-लीला, रच०—हरिकेश (दतिया-बुंदेलखंड), रच० सं०—०७८८ वि०। पुस्तक में—नखसिख, नायिका-भेद तथा षट्ऋतु-वर्णन के साथ "ब्रज-लीला" कही है ।

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८९०।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ६५४।
३. कवि-रत्नमाला, पृ० ८८।
४. कवि-रत्नमाला, पृ० ८८ ।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० ९७५।

ब्रज-विनोद, रच०—कवि जगदीश, उपना०—"लाल कवि", रच० सं०—अज्ञात।[1] प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, भरतपुर:राजस्थान।

ब्रज-विनोद-हजारा, रच०—बद्री विशाल, उपना०—"लाल बलबीर", रच० सं०—१९३३ वि०।[2]

ब्रज-विनोद-हजारा, रच०—गोस्वामी जगदीश लाल, उपना०—"जगदीश" बूंदी—राजस्थान, रच० सं०—अनुमानतः बीसवीं शती।[3]

ब्रजेंद्र-प्रकाश, रच०—रसानंद, रच० सं०—१८९१ वि०। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, भरतपुर (राजस्थान)। २. ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९७६ वि० की प्रति। १५ (पंद्रह) प्रकाशों में विभक्त।

ब्रजेंद्र-विनोद, रच०—मोतीराम, भरतपुर के राजा—बलवंतसिंह के आश्रित, रच० सं०—१८८५ वि०। प्रा० स्था०—पब्लिक लायब्रेरी, भरतपुर-राजस्थान।[4]

ब्रजेंद्र-विनोद, रच०—सोमनाथ, रच० सं०—१८०९ वि०, महाराज-सूरजमल : भरतपुर के आश्रित, माथुर ब्राह्मण।

ब्रजेंद्र-विलास, रच०—गदाधर भट्ट दतिया, रच० सं०—१९०३ वि० (पद्माकर-भट्ट-वंशज)। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, दतिया (मध्यप्रदेश)।[5]

ब्रहन्मंजरी (बृहद्-मंजरी), रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—भंडारकर इंस्टीट्यूट, पूना (महाराष्ट्र), प्रति सं०—५३५।

भ

भक्त-भावन, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध), रच० सं—१९१९ वि०। प्रा० स्था०—

१. ना० प्र० सभा, काशी के "हिं० सा० का बृहद् इतिहास" (षष्ठ-खंड) में रच०-सं० १९ वीं शती लिखा है, दे०—पृ० १७८।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० १२३८।
३. कविरत्न-माला, पृ० ६४ तथा मि० बं० वि०—३, १२१३।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० २५७।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० १०६९। श्री गदाधर भट्ट के अन्य ग्रंथ—"अलंकार-चंद्रोदय, कामांधक (नीति-रचना), कैसर:सभा-विनोद (सं०१९३९ वि०), छंदो-मंजरी, देशाटन-विनोद, विरुदावली (सं० १८९८ वि०), एवं ब्रज-चंद्रिका (सं० १८९४ वि०) जो सं० १९७९ वि० में हि० सा० संमेलन प्रयाग से प्रकाशित हुई है,—इत्यादि ग्रंथ मिलते हैं।

नवनीत- चतुर्वेदी पुस्तकालय, मथुरा । दो प्रतियाँ, प्रति सं०—४४।२५, तथा ५३।१० ।

भक्ति-विनोद, रच०—सुरत मिश्र, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार: उदयपुर (मेवाड़), सं०—१८७८ वि० की लिखी ।

भवानी-विलास, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७४६ वि० के आस-पास। प्रा० स्था०—ललिता प्रसाद वैश्य, नया घाट-अयोध्या, सं०—१९०५ वि० की लिखी ।[1]

भवानी सिंह-प्रकाश, रच०—कवि भगवान दास, दतिया-नरेश के आश्रित, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, दतिया, मध्य-भारत ।

भा

भाव-अब्धि, रच०—ईश्वर कवि, धौलपुर—राजस्थान ।

भाव-चंद्रिका, रच०—मोहन दास मिश्र, रच० सं०—१८३९ वि० ।[2]

भाव-चंद्रोदय, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—नवनीत-पुस्तकालय मथुरा, दो प्रतियाँ, प्रति सं०—६।१७ तथा ६।२२ ।

भाव-पंचाशिका, रच०—वृंद कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७४३ वि० । प्रा०-स्था०—ठा० गंगासिंह, देवरिया, पो०—बसोरा, सीतापुर[3] (अवध) । २. पं० रामदेव, बबुरी, बहराइच ।[4] ३, पं० चुन्नीलाल वैद्य, ढुंढपाणि, काशी ।[5]

भाव-प्रकाश, रच०—गिरधर भट्ट बाँदा, रच० सं०—१८८७ वि० ।

भाव-प्रकाश, रच०—देवकवि (प्रसिद्ध) ।

भाव-प्रकाश-पंचासिका, रच०—वृंद कवि, दे०—"भाव-पंचाशिका" ।

भाव-रसामृत, रच०—गुलाब सिंह पंजाबी, रच० सं०—१८३४ वि० ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० २०४। यह 'भारत जीवन प्रेस' काशी में स०—१८९३ तथा स०—१९०० ई० में दो बार छपा है।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८२१।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६-२८ ई०, पृ० ७६६।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १५९१।

५. इसका नाम "भाव-प्रकाश-पंचाशिका" भी मिलता है। अतः "भाव-पंचाशिका" तथा 'भाव-प्रकाश-पंचाशिका' दोनों एक ही पुस्तक हैं।

भाव-वर्णन, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—भंडारकर-इंस्टीट्यूट, पूना (महाराष्ट्र)। प्रति सं०—५३५।

भाव-विरही, रच०—अजीत सिंह, रच० सं०—१७३० वि०।

भाव-विलास, रच०—गोपाल राय ब्रह्मभट्ट—वृंदावन, रच० सं०—१९०७ वि०। प्रा० स्था०—ला० कन्नोमल, पुराना शहर, वृंदावन।[1]

भाव-विलास, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७४६ वि०। प्रा० स्था०—पं० श्यामविहारी मिश्र गोलागंज, लखनऊ[2]। २. मन्नू मिश्र, नीलगाँव: सीतापुर (अवध)। ३. महाराजेंद्रचंद्र रायबरेली। ४. हनुमान प्रसाद, सब पोस्ट मास्टर राया, मथुरा[3]। ५. पुरातत्व-संग्रहालय जामनगर, सौराष्ट्र।

भाव-सतक, रच०—कवि सारंगधर, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं० सा०-समेलन-पुस्तकालय, प्रयाग, प्रति सं०—५७।

भाषा-कवि-रस-मंजरी, रच०—मानमुनि जैन, उपना०—'मान', रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—अभय-जैन-ग्रंथालय, बीकानेर—राजस्थान।

भाषा : रस-मंजरी (भानु-कृत संस्कृत-रस-मंजरी का अनुवाद), रच०—रामानंद, रच० सं०—१८०७ वि०। प्रा० स्था०—पं० महावीर प्रसाद, गाजीपुर।[4]

भु

भुवनेश-विलास, रच०—राजा त्रिलोकीनाथ सिंह अयोध्या, उपना०—"भुवनेश", रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार राज्य, अयोध्या।

भे

भेद-प्रकाश, रच०—चंद्र कवि, रच० सं०—१९०४ वि०।

भ्र

भ्रम-भंजन, रच०—मनबोध, रच० सं०—१८४१ वि०—शास्त्र ग्रंथ।[5]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८४।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ४४४।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९-३१ ई०, पृ० २२०। यह स०—१८९३ ई० में भारत जीवन प्रेस काशी से तथा सं०—१९९१ वि० में भारतवासी प्रेस, प्रयाग में छप चुका है।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा स०—१९०९ ई०, पृ० ३५१।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० २७३।

म

मदन-सत, रच०—दाम पंडित, रच० सं०—१७४९ वि० ।

मधु-प्रिया, रच०—पजनेश कवि, रच० सं०—अज्ञात, फिर भी सं०—१२७३ वि० के पास (रस-अलंकार वर्णन) ।

मनमोहन-चंद्रिका, रच०—कृष्ण चरण, रच० सं०—अज्ञात ।

मनसाराम के कवित्त, रच०—मनसाराम शुक्ल—टेढा ग्राम उन्नाव के, रच० सं०—अज्ञात (नायिका-भेद के कवित्तों का संग्रह) ।

मनोज-लतिका, रच०—राजा छितिपाल सिंह अमेठी राज्य, रच० सं०—अज्ञात, क्षितिपाल सिंह उपनाम है, मूल ना०—"माधवसिंह" था । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, अमेठी (अवध) ।[१] इसका नाम—"मनोलतिका" भी मिलता है ।

मनोहर-मंजरी, रच०—मनोहर मथुरा-वासी, रच० सं०—१६९१ वि० । प्रा० स्था०— अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर (राजस्थान) ।[२]

मरदान-रसार्णव, रच०—सुखदेव मिश्र, रच० सं०—१७५७ या सं०—१७३६ वि० । प्रा० स्था०—पं० शिवलाल बाजपेयी, असनी (फतेपुर)[३] । २. ठा० शिवप्रसाद सिंह, कटैला, बहराइच ।[४]

महेश्वर-विलास, रच०—लच्छीराम ब्रह्म भट्ट (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात ।

मा

माधव-विलास, रच०—लाल कवि, रच० सं०—अज्ञात ।

माधव-विलास, रच०—ला० ठाकुर प्रसाद कायस्थ, रच० सं०—१९२५ वि० ।[५]

माधव-विलास, रच०—महाराज माधव सिंह, सं०—१९०३ वि० की प्रति ।

मान-कवित्त, रच०—प्रभुदयाल, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—पं० जुगल-किशोर शर्मा, जगसौरा, इटावा ।[६]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १२२९ ।
२. रा० खो० रि०—२, पृ० २६ ।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२०-२२ ई०, पृ० ४४७ ।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १४१५ ।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० ११६२ ।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३८-३० ई०, पृ० २९५ ।

मान-बत्तीसी, रच०—लाल कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, काँकरौली-मेवाड़। पु० सं०—७२।१२।

मान-बत्तीसी, रच०—मान मुनि, रच० सं०—१७३१ वि०। प्रा० स्था०—पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर (राजस्थान)। पुस्तक के अंतानुसार इसका दूसरा नाम—"संयोग-बतीसी" भी मिलता है।

मान-महोदधि, रच०—विजयचंद्र, जयपुरवाले, रच० सं०—१९१० वि०।

मान-विनोद, रच०—अयोध्या प्रसाद बाजपेयी, उपना०—औध, रच० सं०—१९१० वि०।[1]

मान-विलास, रच०—गोपाल राय बंदीजन (वृंदावन), रच० सं०—१८९१ वि० के आस-पास। इस कृति का नाम—"मान-पचीसी" भी मिलता है।

मि

मिश्र-सिंगार, रच०—भोजराज मिश्र, बूंदी—राजस्थान के राजा बुद्धि सिंह के आश्रित, रच० सं०—१७७६ वि०। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय—बूंदी (राजस्थान)।[2]

मु

मुकुंद-विनोद, रच०—मुकुंद लाल भरतपुर, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, भरतपुर (राजस्थान)। २. ला० गोकुल दास, कुम्हेर—भरतपुर।[3]

मुकुंद-विलास, रच०—मुकुंदी लाल कायस्थ, बनारस (काशी), रच०सं०—अज्ञात।[4]

मुनीश्वर-कल्पतरु, रच०—लच्छीराम ब्रह्म भट्ट (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात।[5]

मू

मूलराज-विलास, रच०—श्रीनाथ गोस्वामी, उपना०—नाथ कवि, रच० सं०—अज्ञात।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३२।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ६१६।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १२२३।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १३१४।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३५।

मो

मोहन-हुलास, रच०—मोहन कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार : काँकरौली (मेवाड़) पु० सं०—७३।६ ।

मौज-प्रकाश, रच०—रसानंद भरतपुर, रच० सं०—१९१० वि० । प्रा० स्था०—ला० ब्रद्रीप्रसाद, लक्ष्मण मंदिर-पास, डीग (भरतपुर) ।[१]

यु

युक्ति-तरंगिणी, रच०—कुलपति मिश्र, रच० सं०—१७४३ वि० । प्रा० स्था०—रत्नाकार-संग्रह—ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९०७ वि० की प्रति ।

यौ

यौवन-चंद्रिका, रचा०—शिवसंपति, उपना०—'सुजान' कवि, उदियावाँ:आजमगढ़ ।

र

रंग-तरंग, रच०—नवीन कवि : वृंदावन (मथुरा), रच० सं०—१८९९ वि० ।[२] प्रा० स्था०—ना० प्र० सभा, काशी ।

रंगभाव-माधुरी, रच०—ब्रजपति भट्ट, रच० सं०—१६८० वि० (नवरस, नायिका-भेद नख-सिख, भूषण तथा षट्ऋतुओं का वर्णन) । प्रा० स्था०—पं० रामस्वरूप शुल्क, सरैया, पो०—बिसवाँ, सीतापुर : अवध। २. छन्नूलाल जी गोकुल (मथुरा) ।[३]

रंगभाव-माधुरी, रच०—हरदेव, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० शिवकंठ दुबे, बिहगापुर, उन्नाव (उ०प्र०) ।[४]

रघुनाथ-विलास, रच०—कवि रघुनाथ, प्रसिद्ध कवि गंग के शिष्य, रच० सं०—१६७७ वि० 'जहाँगीर-समय' । संस्कृत-'रस-मंजरी'—का ब्रज-भाषा-अनुवाद ।[५]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११६९।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० १०३१।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स० १९१२ तथा स० १९२६-२८ ई०, पृ० ४० तथा २९१।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स० १९२९-३१ ई०, पृ० ३०१।
५. मि० बं० वि०—१, पृ० ३६८।

रघुनाथ-विलास, रच०—रघुनाथ कवि (दूसरे) ब्राह्मण, रच० सं०—१८६६ वि०। संस्कृत 'रस-मंजरी' का ब्रज-भाषा-अनुवाद।[१]

रघुराज-विनोद, रच०—पुरंदर कवि, रच० सं०—अज्ञात।[२]

रघुवर-कर-कर्णाभरण, रच०—किशोरीदास, रच सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—कनक भवन-पुस्तकालय, अयोध्या। २. राज्य-पुस्तकालय—छतरपुर (मध्यप्रदेश)।[३]

रघुवीर-विलास, रच०—लच्छीराम (प्रसिद्ध), रच०सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, अयोध्या राज्य।[४]

रति-भूषण, रच०—जगन्नाथ कवि, रच० सं०—१७१४ वि०। प्रा० स्था०—जिनभद्र : सूरि-भंडार, जेसलमेर : राजस्थान—।[५]

रति-बिनोद, रच०—अहमद कवि, रच० सं०—१६७५ वि०।

रति-बिनोद, रच०—चंदन लाल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं० सा० संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग, पु० सं०—७५।

रति-मंजरी, रच०—तोषनिधि कवि, रच० सं०—१७९४ वि०। प्रा० स्था०—बेचूलाल महापात्र असनी, फतेहपुर। २. सरस्वती-भंडार—संस्कृत विश्व-विद्यालय काशी, पु० सं०—४६०४६।

रस-उल्लास, रच०—कवि लीलाधर, (संस्कृत-रसमंजरी का ब्रजभाषा-अनुवाद) रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था—मोटी हवेली, जामनगर : सौराष्ट्र। पु०-सं०—२४०।१४।

रसकंद, रच०—मन्य कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० शिवचरण लाल, कालपी : जालौन।[६]

रस-कलानिधि, रच०—सीताराम साँमेरी, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० प्रति—१९६३ वि०।

१. इनका इत-वृत्त विशेष नहीं मिलता।
२. यह पुस्तक 'नवलकिशोर प्रेस' लखनऊ में छपी है। इतिहास ग्रंथों में यह रस-ग्रंथ माना है, पर है यह "छंद-शास्त्र" ग्रंथ।
३. यह पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी, किंतु नामानुसार यह "नख-सिख" के अंतर्गत जानी चाहिये।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३५।
५. रा० खो० रि०—२, पृ० २६।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० २७९।

रस-कल्लोल, रच०—कर्ण (करन) कवि ब्राह्मण—पन्ना-राज्यवासी, रच० सं०—१७५७ वि०[1], (रस, ध्वनि,व्यंग्य, काव्य तथा रीति का वर्णन : शास्त्र-ग्रंथ)। प्रा०स्था०—ठा० नौनिहाल सिंह सेंगर काँथा, उन्नाव।[2] २. मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया (बिहार), सं०—१९०६ वि० की प्रति। ३. सरस्वती भंडार—संस्कृत : विश्वविद्यालय, काशी। पु० सं०—४६०२८।

रस-कल्लोल, रच०—कवि कृष्ण भट्ट, रच० सं०—१८९० वि० (रस-निरूपण-नायिका-भेद के साथ)। प्रा०स्था०—सरस्वती-भंडार लक्ष्मण-कोट, अयोध्या।[3]

रस-कल्लोल, रच०—चंदन राय कवि, रच० सं०—१८४६ वि०, (रस निरूपण-नायिका-भेद के साथ)। प्रा० स्था०—कुँवर दिलीपसिंह, बारगाँव, सीतापुर : अवध।[4]

रस-कल्लोल, रच०—तुलसीदास, रच० सं०—१७११ वि०।[5]

रस-कल्लोल, रच०—यशोदानंदन, रच० सं०—अज्ञात।

रस-कल्लोल, रच०—शंभुनाथ मिश्र, रच० सं०—१८०६ वि०। प्रा० स्था०—गो० राधाचरण जी (प्रसिद्ध) वृंदावन, मथुरा।[6] २. पं० रामप्रताप दुबे, गोपालपुर, असनी : फतेहपुर।[7]

रसकानंद, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध) मथुरा, रच० सं०—१८७९ वि०। प्रा० स्था०—नवनीत पुस्तकालय, मथुरा। पु० सं०—४४।२६, सं० १९५० वि० की लिखी। द्वितीय पुस्तक-सं०—५३।९। २. रा० श्रीप्रकाशसिंह मल्लापुर, सीतापुर (अवध)। ३. भुवनेश्वरी-पीठ-पुस्तकालय, गोंडल (सौराष्ट्र) सं०—१९३१ वि० की लिखी। ४. कविराव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़)।

१. ना० प्र० स०, काशी के "हिं० सा० का बृहद् इतिहास" में इसका रच० सं० १८९० वि० माना है, दे० पृ० १७८।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ८०५।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७-१९ ई०, पृ० २२०।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२-१४ ई०, पृ० ४४।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ४६०। हिं० सा० का बृ० इतिहास : ना० प्र० सभा, काशी, पृ० १७७।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१३-१४ ई०, पृ० २१२।
७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ४२७।

रसकुंड, रच०—मन्यु कवि, रच० सं०—अज्ञात।[1]

रस-कुसुमाकर, रच०—महाराज प्रताप नारायण सिंह, अयोध्या, रच० सं०—१९५१ वि०। इंडियन प्रेस: प्रयाग से प्रकाशित

रस-कोश, रच०—जान कवि, रच० सं०—१६७६ वि०। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान)।

रस-कौमुदी, रच०—रसिक विहारी, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हनुमान-पुस्तकालय, सलकिया-हवड़ा (कलकत्ता)। मुद्रित पुस्तक—उपना०-'रसिकेश'।[2]

रस-कौमुदी, रच०—हरवंश लाल, रच०सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० रमा-वल्लभ शास्त्री, दाऊजी (मथुरा)।

रस-कौमुदी, रच०—हरिदास कायस्थ—पन्ना-निवासी, रच० सं०—१९०१ वि०।[3]

रस-कौमुदी, रच०—हरिप्रसाद कायस्थ, पन्ना-टीकमगढ़ निवासी, रच० सं०—१८९७ वि०।[4]

रस-गुलजार, रच०—बदनजी चारण बूँदी, रच० सं०—१८२२ वि०।[5] प्रा०-स्था०—राज्य पुस्तकालय, बूँदी—राजस्थान।

रस-ग्राहक-चंद्रिका, रच०—सुरत मिश्र (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७६३ वि०, आचार्य केशव-कृत 'रसिक-प्रिया' की टीका। प्रा० स्था०—बालमुकुंद चतुर्वेदी, मानिकचौक मथुरा, सं०—१८७३ वि० की लिखी।[6] कोई इसका रचना-काल—सं०-१७९१ वि० भी मानते हैं।

रस-चंद्र, रच०—कल्याणदास, रच० सं०—१८४५ वि०।[7]

रस-चंद्रिका, रच०—उजियारे लाल, पूरा ना०—दौलत राम, रच० सं०—१८३७-वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।

रस-चंद्रिका, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—रत्नाकर-संग्रहा-लय : ना० प्र० सभा, काशी।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ९९४।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७४। यह पुस्तक मुद्रित रूप में 'बा० जगन्नाथदास' रत्नाकर, शिवाला घाट काशी के यहाँ देखने में आयी थी।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७२।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १२०२।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ९४१।
६. दे०—आचार्य केशव कृत "रसिक-प्रिया" की विविध टीकाएँ।
७. मि० बं० वि०—२, पृ० ८२७।

रस-चंद्रिका, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—गीता-प्रेस : पुस्तकालय, गोरखपुर, पु० सं०—१३७।

रस-चंद्रिका, रच०—संत कल्याण, डाकौर : गुजरात वासी : रच० सं०—१८४५ वि०।

रस-चंद्रिका, रच०—टोडरमल ब्रह्मभट्ट कंपिला वासी, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० दुर्गादत्त अवस्थी, कंपिला : फ़र्रुख़ाबाद।[1]

रस-चंद्रिका, रच०—दौलतराम जयपुर (राजस्थान), रच० सं—१८४२ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।[2]

रस-चंद्रिका, रच०—वंशमणि, रच० सं—अज्ञात। प्रा० स्था०—दौलतचंद चतुर्वेदी, मैनपुरी।

रस-चंद्रिका, रच०—रामजी मल्ल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय अलवर—राजस्थान।[3]

रस-चंद्रिका, रच०—बालकृष्ण तिवारी, रच०सं०—१७८८ वि०।[4] प्रा० स्था०—ना० प्र० सभा, काशी। खंडित प्रति, ग्यारह प्रकाशों में विभक्त।

रस-चंद्रिका, रच०—हरदेव कवि, रच० सं०—१७२६ वि०।

रस-चंद्रिका-प्रकाश, रच०—नवाब ईशव खाँ, रच० सं०—१८०१ वि०। प्रा० स्था०—हिं० सा० संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग, पुसं०—१२५।

रस-चंद्रोदय, रच०—उदयनाथ कवींद्र (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८०४ वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी। २. राज्य-पुस्तकालय, टीकमगढ़ (म० भा०)। ३. पं० अवधेश पांडेय, खंभारिया : बहराइच।[5] ४. कविराव मोहन सिंह, उदयपुर—मेवाड़। इसे 'रति-विनोद' तथा 'रस-चंद्रिका' भी कहते हैं।

रस-चंद्रोदय, रच०—गणेश कवि चौबे करौली : राजस्थान, रच० सं०—१८७५ वि०। प्रा० स्था०—लोकमणि चौवे, करौली : राजस्थान।[6]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७, ई०, पृ० ३८४।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३२-३४ ई०, पृ० १२१।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १०००।
४. जा० ग्री०, पृ० १५३।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० १५६६।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ८९८ तथा—३, पृ० १०७०।

रस-चंद्रोदय, रच०—ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी रायबरेली, रच० सं०—१८९२-वि०।[1]

रस-चित्र-समूह, रच०—राम कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार-काँकरौली : मेवाड़, प्र० सं०—७२।२।

रस-तरंग, रच०—खुसीलाल, रच० सं०—१९२० वि०। प्रा० स्था०—विष्णु-भरोसे, बहादुरपुर, हरदोई।[2]

रस-तरंग, रच०—नवीन कवि, रच० सं०—१८९९ वि०। प्रा० स्था०—राधेलाल वैश्य, गोकुल (मथुरा)।

रस-तरंग, रच०—परमानंद, रच० सं०—अज्ञाज। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय—टीकमगढ़ : मध्य-प्रदेश।

रस-तरंग, रच०—लक्ष्मणप्रसाद पांडे, उपना०—'लखनेश', रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार-रीवाँ : राज्य, मध्य प्रदेश। सं०—१९३५ वि० की प्रति।[3]

रस-तरंग, रच०—लोकनाथ चौबे जयपुर, रच० सं०—१७३० वि०। प्रा०-स्था०—सरस्वती-भंडार, जयपुर-राज्य : राजस्थान।[4]

रस-तरंग, रच०—सेनापति (प्रसिद्ध) रच० सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। २. माधौराम गोवर्धनदास दालवाले मथुरा।[5]

रस-तरंगणी, रच०—अज्ञात। प्रा० स्था०—बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर' शिवालाघाट, काशी।[6]

रस-तरंगिणी, रच०—जानकवि, रच० सं०—१७११ वि०।

रस-तरंगिणी, रच०—पुहकर, रच० सं०—१५६० वि०। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार-रीवाँ—राज्य : (म० भा०)।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११५९।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ३९९।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० ११४२। यह पुस्तक नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ में छप चुकी है।
४. हिं० सा० का बृह० इतिहास (ना० प्र० सभा०, काशी) पृ० १७७।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९१२ ई०, पृ० २१८।
६. अब यह पुस्तक ना० प्र० सभा, काशी में आ गयी है।

रस-तरंगिणी, रच०—प्राणनाथ, लिपि सं०—१८६५ वि०। प्रा० स्था०—नारायण प्रसाद, माडरी, मैनपुरी।[1]

रस-तरंगिणी, रच०—मीठाराम सूरत गुजरात-निवासी, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़), पु० सं०—८४।६।

रस-तरंगिणी, रच०—शंभुनाथ मिश्र, रच० सं०—१८०३ वि०।[2] प्रा० स्था०—हिं० सा० संमेलन-पुस्तकालय प्रयाग, सं०—१८६० वि० की प्रति।

रस-तरंगिणी, रच०—सुबंश शुक्ल, रच० सं०—१८३४ वि०, अन्य मतानुसार सं०—१८६१ वि०। प्रा० स्था०—राजा श्रीप्रकाशसिंह, मल्लापुर, सीतापुर (अवध)।[3]

रस-तरंगिणी, रच०—हृदयराम, रच० सं०—१७८१ वि०। प्रा० स्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान)।[4]

रस-दर्पण, रच०—देवीदीन बंदीजन—बनारस (काशी), रच० सं०—१९४८-वि०।[5] कोई इन्हें हरदोई के बंदीजन कहते हैं।

रस-दर्पण, रच०—सेवादास, रच० सं०—१८४० वि०। प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।[6]

रस-दीप, रच०—कवींद्र नरबर (बुंदेलखंड), रच० सं०—१७९९ वि०।[7]

रस-दीप, रच०—बदन कवि, रच० सं०—१८०९ वि०।

रस-दीप, रच०—भूपति कवि—महाराज गुरुदत्त सिंह—अमेठी,[8] रच०-सं०—१७९९ वि०। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, अमेठी। २. राज्य पुस्तकालय, भिनगा : बहराइच।[9]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९३२-३४ ई०, पृ० २७०। ना० प्र० सभा काशी के 'हिं० सा० का बृ० इतिहास' (षष्ठ खंड) में रच०-सं० १८०६ वि० लिखा है।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ६८०।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९२६-२८ ई०, पृ० ७०९।
४. इसका नाम "रस-रत्नाकर" भी मिलता है।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० १२९५।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३२-३४ ई०, पृ० ३२२।
७. मि० बं० वि०—२, पृ० ६९१।
८. मि० बं० वि०—२, पृ० ६४०।
९. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३-२५ ई०, पृ० ३३१।

रस-दीपक, रच०—अज्ञात, रच०सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं० सा० संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग, प्रति सं०—१९।२।

रस-दीपक, रच०—उदयनाथ कवींद्र, रच० सं०—१७९९ वि०।

रस-दीपक, रच०—कवींद्र नरबर : बुंदेलखंड, रच० सं०—१७९९ वि०। उदयनाथ कवींद्र से भिन्न।

रस-दीपक, रच०—खरगराय (खंगराम), रच० सं०—१७६५ वि०। प्रा०-स्था०—ला० बद्रीदास वैश्य, वृंदावन (मथुरा)।[१]

रस-दीपिक, रच०—बदन कवि, रच० सं०—१८०८ वि०। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार—अयोध्या-राज्य।[२]

रस-दीपिका, रच०—कुँवर कुशल, रच० सं०—अज्ञात, सुंदरदास-कृत—'सुंदर-शृंगार' की टीका।

रस-दीपका, रच०—साहिबराम, रच० सं०—अज्ञात।

रस-निधि, रच०—शिव बंदीजन बिलग्रामी, रच० सं०—१७९६ वि०।[३]

रस-निधि-सागर, रच०—रसनिधि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं०-सा० संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग। प्रति सं०—४७।

रस-निरूपण, रच० तथा रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० श्रीपति लाल दुबे, बमरौली : कटरा, आगरा।[४]

रस-निवास, रच०—उदयचंद भंडारी जोधपुर—राजस्थान, रच० सं०—१८९० वि०।[५]

रस-निवास, रच०—रामसहाय कायस्थ, रच० सं०—१८७३ वि०।

रस-निवास, रच०—रामसिंह, रच० सं०—१८३९ वि०। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, दतिया (म० भा०)। २. कवि वासुदेव, दतिया (म० भा०)।

रस-पचीसी, रच०—राम जौहरी वृंदावन (मथुरा), रच० सं०—१८३५ वि०। प्रा०स्था०—बाबा बंशीदास, गोविंदकुंड : वृंदावन, मथुरा।[६]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० १२४ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ५६९।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ७०४।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ७६९।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३-२५ ई०—२, पृ० १२३।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० १०६५।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ५२६।

रस-पद्धति, रच०—कृपाराम मिश्र, रच० सं—१८९६ वि० ।[1]

रस-पयोध, रच०—टीकाराम, रच० सं०—१८५१ वि० । प्रा० स्था०—रामनारायण ब्रह्मभट्ट, बिलग्राम : हरदोई ।[2]

रस-पाय-नायक, रच०—राजा राजसिंह—कृष्णगढ़ (किशनगढ़), राजस्थान, रच०सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—राज्य पुस्तकालय—किशनगढ़ (राजस्थान)।

रस-पीयूष-निधि, रच०—सोमनाथ चौबे (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७९४ वि० । प्रा०स्था०—उदयसिंह जी भटनागर : उदयपुर-मेवाड़ । २. याज्ञिक संग्रहालय । ना० प्र० सभा काशी—सं०—१८९८ वि० की प्रति । ३. लूणकरण जी का मंदिर, जयपुर (राजस्थान), सं०—१८५५ वि० की प्रति । राज्य पुस्तकालय, भरतपुर (राजस्थान) की, महाराज कुमार प्रतापसिंह के लिये लिखी गयी । ४. नवनीत पुस्तकालय, मथुरा । ५. कन्हैयालाल पोद्दार, मथुरा । ६. विट्ठलदास पुरुषोत्तमदास वैश्य (कंठीमाला वाले) मथुरा । ७. ब्रजवासी लाल चौबे, मथुरा । ८. अ० भा० ब्र० सा० मंडल मथुरा—प्रति सं० ११।१२ । ९. पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज लखनऊ । १०. ठा० दिग्विजयसिंह, दिकौलिया, विसवाँ, फतेपुर । ११. पं० जुगलकिशोर मिश्र, गंधौली सीतापुर (अवध) । १२. सरस्वती-भंडार–काँकरौली (मेवाड़), प्रति स०—६११, सं०—१८७६ वि० की लिखी । १३. बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता । १४ रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० स० काशी । १५, हावर्ड विश्व विद्यालय : अमरीका, (यूरोप). प्रति सं०—३०३ ।[3]

रस-प्रकाश, रच०—स्व० जगन्नाथ भट्ट गोकुल, मथुरा, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—नवनीत पुस्तकालय, मथुरा ।[4]

रस-प्रकाश, रच०—बा० जागेश्वरराय या प्रसाद, रच० सं०—अज्ञात, (हरिप्रकाश प्रेस, काशी का छपा) ।

रस-प्रकाश, रच —नवनीतराय, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर (मेवाड़) दो प्रतियाँ । प्रति सं०—१०० सं०—१७८४ वि० की तथा १०३, सं०—१७८० वि० की ।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७७ ।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० २३८ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ८३५ ।
३. इस पुस्तक के लिये देखिये—विविध-खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी ।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० १८८ ।

रस-प्रकाश, रच०—राम कवि बंदीजन, रच० सं०—१९४८ वि० ।[1]

रस-प्रकाश, रच०—उजियारे कवि ।

रस-प्रकाश, रच०—सैयद युसूफ़ अली खाँ, रच० सं०—१८२९ वि० (पहेलियों में नायिका-भेद वर्णन) । प्रा० स्था०—खुदाबख्श-पुस्तकालय, पटना (बिहार) ।

रस-प्रक्रिया, रच०—बिहारीलाल सनाढ्य, रच० सं०—अज्ञात, प्रा०—प्रति सं०-१८०२ वि० की ।[2]

रस-प्रबोध, रच०—दौलतराम—वृंद-वंशज (किशनगढ़—राजस्थान के महाराज भीमसिंह के आश्रित), रच० सं०—१८२० वि० । प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, किशनगढ़ : राजस्थान ।[3]

रस-प्रबोध, रच०—रसलीन (सैयद गुलामनवी) बिलग्रामी, रच० सं०—१७९८ वि० । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, टीकमगढ़ (म० भा०) । २ राजकवि अंबकेश, उपरहटी—रीवाँ (म० भा०) सं०—१७५८ की प्रति ।[4] ३ रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० सभा, काशी । ४. राज्य पुस्तकालय भिनगा, बहराइच (अवध) सं०—१८९३ वि० की प्रति ।[5] ५ ठा० त्रिभुवन सिंह, सैदपुर, नीलगाँव, सीतापुर (अवध) । ६. सरस्वती भंडार, रीवाँ राज्य (म० भा०), सं०—१७५८ वि० प्रति । ७. सवाई महेंद्र पुस्तकालय, ओरछा—टीकमगढ़ (म० भा०) ।[6]

रस-प्रबोध, रच०—सुंदर बंदीजन-असनी, रच० सं—१९३० वि० ।[7]

रस-प्रमोद, रच०—हुलास कवि, सं०—१९४८ वि० की प्राप्त प्रति ।

रस-प्रशंसा, रच०—तथा रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—अनूप संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर (राजस्थान), प्रति सं०—२९३ वी० ।

१. इस पुस्तक का नाम भर सुना है, देखने में नहीं आयी।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ३३ ।

३. यह पुस्तक बहुत सुंदर है।

४. यह पुस्तक बहुत सुंदर तथा शुद्ध है।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स० १९२३-२५ ई०, पृ० ५९० ।

६. यह गोपीनाथ पाठक काशी, भारत जीवन प्रेस काशी तथा नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित हो चुकी है।

७. मि० बं० वि०—३, पृ० १००९ ।

रस-बल्ली, रच०—गणेश कवि, हरदोई रच० सं०—१८१९ वि० ।[१] सं०—१९४१ वि० की प्राप्त प्रति ।

रस-बृंद, रच०—भानुमिश्र, रच० सं०—१८५० वि० । प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय भिनगा, बहराइच । इसमें संस्कृत दोहे भी लिखे गये हैं ।[२]

रस-बोध, रच०—गंगाप्रसाद उदैनिया, रच० सं०—१८७४ वि० ।[३]

रस-भूषण, रच०—गोदूराम, रच० सं०—१७८० वि० ।

रस-भूषण, रच०—कृष्णालाल भट्ट बूँदी, राजस्थान, रच० सं०—१८७४-वि० । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय : बूँदी (राजस्थान) ।[४]

रस-भूषण, रच०—तुलसी कवि, रच० सं०—१७११ वि० ।[५]

रस-भूषण, रच०—याकूब खाँ, रच० सं०—१७७६ वि० । प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, दतिया (म०भा०) । २. माधव प्रसाद छतरपुर-मध्यभारत ।[६]

रस-भूषण, रच०—रामनाथ बाजपेयी, रच० सं०—१८६२ वि० ।[७]

रस-भूषण, रच०—राम भट्ट बूंदी (राजस्थान), रच० सं०—अज्ञात ।

रस-भूषण, रच०—शिवप्रसाद राय कायस्थ, रच० सं०—१८६९ वि० । प्रा०-स्था०—राज्य पुस्तकालय, दतिया (म० भा०) ।[८]

रस-भेद, रच०—तथा रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—रत्नाकार-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।

रस-भेद भेदी, रच०—राम कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्राप्त०—१८२०-वि० की।

रस-मंजरी, रच०—सूरदास (अष्टछाप), रच० सं०—१६४० वि० ।[९]

रस-मंजरी, रच०—नंददास (अष्टछाप), रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—हावर्ड विश्वविद्यालय : अमेरिका (यूरोप), पु० सं०—३०३। २. सरस्वती-

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ७२६।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९२३ ई०, पृ० २९८।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ८९३।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० ८९१।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ४६०।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ४६०।
७. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८८।
८. मि० बं० वि०—३, पृ० ७८०।
९. सूरदास-कृत 'रसमंजरी' का नाम भर सुना जाता है, देखने में नहीं आयी।

भंडार, उदयपुर (मेवाड़)। ३ सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़), दो प्रतियाँ, प्रति सं०—६३।१ तथा—७५।११। ४. याज्ञिक संग्रहालय : ना०-प्र० सभा काशी, सं०—१८१७ वि० की प्रति। ५. रत्नाकर-संग्रहालय : ना०-प्र० सभा काशी। ६. बा० ब्रजरत्न दास बी० ए०, काशी। ७. पं० चुन्नीलाल वैद्य, ढुंढपाणी, काशी। ८, ना० प्र० सभा, काशी। ९. गीताप्रेस-पुस्तकालय, गोरखपुर प्रतिसं०—३३८। १० भुवनेश्वरी-पीठ-पुस्तकालय, गोंडल—सौराष्ट्र, प्रति सं०—१०६ तथा ३९५, सं०१८९० वि० की लिखी। ११. मोटी-हवेली जामनगर, सौराष्ट्र, पु० सं०—१४२-१७। १२, भंडारकर इंस्टीट्यूट, पूना-महाराष्ट्र, पु० सं०—५३५। १२ चतुर्भुजदास खुश्यालदास पुस्तकालय, मद्रास (द० भा०)।[1]

रस-मंजरी, रच०—आदित्यराम, (रविराम) रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था० संस्वती-भंडार : काँकरौली (मेवाड़), पु० सं०—५१।

रस-मंजरी, रच०—चिंतामणि (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात, प्रा०प्र०—सं० १८८५ वि० की। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, दतिया (म० भा०)।[2]

रस-मंजरी, रच०—जान कवि, रच० सं०—१७११ वि०। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर (मेवाड़), पु० सं०—३३४, सं०—१७११ वि० की प्रति।

रस-मंजरी, रच०—दंपताचार्य, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव झाँसी।[3]

रस-मंजरी, रच०—ध्रुवदास, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर (राज-स्थान)।

रस-मंजरी, रच०—भानु कवि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—कवि राव मोहनसिंह, उदयपुर-मेवाड़।

रस-मंजरी, रच०—मुनिमान जैन, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—हिं० सा०-संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग, पु० सं०—५१।

रस-मंजरी, रच०—रघुनाथ, रच० सं० या लि० सं०—१७९१ वि०। प्रा०-स्था०—जैन-मंदिर बड़ा तेरहपंथी पुस्तकाल, जयपुर (राजस्थान), पु०

१. नंददास कृत-'रसमंजरी' की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ—उनकी पंचमंजरी: अनेकार्थ, मान, रस, विरह तथा रूप-मंजरी के साथ मिलती हैं। मुद्रित भी अनेक स्थानों से 'पंच-मंजरी'—नाम से हुई है।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ४०९।

३. मि० बं० वि०—३, पृ० ११५६।

सं०—१५३१ बंध में, सं०—१७७१ वि० की लिखी। २. ठा० विक्रमसिंह, रायपुर, सासन, पो०—तौरा, उन्नाव।[१]

रस-मंजरी, रच०—रतन कवि, रच० सं०—१७९८ वि०। "संस्कृत रस-मंजरी" का अनुवाद।

रस-मंजरी, रच०—रामानंद, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—पं० महाबीर प्रसाद, गाजीपुर, सं०—१८०७ वि० की प्रति।[२]

रस-मंजरी, रच०—सनेहीराम, रच० सं०—१७१० वि०। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय, बलरामपुर (अवध)। २. राज्य-पुस्तकालय—प्रतापगढ़।[३]

रस-मंजरी, रच०—सुवंश, रच० सं०—१८६५ वि०। प्रा० स्था०—राजा श्रीप्रकाश सिंह, मल्लापुर : अवध।[४]

रस-मंजरी, रच०—हरि कवि, रच० सं०—१८८३ वि०।

रस-मंजरी, रच०—हरिवंश टंडन, रच० सं०—१७०९ वि०। प्रा० स्था०—देवकीनदनाचार्य पुस्तकालय, कामबन : भरतपुर।[५] २. अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान)।[६]

रस-मंजरी, रच०—हीरालाल, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—ठा० जगदंबा-प्रसाद सिंह, गुडवाँपुर, पो०—चिलबिलिया : बहराइच।

रस-मंजरी, रच०—तथा रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—अनूप संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर, राजस्थान, पु० सं०—८४ वि०।

रस-मंजूषा, रच०—रघुनाथ मिश्र, रच० सं०—१९९३ वि०।[७]

रस-मय, रच०—बेनी कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८१७ वि०।[८]

रस-मल्लिका, रच०—रामचरण साधु, अयोध्या, रच० सं०—१८४४ वि०।[९]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९२६-२८ ई०, पृ० ५३२।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ७०२।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९०९ ई०, पृ० ३७४।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९२६-२८ ई०, पृ० ७०८।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९३८-४० ई०, पृ० ४०।
६. यह पुस्तक संस्कृत "रस-मंजरी" का ब्रजभाषानुवाद है।
७. मि० बं० वि०—३, पृ० १३०४।
८. मि० बं० वि०—३, पृ० ७६५।
९. मि० बं० वि०—२, पृ० ८१८।

रस-मसाल, रच०—गिरिधर कवि बारावंकी, रच० सं०—१८४४ वि० । प्रा० स्था०— पं० रघुनाथराम, गायघाट, काशी ।[1]

रस-मसाल, रच०—गिरिधर कवि (दूसरे) प्रा० प्र० सं०—१९३४ वि० की ।

रस-महोदधि, रच०—तथा रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—अहमदाबाद : (गुजरात) वर्नाक्यूलर सोसायिटी : अहमदाबाद—भद्र, पु० सं०—३४३-(इ०) ।

रस-महोदधि, रच०—हरिकृष्णदास (कृष्णदास), रच० सं०—अज्ञात । प्रा०-स्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी ।

रस-माधुरी, रच०—कृष्ण भट्ट, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।

रस-मूल, रच०—लाल कवि (काशी के बंदीजन), रच० सं०—१८३३ वि० । प्रा० स्था०—कुंजबिहारीलाल वैश्य, रामनगर, काशी ।[2]

रस-मृगांक, रच०—महाराजकुमार जगतसिंह, द्युतिहा-गौंडा (अवध), रच०-सं०— १८६३ वि० की प्रति । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, भिनगा-बहराइच ।[3]

रस-मोदक, रच०—स्कंदगिरि, रच० सं०—१९०५ वि०, (छह उल्लासों में ।[4]

रस-मौर, रच० तथा रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—नवनीत चौबे पुस्तकालय, मथुरा, पु० सं०—६।१ ।

रस-रंग, रच०—कान्ह कवि पन्ना—बुंदेलखंड-वासी, रच० सं०—१८०४ वि० । प्रा० स्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१८९८ वि० की प्रति । २. अद्वैत चरण गोस्वामी वृंदावन (मथुरा) ।[5] इसका नाम—"रस-रंग-नायिका" भी मिलता है ।

रस-रंग, रच०—कवि 'ग्वाल' प्रसिद्ध मथुरावाले, रच० सं०—१९०४, वि० । प्रा०स्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९०४ की प्रति । २. कन्हैयालाल पोद्दार, मथुरा । ३. नवनीत-पुस्तकालय : मथुरा, पु० सं०—

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९०९-१६ ई०, पृ० १५२ ।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८१२ ।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९२३-२५ ई०, पृ० ७०२ ।
४. यह पुस्तक सं०—१९५७ वि० में वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई से प्रकाशित हुई है ।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३२ ई०, पृ० २०१ तथा—शिस०—१६ ।

५३।७। ४. कविराव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़) । ५. बा० जगन्नाथप्रसाद हेड एकाउटेंट, छतरपुर (म० भा०) । ६. गोविंद-गिल्लाभाई-पुस्तकालय, सीहौर (सौराष्ट्र) ।[1]

रस-रंजक, रच०—शिवनाथ, मकरंद नगर : फर्रुखाबाद, रच० सं०—१७६० वि०, प्रा० प्र० सं०—१८४६ वि० को। प्रा० स्था०—रामनारायण पटवारी हरपुरा, पो०—बारहद्वारी : एटा ।[2] २. ठा० विक्रमसिंह, टड़वा, पो०—इंदामऊ, उन्नाव ।[3] ३, ठा० रामनारायण सिंह, चाँदपुर, पो०—मिसरिख : सीतापुर (अवध) ।[4] ४, देवीप्रसाद शास्त्री, सकटिया, पो०—महोली, सीतापुर (अवध) । ५, पं० मन्नालाल तिवारी, गंगा-पुत्र, मिसरिख:सीतापुर (अवध) । ६. ठा०-रामभरोसेसिंह सुलतानपुर, पो०—राजपुर : उन्नाव । ७. ठा० नौनिहालसिंह, काँठा, उन्नाव ।[5] ८. हिं० सा० संमेलन, प्रयाग, सं०—१८४६ वि० की प्रति, पृ० सं०—१००-३ ।

रस-रत्न, रच०—पौहकर कवि (मैनपुरी), रच० सं०—१६१३ या १६७३ वि० । प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, रीवाँ (बघेलखड) ।[6] २. सरस्वती-भंडार : काशी संस्कृत विश्वविद्यालय, पु० सं०—४६६४ ।

रस-रत्न, रच०—भूपति कवि, पूर्णना०—"राजा गुरुदत्त सिंह अमेठी (अवध), रच०-सं०—१७८२ वि० । प्रा० स्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी । २. राज्य पुस्तकालय, भिनगा (बहराइच)[7] । ३, राज्य पुस्तकालय, अमेठी (अवध) ।

रस-रत्न, रच०—लेखराज, रच० स०—अज्ञात, प्रा० प्र०—सं०—१९४८ वि० की ।

रस-रत्न, रच०—सूरत मिश्र (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७६८ वि० । प्रा०स्था०—सरस्वती-भंडार : भींडर, उदयपुर (मेवाड़) । २. सरस्वती भंडार, उदयपुर

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ३७५ ।
२–४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स० १९२६ ई०, पृ० ६५०, स०—१९२९ ई०, पृ० ५७३ ।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ६५१ ।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १३६२ ।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ४०७ ।
७. ना० प्र० सभा काशी का 'विवरण-परिशिष्ट', पृ० २६३, सं०-२००७, वर्ष-५५, अंक—३ ।

(मेवाड़) । ३. कन्हैयालाल महापात्र, असनी, फतेहपुर[1] । इसका नाम—"रसरत्न-माला" भी मिलता है। रच० सं०--में अंतर है, यहाँ सं०—१८११ वि० लिखा है।

रस-रत्न (सटीक), रच०—सूरत मिश्र (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८०७ वि०। प्रा० स्था०—कविराव मोहनसिंह, उदयपुर-मेवाड़, सं०—१९२७ वि० की प्रति।

रस-रत्न-दीपिका, रच०—अल्लराज, रच० सं०—१८८१ वि०। प्रा० स्था०—मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र)। पु० सं०—१४२-१०।

रस-रत्न-मंजरी, रच०—प्रिया सखी, रच० सं०—अज्ञात।[2]

रस-रत्न-माला, रच०—सूरत मिश्र, रच० सं०—१८०७ वि०। प्रा० स्था०—कविराव मोहनसिंह, उदयपुर, मेवाड़। २. सरस्वती-भंडार, उदयपुर-मेवाड़, पु०सं०—३९९, सं०—१८७० वि० की प्रति। ३. राज्य पुस्तकालय, जोधपुर (राजस्थान)। ४. सेवकमल्ल, जोधपुर (राजस्थान)। ५. राज्य पुस्तकालय, दतिया (म० भा०)। ६. कन्हैयालाल महापात्र, असनी, फतेपुर। ७. पं० कृष्णबिहारी मिश्र, माडल-हाउस, लखनऊ।

विशेष : "ऊपर लिखे"—"रस-रत्न, रस-रत्न (सटीक) तथा रस-रत्न-माला" तीनों-ही नाम इस पुस्तक के मिलते हैं। मिलान करने पर भी ये तीनों पुस्तकें एक हैं। अत: रसरत्न का द्वितीय नाम—रस-रत्न-माला तो समझ में आ जाता है, पर रस-रत्न (सटीक) नहीं। हो सकता है, यह टीका स्वयं कवि की हो? रचना काल में भी अंतर है, रसरत्न का रचना-काल सं०—१७६८ वि० है तथा रस-रत्न-सटीक और रस-रत्न-माला का सं०—१८०७ वि० है यथा .. **"संबत सात अष्टादसै, ग्रंथ रच्यौ, बहु भाइ"**... इत्यादि'।

रस-रत्न-माला, रच०—आलम कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात। प्रा०स्था०—सूरजमल जालान : स्मृति भवन पुस्तकालय, कलकत्ता, पु० सं०—१८३२।

रस-रत्नाकर, रच०—गिरिधरदास (भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र के पिता), रच० सं०—१९ वीं शती। इसका नाम "रस-रत्नाकर—उत्तरार्ध नायिका-भेद" भी मिलता है।[3]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ४५४ तथा—शि स०—१२९
२. मि० बं० वि०—३, पृ० ९८४।
३. यह पुस्तक 'खड्ग-विलास प्रेस बाँकीपुर : पटना से प्रकाशित हो चुकी है।

रस-रत्नाकर, रच०—गुरुदत्तसिंह उपना०—"भूपति" कवि, रच० सं०—१८ वीं शती का अंत। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, अमेठी।

रस-रत्नाकर, रच०—देव कवि, (प्रसिद्ध), रच० सं—१८८१ वि०। प्रा०-स्था०—नागेश्वर प्रसाद, नूनारा, सीतापुर (अवध।[1]

रस-रत्नाकर, रच०—पहार सैयाद, रच० सं०—१८८२ वि०।[2]

रस-रत्नाकर, रच०—बाण कवि (प्रसिद्ध), रच० स०—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भडार : रामनगर, काशी।

रस-रत्नाकर, रच०—बारन कवि, रच० सं०—१७१२ वि०।[3]

रस-रत्नाकर, रच०—भौन कवि, रच० सं०—१८९१ वि०, लिपि-सं०—१९४१ वि०। प्रा० स्था०—ठा० मौलाबक्ससिंह, खजुरिया: बाराबंकी। २ पं० श्यामबिहारी मिश्र, गोलागंज, लखनऊ।[4] ३. पं० जुगलकिशोर मिश्र, गँधौली, सीतापुर (अवध)।[5]

रस-रत्नाकर, रच०—मदनसिंह, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—गोपाल-मंदिर काशी, पु० सं०—११२।

रस-रत्नाकर, रच०—मिश्र हृदयराम, रच० सं०—१७३१ वि०। इसका नाम—"रस-तरंगिणी" भी मिलता है (दे०—रस०...)। प्रा० स्था०—सरस्वती-भडार, संस्कृत-विश्वविद्यालय, काशी। पु० सं०—४६००२ अपूर्ण, तथा ४६४-४४ (दो प्रतियाँ)।

रस-रत्नाकर, रच०—रणधीरसिंह सिंगरामऊ, रच० सं०—१८९७ वि०।

रस-रत्नाकर, रच०—रूपलाल गोस्वामी, रच० सं०—७७७५ वि०।[6]

रस-रत्नाकर, रच०—लेखराज, रच० सं०—अज्ञात, प्रा०प्र० सं०—१९४८ वि० की।[7]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ४६९।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ९४१।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०४ ई० तथा मि० बं०-वि०—२, पृ० ४६०।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ३०३।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० ३० तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ८०९।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ६१५।
७. मि० बं० वि०—३, पृ० १०५९।

रस-रत्नाकर, रच०—सुखदेव कवि, 'शुकदेव मिश्र' नाम भी आपका मिलता है (दे०—"हिं० सा० का बृह० इति० : ना० प्र० सभा काशी, पृ० ७७), रच० सं०—१७२८ वि०। यह पुस्तक—लायट प्रेस काशी, में छप चुकी है। हस्त-लि०—प्रा० स्था०—ना० प्र० सभा काशी, सं०—१८९२ वि० की प्रति।

रस-रत्नाकर, रच०—सूरत मिश्र, रच० सं०—१७६० वि०। प्रा० स्था०—पं० कृष्ण-बिहारी मिश्र, माडल-हाउस, लखनऊ।[1] २. पं० कृष्णबिहारी मिश्र गँधौली, सीतापुर (अवध)। इसका नाम—"रस-रत्नाकर-माला" भी मिलता है।

रस-रत्नाकर, रच०—हरिवंश-ब्रह्म भट्ट, कालपी।

रस-रत्नाकर, रच०—हरीशंकर, रच० सं०—अज्ञात।

रस-रत्नाकर-माला, रच०—सूरत मिश्र दे०—"रस-रत्नाकर"।

रस-रत्नावली, रच०—मंडन कवि, रच०सं०–१७१६ वि०।[2] प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार : उदयपुर-मेवाड़, पु०सं०—४०८। २. ठा० रामभरोसे सिंह, सुलतानपुर, पो०–राजेपुर, उन्नाव, सं०—१८०७ वि० की प्र०। ३. पं० रघुबीरचरण मिश्र बिल्लौर, कानपुर। ४, याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी। ५. अ० भा० ब्र० सा०—मंडल मथुरा, पु० सं०—३३-४८। ६. पं० कृष्णाबिहारी मिश्र, माडल-हाउस लखनऊ। ७. पं० कृष्णाबिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर (अवध)। ८. ठा० विश्राम सिंह, धारानगरी, पो०—धौरहरा, सीतापुर (अवध)। सं०—१८४६ वि० की प्रति। ९. हि० सा० संमेलन, प्रयाग, सं०—१८४६ वि० की प्रति। १०. पं० गंगाप्रसाद शुक्ल, असनी : फतेपुर।[3] ११. बा० शिवपुरी, काश्मीरी-मुहल्ला लखनऊ।[4] १२, बा० बालकृष्णदास, चौखंभा, काशी–सं०—१७८८ वि० की प्रति। १३. सूचना—ना० प्र० सभा काशी, सं०—२०१७ वि०।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ७०४ तथा—हि० का० शा० का इतिहास, पृ० ३८।

२. हिं०सा० का बृहद् इतिहास (ना० प्र० सभा काशी, पृ० १७७) के अनुसार र० सं०—१७२० वि०।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ३००।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ४३५ तथा मि० बं० वि०—२ पृ० ४४३।

रस-रत्नावली, रच०—दलपति मिश्र, रच० सं०—१७०५ वि० ।

रस-रसांग-निर्णय, रच०—ब्रजेश कवि रीवाँ, रच० सं०—१९९३ वि० । यह विशाल ग्रंथ—तेरह तरंगों में विभक्त है !

रस-रहस्य, रच०—कुलपति मिश्र (प्रसिद्ध), रच०सं०—१७२७ वि० । प्रा० स्था०—रूपनारायण पांडेय, अयोध्या । २. कविराव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़) । ३ याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी तीन प्रतियाँ, एक-प्रति—सं० १७२७ वि० की । ४. ना० प्र० सभा काशी की प्रति, अपूर्ण । ५. बा० ब्रजरत्नदास बी० ए०, बुलानाला, काशी । ६. रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी । ७. सरस्वती-भंडार, रामनगर : काशी । ८. महादेवप्रसाद पांडेय, अध्या०—हाईस्कूल, प्रतापगढ़ (अवध) । ९. राज्य पुस्तकालय: प्रतापगढ़ (अवध) । १०. ला० सुखीराम-रामप्रसाद, कसेरा बाजार, रबाबगंज : बाराबंकी । ११. कन्हैयालाल महापात्र, असनी, फतेपुर । १२. बा० बब्बूलाल, गोरीगंज, रायबरेली । १३. बा०दिवाकरप्रसाद, उपरहटी, रीवाँ (बघेलखंड), सं०—१७२९ वि० की प्र० । १४. पं० कृष्णविहारी मिश्र, माडल-हाउस, लखनऊ ।[1] १५. पं० कृष्णबिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर (अवध) । १६. नवनीत पुस्तकालय, मथुरा, पु०सं०—४४-१७ । १७. अ०भा० ब्र० सा० मंडल, मथुरा, पु०सं०—८१५२ वि० की प्र० । १८. मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट), पु० सं०—१९७, सं०—१७९६ वि० की प्रति ।[2]

रस-रहस्य, रच०—दिनेश कवि टिकारीवाले, रच० सं०—१६५० वि० । प्रा० स्था०—मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया बिहार । प्रा० प्र० सं०—१९३७ वि० की । आपकी इस कृति की रचना सं०—१८८३ वि० भी मानी जाती है ।

रस-रसार्णव, रच०—सुखदेव मिश्र, रच० सं०—अज्ञात । प्राप्त प्र० सं—१९१० वि० की । प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, रीवाँ-राज्य, पु० सं—२७० ।

रस-राज, रच०—तोषनिधि, रच० सं०—१८५० वि०

रस-राज, रच०—मतिराम (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७०० वि०, लिपिसं०—१७-८० वि० । प्रा०स्था०—राज्य पुस्तकालय, अमेठी (अवध) । २. पं० रघुनाथप्रसाद चतुर्वेदी, इटावा । ३. सरस्वती-भंडार, उदयपुर-मेवाड़, दो प्रतियाँ, पु० सं०—४२३ (सं०—१७९७ वि०) तथा ८४३ (सं०—१८९५ वि० की) ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ३८९ ।

२. इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित ।

४, कविराव मोहनसिंह, उदयपुर-मेवाड़।[1] ५. श्रीनारायण, तरमुरारपुर, पो०—मोरावाँ, उन्नाव।[2] ५. सरस्वती-भंडार: काँकरौली-मेवाड़ दो प्रतियाँ, प्रति सं०—६०। १, ८२।५। ६, पं० काशीप्रसाद, काँटी—छतरपुर (म०प्र०), सं०—१८२२ वि० की प्रति। ७. याज्ञिक संग्रहालय: ना० प्र० सभा, काशी तीन-प्रतियाँ स०—१८१७, सं०—१८७१ तथा सं०—१८९१ वि० की। ८, रत्नाकर संग्रहालय: ना० प्र० सभा, काशी। ९. मन्नूलाल पुस्तकालय, गया (बिहार)। १०. गीता प्रेस, गोरखपुर, पु०सं०—४८०। ११. राज्य पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अवध)। १२. पं० परमात्माशरण, ट्योंगा, प्रतापगढ़-अवध। १३. हिं०सा० संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग दो प्रतियाँ, पु०सं०—१८० तथा २१७। १४. पुरातत्व-संग्रहालय-पुस्तकालय: प्रयाग, पु०सं०—१८७-५९ सं०—१८-८९ वि० की प्रति। १५. भंडारकर-इन्स्टीट्यूट-पुस्तकालय, पूना (महाराष्ट्र), पु० सं०—७४६। १६, पं० शिवलाल बाजपेयी, असनी, फतेपुर।[3] १७. ला० भागवतप्रसाद, सधुवापुर, बहराइच। १८. नवनीत पुस्तकालय, मथुरा पु० सं०—४४१०।१९. ब्र० सा० मंडल, मथुरा, पु० सं०—१५८-२४७। २०. पं० कृष्ण-बिहारी मिश्र, माडल हाउस, लखनऊ। २१. पं० कृष्णबिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर (अवध)। २२. ठा० जसकरनसिंह, बिजनौर, पो०—खास, लखनऊ। २३. ठा० शिवसिंह, रायमरदी, पो०—तंबोर, सीतापुर-अवध। २४. पं० शशि-शेखर शुक्ल, पंडित-पुरबा, सुलतानपुर: अवध। २५ राज कवि अबिकेश, रीवाँ (बघेलखंड)। २६. ठा० हरीहर बक्ससिंह, ममरेजापुर, पो०—बेनीपुर, हरदोई। २७. उस्मानियाँ: विश्वविद्यालय, हैदराबाद: दक्षिण। २८. पुरातत्व संग्रहालय, जामनगर: सौराष्ट्र। २९. मोटी हवेली, जामनगर-सौराष्ट्र, पु० सं—६०-६। ३०. सरस्वती-भंडार, काशी संस्कृत विश्वविद्यालय, चार प्रतियाँ, पु०—४६०७२, ४६ ११० (अपूर्ण), ४६५५७। ४६५६४।

रस-राज की टीका, रच०—प्रताप शाहि—बूँदी, रच० सं०—१८८८ या १८९६ वि०, टीना०—"रसराज-तिलक"। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, बूँदी, (राजस्थान)।

रस-राज की टीका, रच०—बख्तेश कबि, रच० सं०—१८२२ वि०।[4]

१. इस प्रति में रचना काल सं० १८८० वि० लिखा है।
२. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ४४८।
३. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ३०४।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ७३९ तथा ७७१।

रस-राज की टीका, रच०—राजा मुसाहिब—बिजावर (म० भा०), रच०-सं०—१९०२ वि० ।[१]

रस-राज की टीका, रच०—शत्रुजीतसिंह, रच० सं०—१८८१ वि० ।

रसराज-महोदधि, रच०—नारायणप्रसादसिंह मिश्र, (नारायणप्रसाद मिश्र) शाहजहाँपुर ।[२]

रस-रूप, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—कविराव मोहनसिंह, उदयपुर-मेवाड़ ।

रस-रूप, रच०—रूपजी ब्राह्मण मेड़ता (राजस्थान), रच० सं०—१७३९ वि० ।

रस-रूप, रच०—सरस्वतीचंद्र, रच० सं०—अज्ञात ।[३]

रस-लक्षण, रच०—सुखदेव मिश्र, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—गयाप्रसाद बक्सी, उपरहटी रीवाँ, बघेलखंड ।

रस-लतिका, रच०—केशवराव ।

रस-ललित, रच०—केशवराय बघेलखंडी, रच० सं०—१७३९ वि० । प्रा०-स्था०—शिवदुलारे दुबे, फतेपुर । इसका नाम—"रस-लतिका" तथा "रस-लालित्य" भी मिलते हैं ।

रस-लहरी, रच०—राधामोहन चौबें ।

रस-वल्ली, रच०—गणेश कवि, रच० सं०—१८१८ वि० । प्रा० स्था०—पं० शिवविहारीलाल, गोलागंज—लखनऊ ।[४] २. पं० श्यामबिहारी मिश्र, गोलागंज लखनऊ ।[५]

रस-विनोद, रच०—अहमद कवि, रच० सं०—१६७० वि० ।

रस-विनोद, रच०—कवि देवीदत्त, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—कनाड़ा-यूनिवर्सिटी, अमेरिका ।

रस-विनोद, रच०—कवि मुरलीधर, उपना०—'मुरली', रच० सं०—१७७०-वि० ।[६]

रस-विनोद, रच०—रामसहाय कायस्थ, रच० सं०—१८७३ वि० ।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ९९९ ।
२ मि० बं० वि०—३, पृ० १३१२ ।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३८ ई०, पृ० ७३ ।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० १४५ ।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ५३९ ।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ५७३ ।

रस-विनोद, रच०—रामसिंह, रच० सं०—१८६० वि० ।

रस-विलास, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—गुजरात : वर्नाक्यूलर सोसायिटी, भद्र अमदाबाद (गुजरात), प्रति सं०—२२१ ।

रस-विलास, रच०—गोपाल कवि लाहौरी, रच० सं०—१६४४ वि०, मीरजा-खाँ के लिए रचा गया । प्रा० स्था०—अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर (राजस्थान) ।

रस-विलास, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७८३ वि० । प्रा०-स्था०—याज्ञिक संग्रहालय: ना० प्र० सभा काशी, चार प्रतियाँ, प्रथम-द्वितीय-प्रति सं०—१८८० वि० तथा सं०—१८९७ वि० की । २. हिं० सा०-संमेलन, प्रयाग पु० सं०—१४० । ३. नवनीत पुस्तकालय, मथुरा, पु०-सं०— ८-१७ तथा ५३-२५ ।[1]

रस-विलास, रच०—बेनो कवि (प्रसिद्ध), रच० सं०—१८४९ वि०, लिपि सं०—१९५३ वि० । प्रा० स्था०—पं० जुगलकिशोर मिश्र, गँधौली—सीतापुर (अवध)।[2] २. पं० विपिन-बिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर (अवध) ।[3]

रस-विलास, रच०—भूदेव, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—मोटी-हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र), पु० सं०—४५-१७ ।

रस-विलास, रच०—भूषण, रच० सं०—१७३८ वि० ।

रस-विलास, रच०—बलभद्र कवि, रच० सं०—१६४० वि० । प्रा० स्था०—ना० प्र० सभा-पुस्तकालय, काशी ।

रस-विलास, रच०—चंदवार वासी नंदलालात्मज "कवि पीतांबर," रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—सिंगी, कृष्णसिंहजी रईस—गोवर्धन (मथुरा) । यह कृति सं०—१९३४ वि० में लिखी गयी "संग्रह-सार" नाम की एक संग्रहात्मकपुस्तक में है ।

रस-विलास, रच०—मंडन कवि, रच० सं०—१७१६ वि० ।[4]

रस-विलास, रच०—माधवसिंह, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—कविराव मोहनसिंह, उदयपुर-मेवाड़ ।

१ यह 'भारत-जीवन' प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है ।

२-३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९१२ ई०, पृ० २८, स० १९२३ ई०, पृ० २७८ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ८०६, ८६३ ।

४. मि० बं० वि०—२, पृ० ४४३ ।

रस-विलास, रच०—रायकवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार उदयपुर-मेवाड़, पु० सं०—९९ ।

रस-विलास, रच०—बिहारी, उपना०—'भोजराज', रच० सं०—१८८३-वि० ।[1]

रस-विवेक, रच०—बलराम कवि, रच० सं०—१७३३ वि० ।

रस-विहार, रच०—ध्रुवदास (प्रसिद्ध) ।

रस-वृष्टि, रच०—कवींद्र—उदयनाथ कवींद्र, रच० सं०—१८०४ विं० । प्रा०-स्था०—पं० अवधेश पांडेय, खमसरिया, बहाराइच (अवध) ।[2] इसे "रस-वृत्ति" भी कहते हैं ।

रस-वृष्टि, रच०—शिवनाथ दुबे पबायाँ, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० प्र०—सं०—१९४० वि० की ।[3] ना० प्र० सभा काशी के—'हिं० सा० का बृ० इतिहास" में रच० सं०—१८२८ वि० लिखा है (दे० पृ०—१७८) ।

रस-शिरोमणि, रच०—मनमोहन कवि, रच० सं०—अज्ञात ।[4]

रस-शिरोमणि, रच०—यशवंतसिंह ।

रस-शिरोमणि, रच०—महाराज रामसिंह, नरबरगढ़-नरेश, रच० सं०—१७९५-वि० । कोई इन्हें—"ग्वालियर-नरेश" भी मानता है । प्रा० स्था०—रत्नाकर-संग्रहालय: ना० प्र० सभा काशी । २. गो० मनोहरलालजी, वृंदावन (मथुरा) ।[5] ३. सरस्वती-भंडार, उदयपुर, मेवाड़, सं०—१८५० वि० की प्र०, पु० सं०—३३७ । ४. पं० भालचंद्र मिश्र, सीतलान-टोला, पो०—मलीहाबाद : लखनऊ ।[6]

रस-सिंगार, रच०—उदयचंद भंडारी जोधपुर (राजस्थान); रच० सं०—१८९० वि० ।[7]

रस-शृंगार, रच०—भारती चंद, उपना०—'भारती' ओड़छा नरेश, (म० भा०)

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७३ ।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १३६१ ।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ७५३ ।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० ९९४ ।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०-१९१२ ई०, पृ० १८० ।
६. खोज रिपोर्टः ना० प्र० सभा काशी, स०-१९२६ ई०, पृ० ५७७ तथा मि०-बं० वि०—२, पृ० ७९९ ।
७. मि० बं० वि—३, पृ० १०६५ ।

रच० सं०—१८३२ वि० । प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, ओड़छा, (म० भा०)।[१]

रस-शृंगार, रच०—भैया त्रिलोकीनाथ सिंह, उपना०—भारती, रच० सं०—१८६१-वि० । प्रा० स्था०—सरस्वती भंडार, अयोध्या-राज्य ।

रस-शृंगार-समुद्र, रच०—बेनीप्रसाद, रच० सं०—१७५५ वि० । प्रा० स्था०—पुरुषोत्तमदास कंठी-मालावाले, विश्रामघाट-बाजार, मथुरा ।[२] हि० सा० का बृ० इतिहास खंड-६ ना० प्र० सभा, काशी ने इसका रच०—सं—२७६५ वि० लिखा है, दे०—पृ० १७७ ।

रस-संग्रह, रच०—मुरलीधर मिश्र, आगरा-निवासी, रच० सं०—१८१९ वि० । प्रा० स्था०—यदुनाथबक्स सिंह, हरीहरपुरा, बहराइच ।[३] २. राज्य-पुस्तकालय-भिनगा (अवध) ।[४] ३. लाला रामाधीन वैद्य, बाराबंकी ।

रस-समुद्र, रच०—चैनराम, कान्यकुब्ज-ब्राह्मण, जयपुर (राजस्थान), रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था—राज्य पुस्तकालय, जयपुर (रा० स्था०) । इनका नाम—'चैनराय' भी मिलता है ।

रस-समुद्र, रच०—जगन्नाथ कवि, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—नवनीत-पुस्तकालय, मथुरा ।

रस-समुद्र, रच०—कवि 'परसाद', रच० सं०—१७९५ वि०, उदयपुर-नरेश 'जगतसिंह' के आश्रित ।

रस-समुद्र, रच०—मुरलीधर मिश्र (चतुर्वेदी-अगरा), रच० सं०—१८१९-वि०, माथुर ब्राह्मण मथुरा के ।

रस-समुद्र, रच०—मडन भट्ट वैलंग-जयपुर (राजस्थान), रच० सं०—१८७० वि० ।

रस-सरस, रच०—कवि शिवदास राय, रच० सं०—१७९४ वि० । प्रा०-स्था०—सरस्वती-भंडार : उदयपुर, मेवाड़ । दो प्रतियाँ, पु० सं०—३८४ सं०—१८१९ वि०, की तथा पु० सं०—४१७ सं०—१७९५ वि० की ।

रस-सरस, रच०—अज्ञात, रच० सं०—अज्ञात । प्रा० स्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८११
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० ९७ तथा—मि० बं० वि०—२, पृ० ५६४ ।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १०६५, सं०—१८६५ वि० की प्रति । ४. यह सं०—१८९३ वि० की प्रति है ।

रस-सरस, रच०—सूरत मिश्र (प्रसिद्ध), रच० सं०—१९८४ वि०। प्रा०-स्था०—राज्य पुस्तकालय, भरतपुर—राजस्थान।

रस-सरोज, रच०—दामोदर कवि, रच० सं०—१८८८ वि०, महाराष्ट्र : ओड़छा-निवासी।[१] पूरा नाम—दामोदर देव भट्टाचार्य। प्रा० स्था०—जयकृष्णदेव, बी० ए०, टीकमगढ़—मध्यभारत।

रस-सागर, रच०—गोपलराम बंदीजन, वृंदावन, रच० सं०—१७३६ वि०। प्रा० स्था०—ला० बिहारीदास वैश्य, वृंदावन-मथुरा।[२] २. हिं० सा०-संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग, सं०—१७५९ वि० की प्रति।*

रस-सागर, रच०—गोपालराय भाट, वृंदावन—मथुरा।* रच० सं० १८८७ वि०। प्रा० स्था०—ला० गोपीनाथ वैश्य, अठखंबा वृंदावन (मथुरा)।

रस-सागर, रच०—बलवीर कवि कन्नौज, 'रच० सं०—१७५९ वि०। प्रा० स्था०—पं० रामभजन मिश्र, चौगाँव, पो०—मलवाँ, हरदोई।[३] २. पं० मन्नीलाल तिवारी गंगापुत्र, मिसरिक-सीतापुर (अवध)।[४] ३. ठा० मन्नासिंह सरबतपुर पो०—कुतुबनगर : सीतापुर-(अवध)[५]। ४ पं० गंगादीन कवि, समरहा घाटमपुर : उन्नाव।[६]

रस-सागर, रच०—रामकवि सिरमोर के राजा के आश्रित, रच० सं०—१७२०-वि० के पास।

रस-सागर, रच०—शिवराज महापात्र, राजा 'मझौली' के आश्रित, रच० सं०—१८६६ वि०।

रस-सागर, रच०—श्रीनिवास, रच सं०—१७५० वि०। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, काशी : विश्वविद्यालय, पु० सं०—४६०५४।[७]

रस-सागर, रच०—श्रीपति कवि, रच० सं०—१७७० वि०।[८]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ९४७।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ४९९ तथा ३, पृ० १०८४।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई० पृ० १२०।
४-५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई० पृ० १४४।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ११९। इसका द्वितीय नाम "दंपति-विलास" भी मिलता है।
,, ये दोनों पुस्तक एक हैं, पर रचना-काल विभिन्न हैं।
७. हिं० सा० का बृह० इतिहास : ना० प्र० सभा काशी, पृ० १७७।
८. मि० बं० वि०—२, पृ० ५७८।

रस-सागर, रच०—रामबकस, उपना०--'रामकवि' रच० सं०—अज्ञात ।'[१]

रस-सागर, रच०—हज़रत अब्दुल्ला साहिब। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, काशी विश्वविद्यालय, पु० सं०—४६४३० ।

रस-सारंग, रच०—भिखारीदास (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७९१ वि०।[२]

रस-सार, रच०—भिखारीदास (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७९१ वि० । प्रा०-स्था०—पं० भगीरथप्रसाद, उसका : प्रतापगढ़, अवध।[३] २, राज्य पुस्तकालय, प्रतापगढ़-अवध ।[४]

रस-सार, रच०—सैयद पहार, रच० सं—१८८८ वि० ।[५]

रस-सार, रच०—श्रीपति, रच० सं०—१९८२ वि० ।

रस-सारांश, रच०—भिखारीदास (प्रसिद्ध), रच० सं०—१७९१ वि० । प्रा०-स्था०—राज्य-पुस्तकालय, प्रतापगढ़-अवध, सं०—१९१६ वि० की प्रति । २. पं० भागीरथप्रसाद, उसका—प्रतापगढ़:अवध। ३, ललिताप्रसाद पांडे सदहा, पो०—टेंडी गारापुर : प्रतापगढ़-अवध । ४. चक्रपाल त्रिपाठी, राजा तारा, पो०—लालगंज, प्रतापगढ़, अवध । ५. ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९११ वि० की प्रति खंडित । ६. सरस्वती-भंडार, रामनगर काशी । ७. हिं० सा०-संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग । ८. विपिनबिहारी मिश्र गँधौली, सीतापुर, अवध सं०—१८८५ वि० की प्रति ।[६] ९. ठा० महावीरप्रसाद सिंह, तालुकेदार, कोठारा कलाँ, सुलतापुर-अवध ।[७]

रस-सारिणी, रच०—मातादीन शुक्ल, रच०सं०—१९०३ वि० । प्रा० स्था०—कुवेरदत्त शुक्ल, सुकुलपुरवा, पो०—अजगरा, प्रतापगढ़, अवध ।[८] २. रामदुलारे दुबे, रामनगर, पो०—औरंगाबाद, सीतापुर, अवध ।

रस-सिंधु, रच०—कृष्ण कवि भट्ट-गोकुल--मथुरा, रच० सं०—१८९६ वि० ।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १००१ ।

२. इसका नाम "रस-सारांश" भी मिलता है।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० १७३ ।

४. इसका नाम भी "रस-सारांश" मिलता है ।

५. मि० बं० वि०—२, पृ० ९४१ ।

६-७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ३१७ । यह प्रतापगढ़ (अवध) के "गुलशने अहमदी" प्रेस, लीथो में छपा है।

८. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ४४३ तथा मि० बं० वि०—३, पृ० १२४१ ।

प्रा० स्था०—रत्नाकर : संग्रहालय—ना० प्र० सभा काशी। २, नवनीत-पुस्तकालय मथुरा, पु० सं०—९-१०। इसका नाम—'रससिंधु-प्रकाश' भी मिलता है।

रस-सिंधु, रच०—बल्देव कवि-मथुरा, रच०सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—नवनीत-पुस्तकालय—मथुरा।

रस-सिंधु विलास, रच०—कृष्णलाल कवि, रच० सं०—अज्ञात।

रस-सिद्धांत रच०—चिंतामणि, उपना०—रसिकदास, रच० सं०—अज्ञात। प्रा०-स्था०—अ० भा० ब्र० सा० मंडल मथुरा, पु०सं०—१४१-२२३।

रसानंद, रच०—ब्रजेंद्र भरतपुर—राजस्थान, रच० सं०—१८९१ वि०। प्रा० स्था०—राज्य-पुस्तकालय भरतपुर : राजस्थान।

रसानंदघन, रच०—रसानंद भट्ट, रच० सं०—१८९९ वि०।[१]

रसानंद-लहरी, रच०—देव कवि (प्रथम), रच० सं०—१६६१ वि०।[२] प्रा०-स्था०—ला० कौशलकिशोर कायस्थ, लालपुरा : प्रतापगढ़।

रसानुराग, रच०—प्रयागीलाल, उपना०—'तीर्थराज' टीकमगढ़, रच० सं०—१९३० वि०। प्रा०स्था०—राज्य-पुस्तकालय, चरखारी, टीकमगढ़(म०भा०)।[३]

रसार्णव, रच०—सुखदेव मिश्र, रच० सं०—१७३० वि०। प्रा०स्था०—गयाप्रसाद बक्सी, उपरहटी, रीवाँ-राज्य।[४]

रसाल-रस, रच०—हरिप्रसाद भट्ट बिलग्रामी, रच० सं०—१८४५ वि०।

रसालै (रसालय), रच०—कवि लालमनि, रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—दयाशंकर मिश्र, गुरुटोला, आजमगढ़।

रसिक-आराम, रच०—सतीदास व्यास, रच० सं०—१७३३ वि०। प्रा० स्था०—अभय-जैन : ग्रंथागार बीकानेर, राजस्थान। २ नाहटा-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान), गु० नं०—७२।

रसिक-गोविंद, रच०—गोविंद नाटानी जयपुर : राजस्थान, रच० सं०—अज्ञात, प्रा० स्था०—पब्लिक पुस्तकालय, जयपुर : राजस्थान।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०७३।

२. यह पुस्तक 'कालाकाँकर' में एक दफे देखने में आयी थी, बाद में नहीं। डायरी पानी में भींग जाने के कारण स्थान-नाम अस्पष्ट है, "लाल गोपालगंज" भी हो सकता है तथा "लालगंज" भी।

३. मि० बं० वि०—२, पृ० ६८१-७५३ तथा—३, पृ० १२३१।

४. नागरी प्रचारिणी सभा : काशी से प्रकाशित।

रसिक-गोविंदानंदघन, रच०—रसिक गोविंद, रच० सं०—१८५८ वि०। रस, नायिका-भेद, अलंकार, गुण तथा काव्य-दोषों का वर्णन।[1]

रसिक-चमन, रच०—अरिसिंह—महाराणा-उदयपुर वाले राजसिंह के द्वितीय पुत्र, रच० सं०—१८१७ वि०। प्रा० स्था—सरस्वती-भंडार, उदयपुर : मेवाड़।

रसिक-प्रमोद, रच०—जयब्रह्म भट्ट, रच० सं०—अज्ञात।

रसिक-प्रिया (मूल), रच०—आचार्य-केशव (केशवदास-प्रसिद्ध), रच० सं०—१५४८ वि०, अन्य मतानुसार सं०—१६४९ वि०। सबसे प्राचीन प्राप्त-प्रति सं०—१७०४ वि० की। प्रा० स्था०—सेठ चंद्रशंकर, अनूपशहर : उत्तर प्रदेश।[2] २. वर्नाक्यूलर सोसायिटी, भद्र, अमदावाद, (दो प्रतियाँ) पु०सं०—१२६८ तथा १२७०। ३. हार्वर्ड-यूनिवर्सिटी, अमरीका (यूरोप) पु० सं०—३०२।[3] ४. राज्य पुस्तकालय—अमेठी : अवध।[4] ५. पं० शंभुनाथ, बबुरी : अलीगंज—सीतापुर।[5] ६. सरस्वती-भंडार उदयपुर, मेवाड़—चौदह प्रतियाँ—यथा: पु० स०—७९—सं० १७९६ वि० की।[6] पु० सं० ८०, सं०—१७१०—वि० की। सं०—१८५३ वि० की 'खंडित', पु० सं०—२१०। सं०—१८१३ वि० की, पु० सं०—२१३। सं०—१८६० वि० की, पु० सं०—२४५। सं०–१७९४ वि० की, पु० सं०—३७३। सं०—१७१८ वि० की, पु० सं०—५५३। सं०–१७०४ वि० की, पु० सं०—५७०। सं०—१७३२ वि० की, पु० सं०—५९३। सं०—१९२६ वि० की, पु० सं०—८३०।[7] सं०—१९३३ वि० की, पु० सं०—८३१। सं०—१८७३ वि० की, पु०सं०—९४५ तथा ९५५ इत्यादि। ७. सज्जनवाणी

---

१. यह पुस्तक लखनऊ के 'नवलकिशोर' प्रेस से प्रकाशित हो चुकी है।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स० १९१७ ई०, पृ० २२१।
३. अमरीका में निम्नलिखित प्रतियाँ और है, जैसे—हार्वर्ड यूनिवर्सिटी-लायब्रेरी "केंब्रिज", चार प्रतियाँ—पु० सं०—११६२, १६८९, १७०७ सं०—१७४३ वि० की प्रति तथा १९८५ वि० की। २. न्यूयार्क पब्लिक लायब्रेरी, सं०—१७७९ वि० की प्रति। ३. मेट्रोपोलिटन म्यूजियम आव् आर्ट : न्यूयार्क सिटी।
४. यह पुस्तक अब "हिं० सा० संमेलन" में आ गयी है।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्रा० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ३६९ तथा स० १९२९ ई०, पृ० ३८८।
६. सरस्वती भंडार उदयपुर में इस पुस्तक की कई महत्वपूर्ण प्रतियाँ हैं।
७. यह प्रति 'सटीक' है, टीका है—'सुरत मिश्र' की।

विलास-पुस्तकालय, उदयपुर (मेवाड़) सं०--१७०४ वि० की प्रति। ८. सूरजमल जालान-पुस्तकालय, कलकत्ता. पु० सं०—१०६०। ९. हनुमान-पुस्तकालय-सलकिया (हबड़ा), कलकत्ता, पु० सं०—४५४ तथा ९५७६। १०. सरस्वती-भंडार : कांकरौली (मेवाड़) आठ प्रतियाँ, पु० सं०—५३।१०, ६२-१०, ७५।२, ७५ ४,—५, १२, ८३। १, ८४। ३, : ८। ११. याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी—पाँच प्रतियाँ, जिनमें एक प्रति सं०—१८९८ वि० की। १२. बा० ब्रजरत्नदास, बी० ए० बुलानाला, काशी। १३. बा० बालकृष्णदास, भारतेंदु-भवन, चौखंभा, काशी दो प्रतियाँ। इनमें एक सं०—१७२२ वि० की तथा द्वितीय खंडित। १४. सरस्वती-भंडार : रामनगर—काशी, तीन प्रतियाँ, जिनमें एक प्रति सं०—१८१४ वि० की। १५. सरस्वती-भवन : संस्कृत-विश्वविद्यालय, काशी, छह प्रतियाँ, यथा—पु० सं०—२, ७५-सं०—१७३९ वि० की प्रति। २—पु० सं०—३, ९८, सं०—१८२१ वि० की प्रति ३—पु० सं०—१०, क्रम सं० २५०७। बं० सं०—१३७, ४—बं० सं०—६७, पु० सं०—६२८, ५, पु० सं० ८०३९ (क्रमसं०), ६—पु०सं० —२८७४ (अपूर्ण)। १६. ना० प्र० सभा काशी, सात प्रतियाँ, जैसे—१, पु० सं०—९१-२९ सं०—१७७४ वि० की प्रति—"बिहारी सतसई" के संग। २—पु० सं०—११-३०, सं०—१८१६ वि० की खंडित, ३—पु० सं०—५३४-३८२ पूर्ण, ४—पु० सं०—५५२, ३९७-खंडित प्रति, सं०—१७८९ वि० की ५—पु०सं०–१५६४-९१३, खंडित सं०–१७८७ वि० की, ६—पु०सं०—१२०१-७८५पूर्ण, ७—पु०सं०—२७०२-१६-२० खंडित। १७. सरस्वती-भंडार : काशी-संस्कृत-विश्वविद्यालय। सात (७) प्रतियाँ, यथा—४६१७४, ४६२२९, ४६२५०, ४६२९९ (सटीक, टीका० —सरदार कवि), ४६४९२, ४६५५६, ४६६२४। १८. श्रीदेवकीनंदनाचार्य-पुस्तकालय, कामबन (भरतपुर-राजस्थान)। १९. मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया (बिहार) दो प्रतियाँ, प्रथम सं०—१८६७ वि० की तथा द्वितीय सं०-१९०६ वि० की। २०. गीताप्रेस-पुस्तकालय, गोरखपुर, पु० सं०—१९९८। २१. भुवनेश्वरी-पीठ-पुस्तकालय : गोंडल (सौराष्ट्र), चार प्रतियाँ प्रथम सं०—१७१२ वि० की तथा द्वितीय सं०—१७४८ वि० की। २२. पं० महाबीर-प्रसाद दीक्षित, चदनियाँ : फतेपुर (उ० प्र०)।[1] २३. मोटी हवेली, जामनगर

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२०-२३ ई०, पृ० २७५ तथा ८२०।

(सौराष्ट्र) सात-प्रतियाँ, पु०सं० यथा—२२६।६, २४२।१०, १५४। ११, १९४। १, १९६।८, ६९।४, ५।२४. पुरातत्त्व-संग्रहालय, जामनगर (सौराष्ट्र)। २५. भंडारकर इन्स्टीट्यूट, पूना (महाराष्ट्र) दो प्रतियाँ, पु०सं०—४१८, सं०—१७३९ वि० की तथा—पु० सं०—१४६२। २६. उलफतराय बसायकनवीस, फतहाबाद (आगरा)। २७. हिं० सा० संमेलन-पुस्तकालय, प्रयाग। २८. पुरातत्त्व संग्रहालय-पुस्तकालय, प्रयाग, पु० सं०—२०८ १। २९. आनंद-भवन-पुस्तकालय, बिसवाँ : सीतापुर (अवध)। ३०. अनूप संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर (राजस्थान), दो प्रतियाँ, सं०—१७२४ वि० की। ३१. बालमुकुंद चतुर्वेदी, मानिकचौक, मथुरा, सं०—१९३४ वि० की। ३२. ब्रज-साहित्य-मंडल, मथुरा, पु० सं०—१२। १८१। ३३. नवनीत पुस्तकालय, मथुरा, पु० सं०—१२। ४, १३। ४, ४४, ११। ३४. राजकवि 'अंबकेश' उपरहटी, रीवाँ-राज्य, सं०—१९०७ वि० की प्र०। ३५. उस्मानियाँ-विश्वविद्यालय, हैदराबाद (दक्षिण), दो प्रतियाँ। ३६. सरस्वती-भंडार, भींडर (उदयपुर मेवाड़), सं०—१८८३ वि० की प्र०। ३७. ना० प्र० सभा काशी, अपूर्ण-प्रति।[1] ३८ पं० काशीप्रसाद, काँटी—छतरपुर राज्य (म० प्र०)।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—ईश्वर कवि धौलपुर (राजस्थान), सं०—१९६१ वि० की प्र०।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—काशिम खाँ, रच० सं०—१६४८ वि०।[2]

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—कुशलधीर जैन, रच० सं०—१७२७ वि०, टी० नाम—अज्ञात। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर, मेवाड़, पु०-सं०—७९।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—महाराजकुमार जगतसिंह, द्युतिहा-गोंडा, रच० सं०—अज्ञात. टी० ना०—'जगत-विलास', लिपि—सं०—१८९६-वि०। प्रा० स्था०—राज्य पुस्तकालय, भिनगा, बहराइच।[3] २, राजा श्रीप्रकाशसिंह, मल्लापुर-सीतापुर (अवध) तीन-प्रतियाँ। ३

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—नारायण कवि काशी, रच० सं०—१९०३ वि०।

१. नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० २३५।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ तथा १९२६ ई०, पृ०-६९९ और ३२०।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—याकूब खाँ, रच० सं०—१७७५ वि०,टी० ना०—'रसग्राहक चंद्रिका'।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—यूसुफ़ खाँ, रच० सं०—१७९१ वि०, टी०ना०—"रसिक-प्रिया कौ तिलक"।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—सरदार कवि काशी-रामनगर, रच० सं०—१९०३ वि०, टी० नाम०—"सुख-विलासिका"। प्रा० स्था०—सरस्वती-भंडार, रामनगर-राज्य, काशी।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—सूरत मिश्र, रच० सं०—१७७६ वि०। प्रा०स्था०—पं० महावीरप्रसाद मिश्र, गुरुटोला-आजमगढ़। २, हिं० सा० संमेलन पुस्तकालय, प्रयाग—दो-प्रतियाँ। ३, "रस-ग्राहक चंद्रिका": प्रा० स्था०—लक्ष्मीशंकर व्यास, दंडपाणि-गली काशी। ४. राज्य-पुस्तकालय : चरखारी (म०भा०) सं०—१८६९ वि० की प्रति। ५. ठा० बलवंतसिंह, बहराइच।[1] ६. ना० प्र० सभा, काशी, पु० सं०—६२५, ४४७, सं०—१७९१ वि० की। "जोरावर-प्रकाश": प्रा० स्था०—ला० विद्याधर होरीपुरा-दतिया (म०-भा०), सं०—१८८७ वि० की प्रति। २. ला० रमनलाल हीराचंद, कोसी-कलाँ : मथुरा सं०—१९१८ वि० की प्रति।[2] ३. सज्जनवाणी-विलास पुस्तकालय, उदयपुर (मेवाड़)। ४. राव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़), सं०—१९२६ वि० की प्रति।। ५ सरस्वती-भंडार उदयपुर (मेवाड़) पु० सं०—८३०, सं०— १९२६ वि० की प्र०। ६, ठा० हनुमानसिंह, गोधनी, पो०—जैतपुर : उन्नाव।[3] **विशेष :** 'सूरत मिश्र' की टीका के दो नाम—"जोरावर-प्रकाश" तथा "रस-ग्राहक-चंद्रिका" मिलते हैं। जोरावर-प्रकाश का रचना काल—सं० १८०० वि० तथा रस-ग्राहक—चंद्रिका का रच० सं०—१८४६ वि०। जोराबर-प्रकाश—टीका—'लाल कवि' के नाम से भी मिलती है, उसका रच० सं० भी ऊपर दिये गये अनुसार ही है। अत: समझ में नहीं आता कि "जोरावर-प्रकाश" लाल कवि-कृत है? या सूरत मिश्र कृत। दोनों टीका—जोरावर-प्रकाश तथा रस-ग्राहक-चंद्रिका के मिलाने पर भी यह भ्रम नहीं मिटता....दोनों एक-ही है, केवल नामों की भिन्नता है।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ७०२।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० ३७८।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ७०१।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—लाल कवि, रच० सं०—१८०० वि०, टी० ना० —"जोराबर-प्रकाश"।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—हरिचरणदास, रच० सं०—१८४० वि०।

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—कुशललाभ, रच० सं०—१६४९ वि०, गुजराती-टीका, प्रास्था०—फार्वर्स-पुस्तकालय, वंबई, पृ० सं०—२२। **विशेष :** "रसिक-प्रिया की टीका" एक "कुशलधीर" जैन साधू की भी मिलती है, अतः दोनों एक तो नहीं?

रसिक-प्रिया की टीका, रच०—समर्थ कवि, रच० सं०—१७५५ वि०, "संस्कृत-टीका"। प्रास्था०—दान-सागर-भंडार-पुस्तकालय, बीकानेर (राज्यस्थान)। पुस्तक-प्रारंभ, यथा :

"प्रायशोब्रजभाषायाः केनापि न कृतापुरा।
सुसंस्कृतमयी टीका—"सुगमार्थ-प्रबोधिनी"॥"

मूल :

"सुर-भाषा तें अधिक है, ब्रजभाषा सों हेत।
ब्रज-भूषन जाकों सदाँ, मुख-भूषन करि लेत॥"

अनुवाद :

सुर-भाषा—संस्कृत-भाषायाः सकाशात् ब्रजभाषा अधिकास्ति—ब्रज-भूषण कृष्णस्त स्वमुखं भूषयति यस्याः पठनात्मुखं शोभाभवतीत्यर्थः।"

रसिक-प्रिया की टीका, रच० तथा रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—गीता-प्रेस, गोरखपुर-पुस्तकालय, पृ० सं०—४३६।

रसिक-बसीकरन, रच०— रघुनाथ कायस्थ चरखारी, रच० सं०—१९३३ वि०।[1]

रसिक-बसीकर, रच०—खूबचंद राठ हमीरपुर, उपना०—'रसीले' तथा 'रसेश', रच० सं० १९२० वि०।

रसिक-बोध, रच०—सीताराम कवि, रच० सं०—१९२२ वि०। **प्रास्था०**—रामप्रताप सिंह चिलौली, रायबरेली, अवध।[2]

रसिक-मंजरी, रच०—हरिवंश (संस्कृत—रसमंजरी का अनुवाद), रच० सं०—अज्ञात। प्रा० स्था०—जयचंद-ग्रंथ-भंडार; बीकानेर (राजस्थान)। २. विनय-सागर-संग्रहालय : बीकानेर (राजस्थान)।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १२३३।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९३५ ई०, पृ० २४९।

रसिक-मन-रंजनी, रच०—तथा रच० सं०—अज्ञात। प्रास्था०—विट्ठलदास-पुस्तकालय, काशी (गोपाल मंदिर के पास)।

रसिक-मनोहर, रच०—रघुनाथ कायस्थ चरखारी, रच० सं०—अज्ञात।

रसिक-मोहन, रच०—रघुनाथ कवि (बंदीजन), रच० सं०—१८०२ वि०। प्रास्था०—कनाडा-यूनिवर्सिटी : अमरीका। पृ० सं०—३०३।[१]

रसिक-रंजनी, रच०—नवलसिंह कायस्थ, रच० सं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, टीकमगढ़ (म० भा०)।

रसिक-रसायन, रच०—कवि पुरुषोत्तम, रच० सं०—अज्ञात। प्रास्था०—श्रीपाल वैद्य, खजुरिया, पो०—गौरीगंज : सुलतानपुर।

रसिक-रसाल, रच०—कुमार मणि भट्ट, सागर : टीकमगढ़-बासी, रच० सं०—१८०३ वि०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, टीकमगढ़ (म० भा०)। २. पं० कंठमणि शास्त्री, काँकरौली (मेवाड़)।[२]

रसिक-विनोद, रच०—कालिदास त्रिवेदी, रच० सं०—अज्ञात। प्रास्था०—काँकरौली—सरस्वती भंडार (मेवाड़), पृ० सं०—६०। ७।

रसिक-विनोद, रच०—खड्ग बहादुर मल्ल, रच० सं०—अज्ञात।[३]

रसिक-विनोद, रच०—चंद्रशेखर बाजपेयी, प्राप्त-पु०—सं० १९०३ वि० की (भरत-मतानुसार नवरस तथा नायिका-भेद वर्णन)।[४]

रसिक-विनोद, रच०—जवाहर दत्त, रच० सं०—अज्ञात।

रसिक-विनोद, रच०—महाराणा सज्जनसिंह उदयपुर, रच० सं०—अज्ञात। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार उदयपुर, मेवाड़, सं० १९३५ वि० की प्रति, पृ० सं०—८०८।

रसिक-विनोद, रच०—सुंदर रसिक, रच० सं०—अज्ञात।

रसिक-विनोद, रच०—हरिवंश, रच० सं०—१८३२ वि०। प्रास्था०—ठा० जवाहरसिंह, खेलई, पो०—मुरादाबाद, हरदोई। २. ला० शिवराम पटवारी, बिसनपुर, पो०—जलेसर : आगरा (एटा)। ३. पं० शिवदयाल ब्रह्मभट्ट, मुहम्मदपुर, पो०—बेनीगंज : उन्नाव। ४. अमरनाथ, दातापुर, पो०—मिसरिक : सीतापुर (अवध)। ५. सेठ गोविंदराम-भगतराम, अमलिहा :

१. नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित प्रति।
२. यह ग्रंथ "काँकरौली" (मेवाड़) से प्रकाशित हुआ है।
३. यह "भारत-जीवन" प्रेस काशी से प्रकाशित हुआ है।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १२२८।

उन्नाव ।[२] ६. ठा० शिवसिंह, हिम्मतपुर, पो०—सिधौली, सीतापुर (अवध) । ७. हिं०सा० सम्मेलन-पुस्तकालय, प्रयाग, पु० सं०१००।२, सं०—१८३२ वि० की प्रति ।

रसिक-विनोद, रच०—कालीदत्त, उना—"कवि नागर", रसं०—अज्ञात, प्राप्र०—सं०—१९२१ वि० की । प्रास्था०—रघुवरदयाल मिश्र : इटावा । २. ला०-कालूमल, गौरया कलाँ,[२] पो०—फतेपुर : उन्नाव ।[३] ३, रघुवर-दयाल मिश्र, अध्यापक—मिडिल स्कूल, कबीरचौरा, काशी ।[४]

रसिक-विलास, रच०—केशरी (केहरी), रसं०—१८ वीं शती । प्रास्था०—अनूपसंस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान), सं०—१८१० वि० की प्रति ।

रसिक-विलास, रच०—गोकुल दास रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर (मेवाड़), प्र०सं०—१२९ ।

रसिक-विलास, रच०—बारन कवि : भूपाल (म० भा०), रसं०—१७२६-वि० ।[५] कोई-कोई इस ग्रंथ की रचना सं०—१७३७ वि० में मानते हैं ।

रसिक-विलास, रच०—बेनी कवि : वितिया, रसं०—१८५४ वि० ।

रसिक-विलास, रच०—भोज कवि (भोजराज), रसं०—१८५७ वि० ।[६]

रसिक-विलास, रच०—शिव बंदीजन : गोंड़ा (अवध), रसं०—१७९६ वि०।[७]

रसिक-विलास, रच०—सुमनेश कवि, उना०—'समनेश', रसं०—१८३० वि० । प्रास्था०—गयाप्रसाद बक्सी, उपरहटी : रीवाँ (बघेलखंड), सं०—१८२७ वि० की प्रति[६] । २. राज : पुस्तकालय दतिया ।

रसिक-विवेक, रच०—कवि बलराम, रसं०—१७३३ वि० ।[८]

रसिक-शिरोमणि, रच०—मनमोहन कवि, मुसावर : भरतपुर (राजस्थान), रसं०—१८३० वि० । प्रास्था०—लक्ष्मणवल्लभ पांडेय, अनूपशहर (उ०-प्र०) ।[९] २. राज्य-पुस्तकालय, अमेठी ।[१०] ३. याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र०

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० २९८ ।

२. सूचना—ना० प्र० सभा : काशी, सं०—२०१७ वि० ।

३.-४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ३४९ ।

५. ६. ७. मि० बं० वि०–२, पृ० ५००, ८७६, ६७२ तथा ८३० ।

८. मि० बं० वि०—२, पृ० ५०६ ।

९. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२० ई०, पृ० २९८ ।

१०. यहाँ प्राप्त पुस्तक में "रस-शिरोमणि" नाम मिलता है।

सभा, काशी। इसका नाम "रस-शिरोमणि" भी है और महाराज 'रामसिंह' रचित कहा—सुना जाता है।

रसिक-शिरोमणि, रच०— रसिक नाथ, रसं०—अज्ञात।[1]

रसिक-शृंगार, रच०—गिरिधरनाथ, उना०—'नाथ कवि,' रसं०—अज्ञात।

रसिक-संजीवनी, रच०—दमोदर, उना०—'दिनेश', रसं०—१७२४ वि०। प्रास्था०—पुरातत्त्व-संग्रहालय, प्रयाग—पुसं०२१९। १७९, सं०—१८६२ वि० की प्रति। २, रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१७६४ वि० की प्रति।[2]

रसिक-हुलास, रच०—सूरदत्त, उना०—'रसिकराय', रसं०—१७१६ वि०, अमरसर : सेखावाटी (राजस्थान) के कछवाहा शेखावत राजा "कृष्णचंद" के आश्रित। प्रास्था०—अनूपसंस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान)।

रसोत्पत्ति, रच०—कवि राव वख्तावर सिंह, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—कवि-राव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़)।

रा

राज-विलास, रच०—मान कवि, रसं—अज्ञात। प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० सभा, काशी। २. भारत : इतिहास संग्रहालय-संशोधक मंडल —पूना (महाराष्ट्र), पुसं०—ध—३९।

राज-विलास, रच०—लक्ष्मीनाथ, रसं०—१८८३ वि०।

राधा-कृष्ण : कीर्ति, रच०—विहारी दास : विहारी सतसई के दोहों पर गद्य-पद्य-मय टीका-नायिका-भेदानुसार, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मगन जी भट्ट उपाध्याय, तुलसी चौतरा, मथुरा।[3]

राधा-कृष्ण-विलास, रच०—गोकुल कवि, रसं०—१८५८ वि०।

राधा-चरित्र, रच०—तथा रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—वर्नाक्यूलर सोसायिटी-पुस्तकालय, भद्र, अमदाबाद (गुजरात), पुसं०—२०१४। नायिका-भेद-ग्रंथ।

राधा-माधव-मिलन, रच०—कालिदास (ब्रजभाषा-कवि), रसं०—अज्ञात, नायिका-भेद-रीत्यानुसार राधा-माधव का मिलन दूती-द्वारा।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ९९९।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९४१-४३ ई०, प्रथम भाग में पृ० ३८० पर रच० ना० "दिनेश पाठक" लिखा गया है, जब कि यह आपका "उपनाम" है।

३. खोजरिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० १०८।

राम-विनोद, रच०—रामचंद्र कवि (प्रसिद्ध कवि केशवराय के पुत्र), रसं०—१७०२ वि०, औरंगजेब के समकालीन। प्रास्था०—येल: यूनिवर्सिटी, अमरीका। २, सरस्वती-भंडार, काशी: संस्कृत-विश्वविद्यालय। पुसं०—४६६२६। पुस्तक में रच०—'रामचंद्र मिश्र' लिखा है पर हैं दोनों एक।

राम-विलास, रच०—पीतांबर, रसं०—१७०२ वि०।

रामसिंह-मुखारबिंद-मकरंद, रच०—कृष्ण कवि-तनय "कमलनय", उना०—'रससिंधु,' रसं०—१८९६ वि०। प्रास्था०—छन्नूलाल जी, गोकुल—मथुरा।[१]

राय-विनोद, रच०—रामचंद्र साकी—काशी, रसं०—१७२८ वि०।[२]

री

रीति-दर्पण, रच०—तथा रसं०—अज्ञात।

रीति-रत्नावली, रच०—बनमालीदत्त, रसं०—अज्ञात।

रू

रूप-विलास, रच०—रूपशाहि, रसं०—१८१३ वि०। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय: ना० प्र० सभा, काशी। २, हिं० सा० सं०-पुस्तकालय, प्रयाग। नायिका-भेद तथा पिंगल-ग्रंथ।[३]

रूप-विलास, रच०—सबलसिंह, रसं०—अज्ञात।

ल

लखपत-शृंगार, रच०—कुँवर कुशल।[४]

लखपत-शृंगार, रच०—महाराव लखपति सिंह: कच्छ, रसं०—१८१७ वि०।[५]

१. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० १२२।

२. खोज रिपोर्ट: ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०१।

३. मि० बं० वि०—२, पृ० ७१९।

४, ५. 'कुँवर कुशल' वा 'भट्टारक' 'कनक कुशल' कच्छ के राजा 'लखपति सिंह' के राजकवि थे, इनके बनाये ब्रजभाषा-ग्रंथ—"लखपत जस-सिंधु" (अलंकार-ग्रंथ), लखपत-पिंगल वा गौहर-पिंगल (छंद-ग्रंथ) तथा 'लखपत-मंजरी' जिसे "पारसात नाम-माला" (कोष-ग्रंथ) भी कहते हैं, मिलते हैं। सुंदर कवि के "सुंदर-शृंगार" (नायिका-भेद) ग्रंथ की भी आपने टीका—"रस-दीपिका" नाम से लिखी है। ४, और ५, संख्या के ग्रंथ एक ही हैं और दोनों रचयिताओं के नाम से मिलते हैं।

लक्ष्मणसिंह-प्रकाश, रच०—शाहजू पंडित : ओड़छा, रसं०—१७९४ वि०।

लक्ष्मण-सिंगार, रच०—मतिराम त्रिपाठी (प्रसिद्ध), रसं०—१८७९ वि०।[1]

लक्ष्मीश्वर-चंद्रिका, रच०—लक्ष्मणराव, रसं०—१८७३ वि०।[2]

लक्ष्मीश्वर-चंद्रिका, रच०—संत कविराव : रीवाँ (बघेलखंड)।[3]

लक्ष्मीश्वर-रत्नाकर, रच०—लच्छीराम (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात।[4]

लक्ष्मीश्वर-विनोद, रच०—तथा रसं०—अज्ञात।

लक्ष्मीश्वर-विलास, रच०—राजा लक्ष्मीनाथ सिंह : अयोध्या, रसं०—अज्ञात।[5]

ललित-कौमुदी, रच०—कविराव गुलाबसिंह : बूंदी-राजस्थान, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय : बूंदी (राजस्थान)।

ललित-लहरी, रच०—झासीराम—(घासीराम) चौबे : बूंदी—राजस्थान, रसं०—अज्ञात।

ला

लाल मुकुंद-विलास, रच०—मुकुंदलाल, उना०—लालमुकुंद : बनारस (काशी), रसं०—१८०० वि०।[6]

लालित्य-लता, रच०—कविदत्त, रसं०—१८२०वि०, चरखारी-नरेश 'खुमानसिंह' के आश्रित।

लो

लोकोक्ति-रस-कौमुदी, रच०—शिवराम सहाय (जयपुर), रसं०—१७५७ या १८०९ वि०। प्रास्था०—महाराजा बलरामपुर-पुस्तकालय : बलरामपुर (अवध)।[7]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०६ ई०, पृ० १९६।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८९२।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १३०३।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३५।
५. यह काशी से प्रकाशित हुआ है।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ६९७।
७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी स०—१९०९ तथा १९२० ई०, पृ० ३३३ व ४३६। यह आगरा के 'मतवह ईलाही' प्रेस से स०—१८१०- ई० में तथा बाद को महामहोपाध्याय पं० सुधाकर जी द्विवेदी-द्वारा संपादित होकर 'भारत जीवन' प्रेस : काशी से सं०—१९४७ वि० में भी प्रकाशित हुआ है।

व

वल्लभ-विलास, रच०—वल्लभ : किशनगढ़ (राजस्थान), कवि वृंद (प्रसिद्ध) के वंशज, रसं०—१७५० वि० ।

वरबा-विलास (भावना), रच०—युगलानंद शरण । प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९२२ वि० की प्रति । श्री रामचंद्र और सीताजी के प्रेम-रहस्य का रीति-ग्रंथानुसार वर्णन ।

वा

वाणी-विलास, रच०—भूधर कवि । प्रास्था०—जैन सिद्धांत-भवन, आरा (बिहार), रसं०—अज्ञात ।

वाणी-विलास, रच०—रूपलाल गोस्वामी, रसं०—१७७५ वि० ।

वामा-मनोरंजन, रच०—अज्ञात ।

वामा-विनोद, रच०—गोकुल कायस्थ : बलरामपुर, रसं०—१९०० वि० ।

वि

विक्रम-विलास, रच०—गंगेश मिश्र, रसं०—१७३९ वि०, मिश्र बं० वि०-अनुसार । प्रास्था०—प्रयाग-म्युजियम, सं०—१७३९ वि० की लिखी, पुसं०—२१४, ३५ ।[1]

विक्रम-विलास, रच०—निवाजीलाल दीक्षित, उना०—'लाल कवि', रसं०—१६४० वि० । प्राप्त प्रति—सं०–१८७२ की । नवरस-वर्णन ।[2] प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१८७२ वि० की प्रति । ११, परिच्छेदों में विभक्त ।

विक्रम-विलास, रच०—लालदास, रसं०—१६४० वि० । प्रास्था०—अनूप-संस्कृत लायब्रेरी बीकानेर (राजस्थान), दो प्रतियाँ । २, ना० प्र० सभा : काशी, सं०—१७२१ वि० की प्रति । पुस्तक में रसं०—१६४२ वि० भी लिखा है ।

विक्रम-विलास, रच०—शिवराम भट्ट, रसं०—१८४८ वि० ।

विक्रम-विलास, रच०—श्रीपति कवि ।[3]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ५१० ।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०१ ई०, पृ० ४३ ।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ५७८ ।

विजय-रस-चंद्रिका, रच०—महाराज विजय सिंह शिवपुर : बड़ोदा, रसं०—१९३७ वि०।[1]

विजय-विलास, रच०—महाराज विजय सिंह शिवपुर (बड़ोदा), रसं०—१८१० वि०।[2]

विद्वन्मोद-तरंगिणी, रच०—श्रीधर कवि, राजा श्रीधर सिंह-खीरी के आश्रित, रसं०—१९०० वि०। प्रास्था०—कुँवर दिल्लीपति सिंह, जमीदार बड़ागाँव, (सीतापुर अवध)[3]। २, ठा० महावीर सिंह दिकौलिया (सीतापुर), अवध।[4]

विनोद-चंद्रिका, रच०—कवि उदयनाथ कविंद्र, रसं०—१७७७ वि०। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी। २, बा० ब्रजरत्नदास, बी० ए०, काशी।

विनोद-चंद्रोदय, रच०—कवि उदयनाथ कविंद्र, रसं०—१८०४ वि०। प्रास्था०-ला० छन्नूलाल जी गोकुल : मथुरा।[5]

विप्रलंभ-शृंगार, रच०—लखन सेन, रसं०—अज्ञात।

विप्रलब्धा, रच०—भोलानाथ कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जयपुर (राजस्थान) निवासी।

विरह-मंजरी, रच०—नंददास (अष्टछाप), रसं०—अज्ञात।

विरहा, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ला० जगदीश नारायण, महावन—मथुरा।

विलास-तरंग, रच०—गोविंद वाजपेयी, रसं०—१८८० वि०।[6]

विश्वनाथ-प्रकाश, रच०—महाराज विश्वनाथ सिंह—रीवाँ (बघेलखंड), रसं०—१८७० वि०।

विश्व-बसकरन-प्रकाश, रच०—कवि हृदयेश : झाँसी, रसं०—१८५७ वि०।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १२८७।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ७०७।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० २२४।

४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १३८२। इस ग्रंथ के रचयिता का नाम—"सुब्बा सिंह" था, उना०—"श्रीधर", ओयल के राजा 'बखत सिंह' के छोटे पुत्र। राजा श्रीधर खीरी के आश्रित नहीं।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० २४१।

६. मि० बं० वि०—२, पृ० ९३९।

विष्णु-विलास, रच०—लाल कवि, रसं०—१७६० वि०।[1] प्रास्था०—ठा०-नौनिहाल सिंह काँठा—उन्नाव।[2]

वै

वैद्य-विरहिणी-प्रबंध, रच०—उदयराज, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—अभय-जैन-ग्रंथालय, बीकानेर—राजस्थान, सं०—१७७२ वि० की प्रति।

व्यं

व्यंग्य-विलास, रच०—सरदार कवि : काशी, रसं०—१९१९ वि०। प्रास्था०—पं० चुन्नीलाल वैद्य ढुंढपाणी : काशी, सं०—१९५३ वि० की प्रति। २. सरस्वती-भंडार : रामनगर, काशी।

व्यंग्यार्थ-कौमुदी, रच०—प्रताप कवि, रसं०—१८८२ वि०। प्रास्था०—कन्हैया-लाल महापात्र, असनी—फतेपुर।[3] २. राव मोहन सिंह उदयपुर : मेवाड़, सं०—१८८२ वि० की प्रति। ३. रत्नाकार : संग्रह—ना० प्र० सभा, काशी। ४. मोटीहवेली—जामनगर (सौराष्ट्र), पुसं०—१४२, १७। ५, राज्य-पुस्तकालय : दतिया (मध्यप्रदेश)। ६, रामदेव ब्रह्मभट्ट नुनारा, सुलतानपुर।[4] ७. ठा० त्रिभुवनसिंह, नीलगाँव : सैदपुरा (सीतापुर)। ८. संमेलन-पुस्तका-लय, प्रयाग (दो प्रतियाँ)। ९, बा० पद्मबकससिंह, लवेदपुर (बहरायच)।

व्यंग्यार्थ-चंद्रिका, रच०—कवि राव गुलाबसिंह : बूंदी (राजस्थान)। इसका नाम—"बृहद् व्यंग्यार्थ चंद्रिका' भी है।[5]

श

शक्ति-चिंतामणि, रच०—भैया त्रिलोकीनाथ सिंह अयोध्या, रसं०—१८५१

१. ना० प्र० सभा, काशी के—"हि० सा० का बृहद् इतिहास" (षष्ठ-खंड) में रसं०—१८५० वि० लिखा है।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ९६१।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ३६१।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ११५३।
५. "व्यंग्यार्थ-कौमुदी" तथा "व्यंग्यार्थ-चंद्रिका" क्रमशः 'भारतजीवन' प्रेस काशी से सं०—१९५७ व सं०—१९५४ वि० में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा "वाराणसी-संस्कृत यंत्रालय", काशी से भी।

वि० प्रा० प्र०—१९४४ वि० की। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार—अयोध्या।[1]

शक्ति-चिंतामणि, रच०—भौन कवि, रसं०—१८५१ वि०। प्रास्था०—पं० कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली-सीतापुर (अवध)। २. पं० जुगल किशोर मिश्र, गँधौली-सीतापुर (अवध)।[2] इनका पूर्ण नाम—'भवानी प्रसाद' है और मुरावाँ के रहने वाले।

शशि-विनोद (शशिनाथ-विनोद), रच०—सोमनाथ माथुर ब्राह्मण प्रसिद्ध, रसं०—१८१२ वि०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय : भरतपुर (राजपूताना)।

शब्द-रसायन, रच०—देव कवि प्रसिद्ध, रसं०—१७६० वि० के पास। प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१८७३ वि० की प्रति।

शि

शिखर-विलास, रच०—लालचंद, साँगानेर : जयपुर (रास्जथान), रसं०—१८१८ वि०।[3]

शिवराम-सरोज, रच०—शिवानंद हल्दी वाले, रसं०—अज्ञात।[4]

शिवसिंह-सरोज, रच०—लच्छीराम, रसं०—अज्ञात, (सरोज-कर्त्ता के नाम पर लिखा गया नायिका-भेद का ग्रंथ)।

शृं

शृंगार, रच०—बेनी कवि (प्रसिद्ध), रसं०—१८२० वि०।[5]

१. इस कृति को ना० प्र० सभा : काशी के अन्वेषकों ने—"भवानी प्रसाद", उना०—'भावन' कृत माना है, दे०—ना० प्र० सभा : पत्रिका-काशी, वर्ष ५५, अंक ३, सं०—२००७ वि० तथा 'खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० ५४।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ व स०—१९२६ ई०, पृ० ३०७ तथा १६७।

३. मि० बं० वि०—२, पृ० ७६६।

४. मि० बं० वि०—३, पृ० १००६।

५. मि० बं० वि०—२, पृ० ७३५।

श्रृंगार-कवित्त, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध) मथुरा, रसं०—अज्ञात (संग्रह-ग्रंथ)।[1]

श्रृंगार-कीर्ति, रच०—मंडन कवि, रसं०—१७२० वि०। प्रास्था०—पं० कमलाकांत, जिमासु—रायबरेली।[2] इसका नाम—'श्रृंगार-कवित्त' भी मिलता है।

श्रृंगार-कुंडलिया, रच०—लक्ष्मणप्रसाद मुसाहिब—बिजावर-राज्य (मध्य-भारत), रसं०—१९०९वि०। प्रास्था०—पं० गोकुलप्रसाद वृंदावन : मथुरा।[2]

श्रृंगार के दोहा (सिंगार-चेतावनी), संक०—अज्ञात। प्रास्था०—काशी प्रसाद, काँटी (छतरपुर—म० प्र०)।

श्रृंगार-चंद्रिका, रच०—अजान कवि, पूरा नाम—"नकछेदी तिवारी" : डुँमराउ-वाले, रसं०—१९४८ वि०।

श्रृंगार-चंद्रिका, रच०—बलदेव कवि, उना०—"द्विजगंग", रसं०—१९५१ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, अयोध्या-राज्य।[3]

श्रृंगार-चंद्रिका, रच०—रघुनाथ कायस्थ : चरखारी, रसं०—अज्ञात।[4]

श्रृंगार-चंद्रिका, रच०—हरिप्रसाद भट्ट, बिलग्रामी, रसं०—१८४३ वि०। प्रास्था०—रामकृष्ण लालाजी, गोकुल : मथुरा। २. गोपालराम ब्रह्मभट्ट, बिलग्राम : हरदोई।[5]

श्रृंगार-चंद्रोदय, रच०—हरिप्रसाद, रसं०—१८५५ वि०। प्रास्था०—बा०-दिवाकर प्रसाद, उपरहटी : रीवाँ (बघेलखंड)।१८४१ वि०।

श्रृंगार-चरित, रच०—देवकीनंदन, रसं०—१८४० वि० (नायिका-भेद और अलंकारों का वर्णन)। प्रास्था०—पं० शिवविहारी वकील, गोलागंज—लखनऊ।[7] २. पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज—लखनऊ।

श्रृंगार-चरित, रच०—उजियारे कवि, पूना०—"दौलतराम उजियारे", रसं०—१८४१ वि०।

१. यह पुस्तक मथुरा के "मुंबैउल् उलूम" (लीथो) प्रेस स०—१८५७ ई० में छपी है।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १०१९।

३. मि० बं० वि०—३, पृ० १०९९।

४. मि० बं० वि०—३, पृ० १२३६।

५. मि० बं० वि०—३, पृ० १२३३।

६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० ९९।

७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ तथा स०—१९२३ ई०, पृ० ११० व ४८२ एवं मि० बं० वि०—२, पृ० ७९३।

शृंगार-चूड़ामणि, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ब्रज-साहित्य-मंडल मथुरा, पुसं०—१४१।२२४।

शृंगार-तरंगिणी, रच०—मुरलीधर भट्ट : अलवर (राजस्थान), रसं०—१८२०-वि०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, अलवर (राजस्थान)।

शृंगार-तरंगिणी, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र), पुसं०—१४२-१।

शृंगार-तिलक, रच०—नारायण पति त्रिपाठी, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—जवाहर लाल चतुर्वेदी; मथुरा, पुसं०—१३५।

शृंगार-तिलक, रच०—ब्रजचंद, रसं०—१८९५ वि०। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।

शृंगार-तिलक, रच०—भूप कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ठा० शिवरत्न-सिंह श्रीनगर, पो०—लखीमपुर, खीरी (अवध), सं०—१९३३ वि० की प्रति।[1]

शृंगार-तिलक, रच०—पं० मन्नालाल, (संग्रह-ग्रंथ)।[2]

शृंगार-तिलक, रच०—रुद्र कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मथुरा दास अग्रवाल, गोकुलपुरा—आगरा।

शृंगार-तिलक-टीका, टीका०—जानकी प्रसाद द्विवेदी, (मुद्रित)।[3]

शृंगार-दर्पण, रच०—आजम खाँ, रसं०—१७८६ वि०। प्रास्था०—बा० राधा-कृष्ण प्रसाद सिंह रईश, सहवार—वलिया।[4]

शृंगार-दर्पण, रच०—नंदराम, रसं०—१९२५ वि०। प्रास्था०—पं० बलभद्र प्रसाद चौबे, रानी मंडी, आगरा, सं०—१९२९ वि० की लिखी प्रति।[5]

शृंगार-दर्पण, रच०—महाराज कुँमार बा० नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह, उना०—"ईश कवि", रसं०—१९४८ वि०। यह पुस्तक—'धनंजय राम पाठक' द्वारा दीनपुर सेंट्रल प्रेस से स०—१८८९ ई० में प्रकाशित हुई है।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० १७९।
२. यह पुस्तक काशी के 'लायट प्रेस' (लीथो) में स०—१८८० ई० में छपी है।
३. यह पुस्तक 'नर्मदा लहरी प्रेस' जबलपुर (म० भा०) में छपी है।
४. खोज रिपोर्ट : ना०प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० ३७ तथा मि०-बं० वि०—२, पृ० ६२१।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० १२१०। यह पुस्तक 'भारत-जीवन' प्रेस काशी से स०—१८९७ ई० में प्रकाशित हुई है।

श्रृंगार-दर्पण, रच०—सल्लम खाँ, रसं०—१७८६ वि० ।

श्रृंगारदान, रच०—कार्तिक प्रसाद खत्री (मुद्रित), प्रास्था०—मनोहर लाल, काशी, स०—१९०५ ई० में तृतीयवार।

श्रृंगार-नव-रस, रच०—हृदयेश बंदीजन (झाँसी), रसं०—१८०१ वि० ।[1] प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : मथुरेश जी का मंदिर, कोटा (रा० पू०) ।

श्रृंगार-निर्णय, रच०—भिखारीदास (प्रसिद्ध), रसं—१८०७ वि० । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार रामनगर : काशी । २. महाराजा-लायब्रेरी प्रतापगढ़ (अवध), पुसं० १८ । ३, रामबहादुर सिंह बड़वा, प्रतापगढ़ (अवध) । ४, भैया संतबकससिंह, गुठवारा : बहराइच । ५, पं० विपिनविहारी मिश्र, गंधौली : सीतापुर (अवध), सं०—१९३६ वि० की प्रति । ६, पं० कृष्ण-विहारी मिश्र, सिधौली : सीतापुर (अवध), सं०—१९४७ वि० की प्रति ।[2]

श्रृंगार-पचीसी (स० तिलक), रच०—बक्सी गोपाल, रसं०—१८८५ वि० ।[3] प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय अमेठी (सुलतापुर : अवध) । २, बक्सी गया-प्रसाद उपरहटी-रीवाँ (बघेलखंड) ।

श्रृंगार-प्रकाश, सं०—निवाज कवि ।

श्रृंगार-प्रदीप, रच०—हरीहर प्रसाद, रसं०—अज्ञात । यह पुस्तक प्रथम 'नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ से स०—१८८६ ई० में तथा द्वितीय-वार 'बनारस लायट प्रेस' काशी से स०—१८९७ ई० में प्रकाशित हुई है ।

श्रृंगार-बत्तीसी, रच०—महाराज मानसिंह अयोध्या, उना०—'द्विजदेव' । प्रास्था०—सरस्वती : भंडार अयोध्या ।[4]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११७० ।

२. यह पुस्तक प्रथम—'गुलशन ए अहमदी' (लीथो) प्रेस प्रतापगढ़ (अवध) में स०—१८९२ ई० को. बाद में—"विहार-बंधु प्रेस" पटना (बिहार) से स०—१८९३ ई० में तथा 'भारत-जीवन' प्रेस काशी से स०—१८९४ ई० में छपी है। इधर अभी-अभी यह पुस्तक संपादित होकर ना० प्र० सभा : काशी से सं०—२०१३ वि० में भी प्रकाशित हुई है।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ५७४ ।

४. यह पुस्तक लखनऊ के 'नवल किशोर' प्रेस से लीथो में तृतीय बार स०—१८७७ ई० में प्रकाशित हुई है।

शृंगार-भाव, रच०--अज्ञात, रसं०--अज्ञात। प्रास्था०--पं० द्वारिका प्रसाद, बकेवर : इटावा। ग्रंथ में विविध नायिकाओं के भाव वर्णन।[१]

शृंगार-भूषण, रच०--वेनीप्रवीण (प्रसिद्ध), रसं०--१८८० वि०।[२]

शृंगार-मंजरी, रच०--अज्ञात, रसं०--अज्ञात। प्रास्था०--मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र), पुसं०--१४२-६।

शृंगार-मंजरी, रच०--चिंतामणि कवि, रसं०--अठराहवी शती। प्रास्था०--राज्यपुस्तकालय : दतिया--मध्यप्रदेश।[३]

शृंगार-मंजरी, रच०--प्रतापशाहि, रसं०--१८४९ वि०। प्रास्था०--याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। २, लूनकरण जैन-पुस्तकालय : जयपुर (राजस्थान), पुसं०--१९१५ ग्रुनं०-१०७।[४]

शृंगार-माधुरी, रच०--कृष्णभट्ट, रसं०--अज्ञात। प्रास्था०--पं० इंद्रमिश्र, ब्रह्मपुरी : कोसी-कलाँ मथुरा।[५]

शृंगार-माला, रच०--रसिकनारायन, रसं०- अज्ञात। प्रास्था०--पं० जमुना-प्रसाद शुक्ल, निपनियाँ--रीवाँ (बघेलखंड), सं०--१९४४ वि० की प्रति।

शृंगार-रत्न, रच०--गोकुल प्रसाद कायस्थ, रसं०--अज्ञात। प्रास्था०--बाँके-विहारी भटनागर, राजा मंडी, आगरा।

शृंगार-रत्नाकर, रच०--वेनीसिंह ठाकुर : सीतापुर, रसं०--अज्ञात।[६]

शृंगार-रत्नाकर, रच०--भौन कवि : बेनी, रसं०--१८८१ वि०।[७] इसे--'रस-रत्नाकर' भी कहते हैं।

शृंगार-रत्नावली, रच०--मनभावन कवि, मुड़िया: शाहजहाँपुर, रसं०--१८३० वि०।[८]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०--१९३५ ई०, पृ० ४५३।
२. मि० बं० वि०--२, पृ० ८३९।
३. इसका नाम--'रस-मंजरी' भी मिलता है। यह पुस्तक--डा० भगीरथ मिश्र के संपादन के साथ 'लखनऊ विश्वविद्यालय' से 'नव भारत-प्रेस' लखनऊ में छप कर स०--१९५६ ई० में प्रकाशित हुई है।
४. मि० बं० वि०--२, पृ० ८१५ तथा ९२२।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०--१९३२ ई०, पृ० ३२९।
६. मि० बं० वि०--३, पृ० १२०९।
७. मि० बं० वि०--२, ३, पृ० ८०९ तथा ९९२।
८. मि० बं० वि०--२, पृ० ७५६।

श्रृंगार-रस, रच०—भक्तमाल, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०— मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया (बिहार)।

श्रृंगार-रस-दर्पण, रच०—आजमखाँ, रसं०—१७८६ वि०।

श्रृंगार-रस-माधुरी, रच०—देवर्षि कृष्णभट्ट, उना०—लाल "कलानिधि", रसं०—१७६९ वि०। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१७६९वि० की प्रति। २, सरस्वती-भंडार : काँकरौली-मेवाड़, पुसं०—६९-१, सं०—१८८० वि० की प्रति। ३, जगन्नाथ लाला जी त्रिगृही, गोकुल : मथुरा।[1] ४. भंडारकर-इंसटीट्यूट : पूना (महाराष्ट्र), पुसं०—७७८। ५, भट्ट मगन जी उपाध्याय, तुलसी-चौतरा, मथुरा।[2]

श्रृंगार-रस-माधुर्य, रच०—कृष्ण कलानिधि रसं०—१८०० वि०।[3]

श्रृंगार-लतिका (सटीक), टीका०—जगन्नाथ कवि, सुमेरपुर : उन्नाव, रसं०—अज्ञात।[4]

श्रृंगार-रस-सिंधु, रच०—भगवत दास, (अष्टछापी कृष्णदास जी के वंशज), रसं०—१७७० वि०। प्रास्था०— सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़), बंसं०—७१, पुसं०—३।

श्रृंगार-लता, रच०—सुखदेव मिश्र, रसं०—१७३३ वि०।[5]

श्रृंगार-लतिका, रच०—महाराज मानसिंह अयोध्या, उना०—'द्विजदेव', रसं०—१९१३ वि० के आस-पास। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : अयोध्या-राज्य। अज्ञात।

श्रृंगार-लतिका-सौरभ (सटीक), रच०—महाराज मानसिंह अयोध्या, टीका-क०—जगन्नाथ अवस्थी (ब्रभा० टी०) तथा महाराज प्रताप नारायणसिंह अयोध्या, टीना०—"सौरभ"।[6]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० २२७।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० २१२।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ७६७ तथा ७८४।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ४७६।
५. यह पुस्तक—प्रथम लखनऊ के 'नवल किशोर' प्रेस में संपादक—भैया त्रिलोकीनाथ सिंह (अयोध्या) द्वारा स०—१८८५ ई० में प्रकाशित हुई है। इसके बाद 'चंद्र-प्रभा प्रेस काशी' तथा 'भारत जीवन प्रेस' काशी से प्रकाशित हुई।
६. यह पुस्तक पं० जवाहरलाल चतुर्वेदी मथुरा-द्वारा संपादित हो कर सं०—

शृंगार-वर्णन रच०—अज्ञात । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, काशी-संस्कृत-विश्व-विद्यालय, पुसं०—४६०५२ ।

शृंगार-विलास, रच०—सोमनाथ चौबे (प्रसिद्ध), गद्य-पद्य में, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी । पुस्तक कवि के हाथ की लिखी ।

शृंगार-विलासिनी, रच०—कविवर देव (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी-सं०—१७५७ वि० की प्रति । २, मुरलीधर-केशवदेव, जगनेरा : खैरागढ़ (आगरा) ।[१]

शृंगार-शिक्षा, रच०—कवि वृंद (प्रसिद्ध), रसं—१७४८ वि० ।

शृंगार-शिरोमणि, रच०—महाराज जसवंत सिंह बघेल : तिरबा-नरेश, रसं०—१८५६ वि० । प्रास्था०—पं० कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली (सीतापुर) । २, जुगलकिशोर मिश्र, गँधौली (सीतापुर)[२]। ३. पं० शिवनारायण बाजपेयी, बाजपेयी का पुरबा (बहरायच) ।[३] ४. पं० श्रिया लाल तिवारी, खजूरी (सुल्तानपुर) ।[४] ५. सूचना—ना०प्र०सभा:काशी, सं०—१९३४ वि०की प्रति।

शृंगार-शिरोमणि, रच०—प्रतापसाहि, रसं०—१८९४ वि० । प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, बूंदी : राजस्थान ।[५]

शृंगार-शिरोमणि, रच०—शिवनरेश सिंह, रसं०—१९५८ वि० ।

शृंगार-संग्रह, रच०—नारायणदास, काशी ।

शृंगार-संग्रह, रच०—सरदार कवि, रसं०—१९०५ वि० । यह 'रसं०' नहीं, प्रति-लिप-सं० है । प्रास्था०—मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया (बिहार), स०—१९२३ वि० की प्रति (किसी औघड़सिंह खबास के लिये रचयिता-द्वारा-

१९९२ वि० में 'इंडियन-प्रेस' प्रयाग से बहुत ही सुंदर रूप में प्रकाशित हुई है।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० २२२। यह पुस्तक प्रथम 'खड्ग विलास प्रेस' पटना (विहार) से तथा बाद में सं०—१९९१ वि० को 'कांती-प्रेस' आगरा से छप कर प्रकाशित हुई है। संपादक हैं—पं० 'गोकुलचंद दीक्षित' ।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० २०३ ।

३ ४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ७१९ तथा ७२१ ।

५. मि० बं० वि०—२. पृ० ९२२।

लिखित)।[1] २. सरस्वती-भंडार, रामनगर-काशी।

शृंगार-सतक, रच०—नवीन कवि (वृंदावन), रसं०—अज्ञात, लिसं०—१८६० वि०। प्रास्था०—चंद्रशेखर दुबे, ब्रह्मनेवा, पो०—बिसवाँ (सीतापुर)[2]। २, ठा० शिवलाल सिंह, श्रीनगर, पो०—लखीमपुर (खीरी : अवध), सं०—१८३५ वि० की प्रति।

शृंगार-सतक, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—जैन (मंदिर) बड़ा तेरह पंथी-पुस्तक-भंडार : जयपुर (राजस्थान), पुसं०—१७२१, सं०—१७२२ वि० की लिखी।

शृंगार-सतक रच०—गोपाल दास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी। संक्षिप्त रूप से नायिका भेद और नवरसों का वर्णन।

शृंगार-सतक, रच०—महेश कवि (बस्ती: राज-अवध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, बस्ती-राज्य (गोरखपुर)।

शृंगार-सतक, रच०—समनेश कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—गयाप्रसाद बक्सी, उपरहटी : रीवाँ (बघेलखंड)।

शृंगार-सतक, रच०—हरदेव कवि (करौली : राजस्थान), रसं०—१९५२ की प्रति।

शृंगार-समुच्चय, रच०—वल्लभलाल चौरसिया, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० महादेव प्रसाद, महाबन : मथुरा।

शृंगार-समुद्र, रच०—परसाद, पूना०—वेणी प्रसाद : महाराणा—"जगत सिंह" उदयपुर के आश्रित, रसं०—१६९५ वि०। इससे पहले—'रस-शृंगार-समुद्र'—पुस्तक का उल्लेख हुआ है। जहाँ तक संभव है, इन दोनों के रचयिता 'वेणी प्रसाद', उपनाम—परसाद ही हैं और पुस्तक-नाम भी एक ही है। अस्तु, पुस्तक में लिखे समयानुसार सं०—१७९५ वि० ('सत्रह सै-पंचानबे' सावन सुदि दिन रुद्र) ठीक है।

शृंगार-सरोज, रच०—पं० मन्नालाल, उना०—"द्विज कवि", रसं०—१९४६ वि०।[3]

१. यह पुस्तक- 'नवल-किशोर' प्रेस, लखनऊ से सं०—१९९१ वि० में प्रकाशित हुई है।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ४७९।

३. यह पुस्तक स०—१८८० ई० में 'लायट-यंत्रालय' काशी, से प्रकाशित हुई है।

शृंगार-सरोज, रच०—बल्देव प्रसाद, रसं०—अज्ञात ।[1]

शृंगार-सरोज, रच०—हरिप्रसाद, रसं०—१८४५ वि० । प्रास्था०—गोपालराम ब्रह्मभट्ट, बिलग्राम : हरदोई ।[2]

शृंगार-सरोजनी, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई (सौराष्ट्र), रसं०—१९६५ वि० । प्रास्था०—गोविंद-गिल्लाभाई-पुस्तकालय, सीहौर (सौराष्ट्र)।

शृंगार-सागर, रच०—चंददास, रसं०—१८११ वि० । केवल 'स्वकीया' तथा 'परकीया' नायिकाओं का वर्णन । प्रास्था०—ना० प्र० सभा : काशी । सं०—१९०९ वि० की प्रति । १२ उल्लासों में वर्णन ।

शृंगार-सागर, रचा०—मोहन कवि : चरखारी, रसं०—१९१९ वि० ।[3] प्रास्था०—बा० ललिता प्रसाद, सागर (मध्य प्रदेश) ।

शृंगार-सागर, रच०—मोहन लाल, रसं०—१६१६ वि० ।[4]

शृंगार-सागर, रच०—लक्ष्मीचंद (मोहन कवि : चरखारी के पुत्र), रसं०—अज्ञात ।

शृंगार-सार, रच०—चंद दरस, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।

शृंगार-सार, रच०—चंददासा, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।

शृंगार-सार, रच०—चंदनराय, रसं०—१८३० ।[5]

शृंगार-सार, रच०—मुरलीधर कवि मिश्र (चौबे-आगरा), रसं०—१८५७ वि० । प्रास्था०—बौहरे चिरंजी लाल, भैरों बाजार, आगरा ।[6] २. रेवती नंदन मिश्र, बेरी, पो०—बरारी : मथुरा । ३. पुरातत्त्व-संग्रहालय : प्रयाग, पुसं०—२१८ । १४६, सं०—१८५७ वि० की प्रति ।

१. यह पुस्तक 'लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस', लखनऊ से प्रकाशित हुई है, स०—१८९५ ई० में।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०, पृ० १०१।

३. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३०।

४. मि० बं० वि०—१, पृ० ३१८।

५. मि० बं० वि०—२, पृ० ७२३।

६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ६४ तथा ४४९ एवं...स०—१९३८ ई०, पृ० २८१।

श्रृंगार-सार, रच०—शिवगुलाम (उन्नाव), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० राम प्रसाद दुबे, पीर का नगरा : एटा।[1]

श्रृंगार-सार, रच०—सुरत मिश्र, रसं०—१७६० वि० के आस-पास। प्रास्था०—रामचंद्र सेनी, बेलनगंज : आगरा।[2]

श्रृंगार-सारावली, रच०—चैनसिंह खत्री : उना०—हरिचरण लखनऊ, रसं०—१९०० वि०।

श्रृंगार-सारावली, रच०—हरिदास कायस्थ : पन्ना—मध्य-प्रदेशवासी, रसं०—१६०१ वि०।

श्रृंगार-सुख, रच०—रूपसनातन, रसं०—१८९० वि०।[3]

श्रृंगार-सुख-सागर-तरंग, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रसं०—१८ वीं शती का मध्य, प्राप्र०—सं० १९६२ वि० की। इसका प्रसिद्ध नाम—"सुख-सागर-तरंग" है।

श्रृंगार-सुधाकर, रच०—पं० मन्नालाल, उना०—'द्विज कवि' : काशी, रसं०—१९४६ वि०।[4]

श्रृंगार-सुधाकर, रच०—बलदेव प्रसाद (अवस्थी), उना०—'द्विज बलदेव', रसं०—१९३१ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : अयोध्या-राज्य।[5]

श्रृंगार-सुधा-तरंग, रच०—राधा चरण चौबे, रसं०—अज्ञात, प्राप्र० सं०—१९५१ वि० की। प्रास्था०—ला० मुकुंदीलाल, अलवर (राजस्थान)।

श्रृंगार-सौरभ, रच०—टोडरमल, रसं०—अज्ञात।[6]

श्रृंगार-सौरभ, रच०—रामजी भट्ट : फरुखाबाद, रसं०—१८०३ वि०। प्रास्था०—पं० जुगलकिशोर मिश्र गँधौली : सीतापुर (अवध)।[7] २ पं० दुर्गादत्त

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० ७७ तथा ५७२।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९३२ ई०, पृ० ३३८।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८०।
४. यह पुस्तक काशी से स०—१८८७ ई० के लगभग छप कर प्रकाशित हुई है।
५. यह पुस्तक स०—१८७७ ई० में 'सुबहे सादिक प्रेस' थोमशनगंज' से छपकर प्रकाशित हुई है।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ४८७ तथा ७७९।
७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१२ ई०. पृ० १७५।

अवस्थी, कंपिला : फ़र्रुख़ाबाद ।[1] ३. पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज—लखनऊ ।[2]

शृंगार-हजारा, रच०—गणपति भारती चौबे, जयपुर (राजस्थान), रसं०—अज्ञात । जयपुर (राजस्थान) के राजा 'सवाई प्रतापसिंह' जी के आश्रित । प्रास्था०—राज्यपुस्तकालय : जयपुर-राज्य ।

शृंगार-हार, रच०—रूपलाल शर्मा, उना०—'रूपअलि', रसं०—१९३० वि० । प्रास्था०—ला० मनोहर लाल, राधा-रमण का घेरा, वृंदावन ।[3]

शृंगारादि-नवरस-निरूपण, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ला०-परसराम वैश्य, महावन (मथुरा) ।

श्री

श्रीपति-सरोज, रच०—श्रीपति, रसं०—१७७७ वि० । काव्य-सरोज और यह पुस्तक एक-ही नाम की दो भिन्न पुस्तकें नहीं हैं, ऐसा ज्ञात होता है ।

श्रीहरदेव-सनेह, रच०—श्रीधर गोस्वामी, उना०—'सनेही', रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—हरनारायण पुरोहित-पुस्तकालय, तहसीलदार का रास्ता, जयपुर (राजस्थान) ।

स

संग्राम-विलास, रच०—रसानंद, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—मोटी हवेली—मदनमोहन जी का मंदिर : पोरबंदर (सौराष्ट्र) ।

संयोग : द्वात्रिंशिका, रच०—मानकवि, रसं०—१७३१ वि० के आस-पास । प्रास्था०—अभय-जैन ग्रंथालय : बीकानेर (राजस्थान) ।

सज्जन-प्रकाश, रच०—मदनेश कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार उदयपुर (मेवाड़), पुसं०—८४४, सं०—१९३४ वि० तथा सं०—१९३९ वि० की लिखी दो प्रतियाँ ।

सज्जन-विनोद, रच०—मारकंडे लाल, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : उदयपुर (मेवाड़), पुसं०—८३८, सं०—१९३९ वि० की प्रति । २, गंगाधर राव, पाली (राजस्थान), सं०—१९३१ वि० की प्रति ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० . ३०६ ।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०. पृ० १३८९ ।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १२९८ ।

सज्जन-विलास, रच०—देव कवि (प्रसिद्ध), रसं०—१८०४ वि०।

सज्जन-विलास, रच०—कवि दत्त (चरखारी-नरेश खुमान सिंह के आश्रित रसं०—१८३० वि०।

सज्जन-विलास, रच०—मदनेश कवि (दे०—सज्जन-प्रकाश)।

सज्जन-विलास, रच०—वल्लभ कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मेवालाल चौबे, हिडोंन (राजस्थान), सं०—१९३५ वि० की प्रति।

सत्कवि-कुल-दीपिका, रच०— भरथसिंह, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—नोखेलाल ब्रह्मभट्ट, गुड़हाई : हाथरस, सं०—१८९७ वि० की प्रति।

सत्कवि-गिरा-विलास, रच०—केशवराय, रसं०—१७२० वि० के आस-पास।

सनेह (स्नेह)-तरंग, रच०—रावराजा बुद्धि सिंह, रस०—१७८४ वि०। प्रास्था०—श्री देवकीनंदनाचार्य—पुस्तकालय, कामवन : भरतपुर (राजस्थान)। रस—अलंकार-वर्णन।[1]

सनेह-मंजरी, रच०—सुंदरि सखी, रसं०—१९१६ वि०। प्रास्था०— ना० प्र०-सभा : काशी। सं०—१९२५ वि० की प्रति।

सभा-प्रकाश, रच०—हरिचरण दास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—कन्हैया लाल-महापात्र, असनो : फतेपुर, सं०—१८१४ वि० की प्रति।[2]

सरफ़राज-चंद्रिका, रच०—देवकीनंदन, रसं०—१८४३ वि०। प्रास्था०—एसियाटिक सोसायिटी : पुस्तकालय-कलकत्ता, पुसं०—४, रस—अलंकार वर्णन।[3]

सरस-रस, रच०—नवीन कवि : वृंदावन, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० गोकुल-नाथ, वंशीवट, वृंदावन (मथुरा)।[4]

सरस-रस, रच०—त्रिविक्रम-कृत 'ब्रजनाथ': भरोंच (गुजरात), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़)।

सरस-रस, रच०—कृपाराम-ब्रजनाथ, रसं०—१७४५ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़) बंसं-६३, पुसं०—६।

सरस-रस-ग्रंथ, रच०—लाल कवि। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, काशी-संस्कृत-विश्व-विद्यायल, पुसं०—६०६७ : खंडित प्रति।[5]

---

१. **खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९३८ ई०, पृ० ४०।**

२. **खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२० ई०, पृ० २४२।**

३. **मि० बं० वि०—२, पृ० ७९३।**

४. **मि० बं० वि०—३, पृ० १०३१।**

५. **यह ग्रंथ 'लाल' कवि-विरचित नहीं, "सुरत मिश्र" कृत 'सरस-रस' वा रस-**

सरस-रस, रच०—सुरत मिश्र, रसं०—१७९४ वि०।[1] प्रास्था०—बद्रीनाथ शर्मा-वैद्य, त्रिमुहानी : मिर्जापुर।[2]

सरस्वती-प्रसाद, रच०—जगन्नाथ, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मगन जो उपाध्याय, तुलसी चोतरा : मथुरा। ब्रज-लीला-संबंधी-पदों में नायिका-भेद वर्णन।[3]

सरोज-कलिका, रच०—श्रीपति, रसं०—१७६० वि०।

सा

सारस्वत-सार (अर्थात् 'मधुकर-कलानिधि'), रच०—माधव जू, रसं०—अज्ञात, प्रापु०-लिका०—१९१६ वि०। प्रास्था०—पं० कृष्णविहारी मिश्र, सिधौली : सीतापुर (अवध)।[4]

साहित्य-चंद्रिका (विहारी : सतसई की टीका), रच०—करण भट्ट, रसं०—१७९७ वि०।[5]

साहित्य-जुगल-विलास, रच०—पं० रमाकांत बलियावाले, रसं०—१९४० वि०।[6]

साहित्य-तरंगिणी, रच०—वंशीधर, रसं०—१९०७ वि०। प्रास्था०—पं०-राजनाथ, छिपैटी : आगरा।

साहित्य-दर्पण, रच०—कविवर ग्वाल (प्रसिद्ध) मथुरा, रसं०—अज्ञात।

साहित्य-दूषण, रच०—कविवर ग्वाल (प्रसिद्ध) मथुरा, रसं०—अज्ञात।

साहित्य-परिचय, रच०—सुरत मिश्र (प्रसिद्ध), रसं०—१७६६ वि०। प्रास्था०—ला० मथुरा दास, कुम्हेर दरवाजा : भरतपुर (राजस्थान)।

साहित्य-रस, रच०—करण कवि : पन्ना, रसं०—१७५७ वि०।[7]

साहित्य-लहरी, रच०—साहित्य-सूर्य "सूरदास" (अष्टछाप), रसं०—१५६७-

सरस' ही है। लाल कवि ने इसे संपादित कर सं०—१८७७ वि० में आगरा से प्रकाशित किया था।

१. सरस-रस और रस-सरस दोनों नाम एक ही ग्रंथ के हैं। इतिहासकारों ने भूल से इन्हें प्रथक्-प्रथक् ग्रंथ मान लिया है।
२. राखो०—२, पृ० १६२।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० १८८।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ४१८।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ७७२।
६. मि० बं० वि०—३, पृ० १३१३।
७. मि० बं० वि०—२, पृ० ८४६।

वि०। द्वितीय मत-अनुसार सं०—१६०७ वि०। प्रास्था०—ना० प्र०-सभा : काशी।[१]

साहित्य-वंशीधर, रच०—कवि वंशीधर : काशी, रसं०—१९०१ वि०। प्रास्था०—पं० मोहन लाल, ललिता घाट : काशी, रसं०—१९२२ वि० की प्रति।

साहित्य-शिरोमणि, रच०—निहाल चंद, उना०—"द्विजकवि", रसं०—१८९३ वि०।[२]

साहित्य-सरसी, रच०—सरदार कवि, रसं०—१९३४ वि०।

साहित्य-सागर, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—शंकर लाल भट्ट, दरीवाँ, प्रयाग,

साहित्य-सार, रच०—मतिराम कवि (प्रसिद्ध), रसं०—१७५० वि०, लिका०—१८९५ वि०।[३]

साहित्य-सार, रच०—मानसिंह नरेंद्र, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मोटी : हवेली। जामनगर सौराष्ट्र, पुसं०—१४२।११।

साहित्य-सार-चिंतामणि, रच०—श्रीधरानंद : भरतपुर (राजस्थान), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य पुस्तकालय, भरतपुर (राजस्थान)।

साहित्य-सुधाकर, रच०—सरदार कवि काशी, रसं०—१९०२ वि०।[४]

साहित्य-सुधानिधि, रच०—राजा जगत सिंह : भिनगा-राज्य, रसं०—१७९८ वि०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय : भिनगा। २. कृष्णविहारी मिश्र, गँधौली : सीतापुर।

साहित्य-सुधा-सागर, रच०—अयोध्या प्रसाद : रायबरेली, उना०—"अवध कवि", रसं०—१९३४ वि०।[५]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९, ई० पृ० ७ एवं ११। यह पुस्तक अपने ऊपर लिखे नामानुसार 'बाँकीपुर-पटना' से स०—१८९२ ई० में तथा 'लहेरिया-सराय' दरभंगा (बिहार) से सं०—१९९६ वि० में प्रकाशित हुई है।

२. मि० बं० वि०—३, पृ० १०२७।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०६ ई०, पृ० १९६-बी०।

४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०४९।

५. मि० बं० वि०—३, पृ० ११३२।

सुं

सुंदर-चंद्रिका, रच०—सुंदर लाल, उना०—'रसिक' : जयपुर (राजस्थान) वासी, रसं०—१९०१ वि०।[१]

सुंदर-विलास, रच०—सुंदर कवि दादू पंथी, रसं०—१६८८ वि०।

सुंदर-श्रृंगार, रच०—सुंदर दास, रसं०—१६८८ वि०। प्रास्था०—ओरियंट-लायब्रेरी : उज्जैन (मध्य-भारत), पुसं०—७६६, सं०—१६८८ वि० की प्रति (खंडित)। २. राव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़), सं०—१८४४ वि० की प्रति। ३. सज्जन-वाणी-विलास-पुस्तकालय, उदयपुर (मेवाड़), सं०—१८११ वि० की प्रति। ४. सरस्वती-भंडार : उदयपुर (मेवाड़) चार प्रतियाँ, पुसं०—१२१, १४६, ११५, सं०—१९३७ वि० की प्रति, पुसं०—९४४, सं०—१७८२ वि० की प्रति। ५. पं० कन्हैयालाल महापात्र, असनी : (फतेपुर)। ६. एसियाटिक सोसायिटी-पुस्तकालय : कलकत्ता, पुसं०—५६। ७.-याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी, चार प्रातियाँ, एक प्रति सं०—१६८१ वि० की। ८. रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी। ९.-सरस्वती-भंडार : काँकरौली (मेवाड़), आठ प्रतियाँ—यथा : पुसं०—४८-१।६२-७।६३-२।७२-१४।७२-१९।७३-५।७९-७।७९-८।१०, जैन-ग्रंथ : भंडार आमेर (जयपुर-राजस्थान), पुसं०—१० गुटका। ११, लूनकरण—जैन-पुस्तकालय : जयपुर (राजस्थान), पुसं०—१२६-गुटका। १२. जैन-मंदिर वड़ा (तेरह-पंथी) पुस्तकालय, जयपुर (रा०), पुसं०—२६७ गुटका। १३.-रामगोपाल वैद्य, जहाँगीराबाद (बुलंदशहर)।[२] १४. ठा० कान्ह सिंह : जम्मू (काश्मीर)।[३] १५. मोटी हवेली : जामनगर (सौराष्ट्र), पुसं०—६९-६,२४२. १० (दो प्रतियों)। १६. पुरातत्त्व-संग्रहालय : पुस्तकालय, जामनगर (सौराष्ट्र) दो प्रतियाँ। १७. भुवनेश्वरी-पीठ-पुस्तकालय, गोंडल (सौराष्ट्र)। १८. हेमचंद्र : ज्ञान- भंडार-पुस्तकालय, पाटन (गुजरात), पुसं०—२३९-११२५४। १९. फार्वस-पुस्तकालय, वंवई, पुसं०—३९ (ख), सं०—१६-८८ वि० की प्रति। २०. भंडारकर-इंस्टीट्यूट, पूना (महाराष्ट्र), पुसं०—

---

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११००।

२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९१७ ई०, पृ० ३६६।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ४५०।

५३५ बं०। २१. आनंद-भवन पुस्तकालय, बिसवाँ (सीतापुर-अवध)। २२. अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय : बीकानेर (राजस्थान, तीन प्रतियाँ। २३.- माणिक्य-ग्रंथ-भंडार, भींडर : उदयपुर (मेवाड़), सं०—१८३१ वि० की प्रति। २४. बालमुकुंद चतुर्वेदी मथुरा, दो प्रतियाँ। २५. नवनीत-पुस्तकालय, मथुरा, पुसं०—४४-१३ तथा ५३-१३, सं०—१८१३ वि० की प्रति। २६. छैल बिहारी वैद्य सुमेदा, बड़ा टोला-रीवाँ (बघेलखंड)। २७. उमाशंकर दुबे, सैदपुर (गाजीपुर-उ० प्र०)। २८ सरस्वती-भंडार, संस्कृत-विश्व-विद्यालय:काशी,पु०-संख्या—४५९८९।४६०९३।४६२६९।४६२८८।४६३२१।

सुंदर-शतश्रृंगार, रच०—सुंदर दास : काशी, रसं०—१८५७ वि०।[२]

सुंदर-शत श्रृंगार, रच०—सुंदर सिंह (भरतपुर : राज्य-परिवार), रसं०—१८६६ वि०। प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। २. संमेलन-पुस्तकालय : प्रयाग, पुसं०—२, अपूर्ण।

सुंदर-सर्वस्व, रच०—लाल बंदीजन, रसं०—१८५७ वि०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, चरखारी (म० प्र०)।

सुंदरी-तिलक, संक०—भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं०-विष्णुभरोसे, देवीपुर, डा०—मरहट्टा (एटा)।[३]

सुंदरी-तिलक (संग्रह-ग्रंथ), संक०—बा० मनोहरलाल भार्गव, संस०—अज्ञात।[४]

सुंदरी-तिलक (संग्रह-ग्रंथ), संक०—बनारसी प्रसाद, ...।[५]

सुंदरी-तिलक (संग्रह-ग्रंथ), संक०—पं० रामरत्न वाजपेयी, लखनऊ।[६]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र०सभा, काशी, स०—१९२६ई०, पृ० ६७८। यह पुस्तक 'बनारस लायट-प्रेस' तथा 'भारत जीवन प्रेस', काशी से स०—१८९ ई० में छपी है। वेंकटेश्वर प्रेस बंबई में भी छपी है।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८७७।

३. यह पुस्तक प्रथम मथुरा के 'उल् उलूम' (लीथो) प्रेस, से स०—१८७१ ई० में, बाद को 'फौके प्रेस' काशी से स०—१८८० ई० में और इसके बाद 'खड्ग विलास' प्रेस बाँकीपुर पटना से स०—१८९२ ई० में छप कर प्रकाशित हुई है।

४. यह पुस्तक 'नवल-किशोर' प्रेस लखनऊ में छपी है।

५. यह पुस्तक काशी के किसी प्रेस में स०—१८८१ ई० में छपी है।

६. यह पुस्तक 'नवल-किशोर' प्रेस लखनऊ में छपी, स०—१८९६ ई० द्वितीय बार की हमारे देखने में आयी है।

सुंदरी-तिलक (संग्रह-ग्रंथ), संक०—लाल कवि : बनारस, रसं०—१७८० वि० के आस-पास ।

सुंदरी-तिलक, रच०—कवि कहानजी-धर्मसिंह, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—मिश्र (मित्र) मंडल-पुस्तकालय, पोरवंदर (सौराष्ट्र), पुसं०—१२-१८ ।

सुंदरी-विलास, रच०—अज्ञात । प्रास्था०—लोकमणि चौबे, गल्ता-रास्ता, जयपुर (रा० स्था०) ।

सुंदरी-सर्वस्व, संक०—पं० मन्नालाल, उना०—"द्विज कवि" काशी, रसं०—१९४६ वि० ।

सुख-सागर-तरंग, रच०—कवि देव (प्रसिद्ध), रसं०—१७४६ वि० । प्रास्था०—महंत जसवंत सिंह, सिक्ख मंदिर अयोध्या ।[१] २. याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी । ३. पं० जुगलकिशोर मिश्र, गंधौली : सीतापुर, अवध ।[२] ४. ना० प्र० सभा, काशी : सूचना, सं०—२०१८ वि०, सं०—१९४१ वि० की प्रति ।

सुजान-विनोद, रच०—कवि देव (प्रसिद्ध) रसं०—१७९५ वि० के आस-पास । प्रास्था०—पं० मातादीन दुबे, कुसमरा : फतेपुर । २. गोकुलचंद दीक्षित भरतपुर (राजस्थान), सं०—१८०७ वि० की प्रति ।

सुजान-विलास, रच०—म० सुजानसिंह (करौली : राजस्थान), रसं०—१७९ वि० । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, करौली : राजस्थान ।

सुजान-विलास, रच०—सोमनाथ, रसं०—सं० १७८६ वि० ।[३]

सुधा-तरंग, रच०—रंग खाँ, रसं०—१८४७ वि० । प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी, दो प्रतियाँ ।[४]

सुधा-निधि, रच०—तोष कवि, रसं०—१६९१ वि० । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : अयोध्या-राज्य, सं०—१७९८ वि० की प्रति ।[५]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२० ई०, पृ० २०८।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० १०८। यह पुस्तक पं० बालदत्त शास्त्री-द्वारा संपादित होकर सं०—१९९४ वि० में बंबई-बुकसेलर अयोध्या से प्रकाशित हो चुकी है।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०० तथा १९३८ ई०, पृ० ७५।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३५ ई०, पृ० १९० ।
५. यह 'भारत-जीवन' प्रेस काशी से स०—१८८७ ई० में छपी है।

सुधा-निधि-सुंदरी, रच०—छबीले, रसं०—अज्ञात ।[१]

सुधा-रस-तरंगिणी, रच०—कान्हू लाल गुरदा, गया-विहार निवासी, रसं०—१९५४ वि० ।[२]

सुधा-सार (सुधा-रस-तंरगिणी), रच०—नवीन : बृंदावन[२], रसं०—१६४८ वि० । प्रास्था०—याज्ञिक : पुस्तकालय, अलीगढ़ (उ० प्र०)।[३] इस पुस्तक के 'प्रबोधरस-सुधा, सुधा-सागर, 'सुधा-रस' एवं 'सुधा सर' नाम भी कहे-सुने जाते हैं। पर "सुधा-रस" अलग पुस्तक है ।[४] ये महराज—"नाभा" के आश्रित थे और वहीं यह ग्रंथ बनाया था।

सुमति-प्रकाश, रच०—भूपति कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—अमेठी-राज्य-पुस्तकालय : अमेठी (अवध)।

सुमन-प्रकाश, रच०—भोलानाथ, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।[५]

सुरत-रस, रच०—सरदार सिंह : बनेड़ा-राज्य (राजस्थान), रसं०–१८००वि० ।

सुरतांत-लीला, रच०—जीवनधन, रसं०—अज्ञात, लिका०—१८४० वि० । प्रास्था०- -बिहारी जी का मंदिर महाजनी-टोला, प्रयाग ।

सुवर्ण-माला, रच०—गिरधर भट्ट, रसं०—१९०८वि० (वर्णमाला के अनुसार दोहा छंदों में १२ मात्रओं-द्वारा नायिका-भेद वर्णन) ।

सौ

सौरि : सुरत-तरंगिणी, रच०—गणेश कवि । प्रास्था०—सरस्वतीभंडार, काशी : संस्कृत-विश्वविद्यालव (खंडित प्रति), पुसं०—४६३५७ ।

स्कं

स्कंद-विनोद, रच०—स्कंदगिरि (बाँदा : बुंदेलखंडवासी), रसं०—१९०५ वि० ।

१. यह 'अमर प्रेस काशी' में छपी है।
२. प्रा० ह० पो०-विवरण-पटना, पृ० १००।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९३५ ई०, पृ० २०२ तथा मि० बं० वि०—३, पृ० १०३१।
४. यह बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर'-द्वारा संपादित होकर काशी से प्रकाशित हो चुकी है।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९३२ ई०, पृ० ९२ ।

स्ने

स्नेह-संग्राम, रच०—प्रतापसिंह शाहि जयपुर: नरेश, उना०—"ब्रजनिधि" रसं०—१८३५ वि० । प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय—जयपुर (पोथी-खाना) ।

स्त्री

स्त्री-भेद, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।

ह

हजारा, रच०—लाल वीर, रसं०—अज्ञात, प्राप्त०—१९५० वि० की। सूचना—ना० प्र० सभा, काशी, सं०—२०१८ वि० ।

हरिनाथ-विनोद, रच०—कान्ह कवि, उना०—"लघु कान्ह" : पाली-निवासी, रसं०—अज्ञात, प्रापु०—१९१६ वि० की। प्रास्था०—पं० गयाप्रसाद पाठक : मई, पो०—केराकन (जौनपुर) ।

हरि-विलास्य, रच०—हरिविलास, रसं०—अज्ञात !

हि

हित-तरंगिणी, रच०—कृपाराम, रसं०—१५९८ वि०। प्रास्था०—जैनसिद्धांत-भवन: आरा (बिहार), पुसं०—७०-४। २. पं० रघुनाथराम, गायघाट : काशी।[1] ३. सरस्वती-भंडार संस्कृत-विश्वविद्यालय : काशी। पुसं०—४६०१८।

हिम्मत-प्रकाश, रच०—पद्माकर भट्ट (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—भंडारकर-इंसटीट्यूट : पूना (महाराष्ट्र), पुसं०—७६२।

हिम्मत-प्रकाश, रच०—श्रीपति भट्ट, रसं०—१७३१ वि०।

ही

हीरा-श्रृंगार, रच०—हीरचंद-कानजी, भावनगर (सौराष्ट्र), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—भुवनेश्वरी-विद्यापीठ पुस्तकालय : गोंडल (सौराष्ट्र)।

हु

हुलास-मोहिनी, रच०—मोहन कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर : राज्य (राजस्थान)।

१. मि० बं० वि०—१, पृ० २५४। यह पुस्तक सं०—१९५२ वि० में बा० जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' द्वारा संपादित होकर **'भारत जीवन' प्रेस** काशी में छपी है। दे०— खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० २४७।

नायिका-भेद : ग्रंथ

मुद्रित

नायिका-भेद

"मुद्रित : संग्रहात्मक-ग्रंथ"

काव्य-प्रभाकर (रीति : ग्रंथ), रच०—जगन्नाथ प्रसाद—'भानु', प्रमु०—'लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस' बंबई, सं०—१९६६ वि०। द्वादश (बारह) मयूषों में विभक्त एक विशद ग्रंथ। ग्रंथ की अनुक्रमणिका इस प्रकार है—छंद-वर्णन, ध्वनि-वर्णन, 'नायिका-भेद', उद्दीपन, अनुभाव, संचारी और स्थायीभाव, रस-वर्णन, अलंकार, दोष-वर्णन, काव्य-निर्णय—इत्यादि...।

ब्रजभाषा-साहित्य का नायिका भेद, सं०—प्रभुदयाल मीतल, प्र०—अग्रवाल प्रेस मथुरा, सं—२००५ वि०। छह—परिच्छेदों में विभक्त।

मनोज-मंजरी, भाग—१, २, ३, ४, सं—नकछेदी तिवारी : डुमराँव, उना०—'अजान' कवि। प्रका०—रामकृष्ण वर्मा काशी, मु०—भारत-जीवन प्रेस काशी, स०—१८९७ ई०, द्वितीय भाग—अज्ञात, तृतीय भाग—१८८७ ई० तथा १८९४ ई०, चतुर्थ भाग—१९०६ ई०। प्रथम भाग में—"श्रृंगार-रस के अपूर्व कवित्तों का संग्रह"। द्वितीय में—'नायिका-भेद", तृतीय में—"उदीपनांतर सखा, सखी, दूती और षटऋतु-वर्णन", चतुर्थ में—"नख-सिख", नव्वह (९०) कवियों की रचनाओं का संग्रह।

रस-कुसुमाकर, रच० तथा संक०—राजा प्रताप नारायण सिंह : अयोध्या, मु०—'इंडियन प्रेस', प्रयाग, स—१८९४ ई०। ग्रंथ पंद्रह (१५) कुसुमों में बाँटा गया है और विविध कवियों के नायिका-भेद संबंधी पाँच सौ पद्रह (५१५) कवित्त-सवैयों का संग्रह है।

सुंदरी-तिलक, संक०—भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र, प्रका०—बा० रामदीनसिंह, 'खड्ग-विलास' प्रेस बाँकीपुर : पटना (बिहार), स०—१८९० ई०। एक सौ एक (१०१) कवियों के चौदह सौ पचपन (१४५५) सवैयों का विशाल संग्रह। ग्रंथ में प्रथम नायिका : नखसिख, बाद में—नायिका-भेद।

सुंदरी-तिलक, संक०—भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र, प्र०मु०—अज्ञात, लीथो का छपा, छोटा-सा संस्करण, समय भी अज्ञात।

सुंदरी-सर्वस्व, संक०—पं० मन्नालाल, उना०—"द्विजकवि", प्रका०—पुस्तक

पर टायटिल न होने से अज्ञात, मुस०—अज्ञात। एक सौ आठ (१०८) कवियों के सवैयों का नायिका-भेद : रूप संग्रह।

शृंगार-संग्रह, रच० तथा संक०—सरदार कवि काशी, प्र० मु०—नवल किशोर-प्रेस लखनऊ, स—१८८८ ई०। एक सौ पचीस (१२५) कवियों के नायिका भेद-संबंधी कवित्त-सवैयों का संग्रह। इस ग्रंथ में—नायिका-भेद, नखसिख, षटऋतु-वर्णन के अतिरिक्त कुछ राजप्रशंसा के, उनके हाथी-घोड़े का वर्णन—इत्यादि का भी संग्रह.....।

शृंगार-सरोज, रच० तथा संक०—पं० मन्ना लाल, उना०—'द्विजकवि", मु०—लायट-यंत्रालय, काशी, स०—१८८० ई०। ग्रंथ बारह उल्लासों में विभक्त है। नायिका-भेद संबंधी अनेक कवियों के दोहों का विराट संग्रह।

शृंगार-सुधाकर, रच० तथा संक०—पं० मन्ना लाल, उना०—"द्विजकवि", मु०—वनारस-लायट : यंत्रालय काशी, मुस—अज्ञात। एक सौ इक्यानवें (१५१) कवियों के नायिका-भेद संबंधी कवित्तों का विशाल संग्रह। पुस्तक सोलह मयूषों में विभक्त है।

*

नायिका-भेद : संग्रह-ग्रंथ

अर्थात् 'सतसईयाँ'

नायिका-भेद : संग्रह-ग्रंथ

अर्थात् 'सतसईयाँ'

अमरदास : सतसई ।

गोविंद : सतसई, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई, सौराष्ट्र ।

चंदन : सतसई ।

जयसिंह राय : सतसई ।

फूल-मंजरी,—रच० नंददास । प्रास्था०—सरस्वती भंडार, श्रीनाथद्वारा (उदयपुर : मेवाड़) । सात सौ दोहों का संग्रह ।

फूल-मंजरी, रच०—मतिराम ।

बिहारी : सतसई, रच०—विहारी लाल चौबे, रसं०—१६८० वि० । प्रास्था०—मूप्र०—"विजयदान सुरीश्वर-ज्ञान-भंडार अमदाबाद, (गुजरात) । पुसं०—७६६ । ४१६ । २. पं० ललिताप्रसाद दीक्षित, जगनेर : आगरा, सं०—१७६२ वि० की प्रति । ३. पं० गोविंदराम, हिंगौट-खरिया : आगरा । ४. कैलाशपति सेंगरिया, बिजौली : आगरा ।[1] ५. जैन-ग्रंथ-भंडार : आमेर (जयपुर-राजस्थान)। ६. ओरियंटल-मनस्क्रुप्ट-लायब्रेरी : उज्जैन (म० भा०), पुसं०—१२, सं०—१८९५ वि० की प्रति, द्वितीय प्रति—सं०—१८१८ वि० की । ७. सरस्वती-भंडार : उदयपुर (मेवाड़), "तेरह प्रतियाँ" यथा—पुसं०—३७, सं०—१७४३ वि० की । २. पुसं०—१३८, सं०—१७६६ वि० की । ३. पुसं०—२०९, सं०—१८५३ वि० की (खंडित) । ४. पुसं०—२१५ तथा २२७, (एक जिल्द में), सं०—१८२८ वि० की । ५. पुसं०—२४८ तथा ३६० (एक-बंध में), सं०—१८२२ वि० की । ६. पुसं०—३।७४, सं०—१७९४ वि० की । ७. पुसं०—५०८, सं०—१७५३ वि० की । ८. पुसं०—५२३, सं०—१९२० वि० की–सटीक टीका—क०— कृष्ण कवि (मथुरा) । ९. पुसं०—५५९, सं०—१७७३ वि० की सटीक—टीका मानसिंह कृत । १०. पुसं०—६०८, सं० १७८३ वि० की । ११. पुसं०—९४१ खंडित-प्रति इत्यादि।

१. यह प्रति पुरानी और सुंदर अक्षरों में लिखी हुई है।

८. स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर (मेवाड़), सं०—१७४३ वि० की। ९. स्वामी केवलराम दादु-पंथी, उदयपुर (मेवाड़), सं०—१८६५ वि० की। १०. कविराव मोहन सिंह, उदयपुर (मेवाड़), सं—१८४४ वि० की। ११. सेठ सूरजमल जालान-स्मृति-भवन-पुस्तकालय, कलकत्ता, दो (प्रतियाँ), पुसं०—१४५२ तथा १७८३। १२, याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी, चौदह प्रतियां : यथा—खंडित प्रति दो सं०—३७५। २—पूर्ण, सं०—१८०३ वि० की। ३—पूर्ण दोहा, सं०—६९२, सं०—१८००, वि० पोष कृष्णा-५ शनिवार की। ४—पूर्ण, दोसं०—६५०। ५—पूर्ण, दोसं०—७०९, सं०—१७८७ वि० की।[1] ६—खंडित-प्रति : प्राचीन।[2] ७—खंडित प्रति, सं०—१७६६ वि०। ८-९—खंडित प्रतियाँ। १०—सटीक (कृष्ण कवि-की टीका)। ११—दशवीं-प्रति के अनुसार : सटीक। १२—यह भी दशवीं प्रति के अनुसार (सटीक), सं०—१७८२ वि० की। १३—यह भी दशवीं-प्रति के अनुसार, खंडित प्रति। १४—पूर्ण, सटीक—टीकाकार—शुभकरण, टीका—ना०—"युगल-टीका"—इत्यादि। १३, बा० जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', शिवालाघाट, काशी, १—पूर्ण, जयपुर (राजस्थान) वाली प्राचीन कही जाने वाली प्रति की नकल। २—खंडित प्रति। ३—सटीक (टीका : कृष्ण कवि कृत) अपूर्ण। ४—पूर्ण, सं०—१७८१ वि० की। ५—सटीक (श्यामाचरण-कृत)। ६—सटीक (हरिचरण कृत)। ७.८—सटीक (शुभकरण कृत-दो प्रतियाँ) पूर्ण, सं०—१७९२ वि० की। ९—सटीक (कृष्णलाल कृत), सं—१८२० वि० की। १०—सटीक (सुरत मिश्र कृत)। ११—सटीक (ईश्वर कवि कृत)। १२—सटीक (मनीराम-कृत)। १३—सटीक (मानसिंह जैन कृत), सं०—१७७२ वि० की। १४—पूर्ण : आजमशाही-क्रम, हरिजू कवि कृत। १५—इसी की दूसरी प्रति। १६—पूर्ण : केवल राम-कृत क्रम। १७—पूर्ण, रामजूकवि-कृत क्रम। १८—सटीक—मानसिंह

१. इस प्रति के दोहों का क्रम—'कान्ह' तथा 'व्यास' कवि कृत है। इन दोनों कवियों ने इसे अकारादि-क्रम से सजाया है और नाम रखा है—"गोवर्धन : सतसईया कौ सार"।

२. इस प्रति में लेखक ने कुछ शीर्षक लगाये हैं, जैसे—"करुणा के ६६ दोहा, नखसिख के २१० दोहा, विरह-प्रसंग के ७६ दोहा, मान के ५७ दोहा, मानमोचन के १६ दोहा, ऋतु वर्णन के ४२ दोहा, अन्योक्ति के ६८ दोहा तथा प्रासंगिक ४० दोहा। कुल संख्या पाँच सौ पिचहत्तर ५७५।

जैन कृत (दूसरी प्रति)। १९.--सटीक--रणछोड़ राय दीवान कृत।[1] १४. बा० ब्रजरत्नदास बी. ए. बुलानाला, काशी, तीन-प्रतियाँ। १५. ना० प्र० सभा, काशी। १६.—गीताप्रेस-गोरखपुर, पुसं०--४८०। १७. भुवनेश्वरी-पीठ-पुस्तकालय : गौंडल (सौराष्ट्र), दो प्रतियाँ, सं०—१८४९ वि० की। १८. लूनकरण—जैन पुस्तक-भंडार, जयपुर (राजस्थान), दो प्रतियाँ, पुसं०—२६२ तथा १२६ गुटका। १९. जैन मंदिर : बड़ा तेरह-पंथी-पुस्तकालय, जयपुर (राजस्थान), पुसं०—१६४३।[2] २०. मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र) पुसं०--२४२, १०। २१. पं० प्रह्लाददास शुक्ल, शाहदरा-दिल्ली। २२. श्री द्वारिकाधीश-मंदिर--पाटन (गुजरात)। २३. हेमचंद्र-ज्ञान-भंडार (पुस्तकालय), पाटन, गुजरात तीन प्रतियाँ, यथा--पुसं०—२०४. ९१४६, १५९। ५६५४, २०५। ९४७९, २५१। १२५६३—सटिप्पण। २४. भंडारकर इन्सटीट्यूट महाराष्ट्र, पूना : पुसं०--७८८ तथा १४६८। २५. गुजराती : फार्वस-पुस्तकालय, बबई, पुसं०--४१, सं०—१७१९ वि० की०। २६. राज्य-पुस्तकालय—दरभंगा (बिहार), पुसं०—११८०। २७. मुं०-ब्रजमोहन लाल, टेंउवाँ : प्रतापगढ़ (अवध), सं०--१८४० वि० की। २८. अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय : बीकानेर-राज्य (राजस्थान), तीन प्रतियाँ। २९. बालमुकुंद चतुर्वेदी मानिक चौक, मथुरा पुसं०—१४७, सं—१७९० वि० की। ३०. नवनीत : पुस्तकालय मारू गली मथुरा, आठ-प्रतियाँ : यथा, पुसं०—६।५ सटीक, ६। १६, ७।१२ सटीक, १३।७. सटीक, १३।१०, सटीक, ४४। १४, ४४। १८, सं०—१९९१ वि० की, ५३। १४। ३१. जटाशंकर-कानजी शास्त्री-पुस्तकालाय, राजकोट (सौराष्ट्र), दो प्रतियाँ, यथा—पुसं०--९८, सं० १८४५ वि० की। द्वितीय पुसं०—९७ संस्कृत-टीका सहित। ३२. पं० मोहनवल्लभ पंत, प्रोफेसर—'किशोरी-रमण कालेज, मथुरा, सं—१८९० वि० की प्रति, लेखक—कविराम।[3] ३३. जगन्नाथ बैरागी, भींडर-मेवाड़, सं०—१८१६, वि० की प्रति। ३४. पं० शशिशेखर, शुक्ल, गौरीगंज : सीतापुर (अवध), सं०—१७८० वि० की प्रति। ३५. पं० श्यामबिहारी पांडेय चौकबाजार, बहरा-यच। ३६. भैया संतबकस सिंह, गुथवारा : बहरायच। ३७. पं० कृष्णविहारी

१. यह टीका जब दुबारा खोज की गयी तब देखने में नहीं आयी।
२. यह प्रति सं०—१८३४ वि० की है।
३. "पं० मोहन वल्लभ पंत" आज कल 'वल्लभ-विद्यापीठ : आंनद' (गुजरात) में प्रोफेसर हैं।

मिश्र, लाटसू रोड : लखनऊ। ३८, पं० भालचंद्र मिश्र, सीतलन टोला : लखनऊ। ३९. बा० पद्मबकस सिंह, लवेदपुर (बहरायच)। ४०. आनंद-भवन : पुस्तकालय, बिसवाँ : सीतापुर, सं०—१८२८ वि० की प्रति। ४१. ला० महावीर-प्रसाद पटवारी, सराय खेमा : सीतापुर। ४२. पं० सीतलप्रसाद दीक्षित, सीकरी : सीतापुर, सं०—१८९८ वि० की प्रति। ४३. राज्य-पुस्तकालय : भिनगा (बहरायच)। ४४. सरस्वती-भंडार—काशी-संस्कृत-विश्व-विद्यालय, पंद्रह (१५) प्रतियाँ, पुसं०—४६६५, ४६७०, ४६९२, ४६११३, ४६१६३, ४६१६४, ४६१६७। (पुस्तक-नाम—"सतसैया-भाषा), ४६२-५३, ४६२७३. (सटीक, टीका—'अनवरचंद्रिका'), ४६३४९ (सतसई-टीका, टीक०—अज्ञात),—४६४५५ (सटीक-पद्यमय टीका), ४६५०० (सटीक, टीक०—"जगत सिंह' गद्य-टीका), ४६६१२ (सटीक, टीका०—अज्ञात), ४६६६० (सटीक-संस्कृत टीका), ४६६६१ (सटीक, संस्कृत-टीका)।

मुद्रित—बिहारी : सतसई मूल—१. मूर्त्तिजा प्रेस, आगरा। २. मथुरा प्रेस, आगरा। ३. बंगवासी प्रेस, कलकत्ता। ४. गवर्मेंट प्रिंटिंग प्रेस, कलकत्ता। ५. वाराणसी-प्रेस, काशी। ६. मुंबैउल उलूम प्रेस, मथुरा। ७. नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। ८. वेंकटेश्वर, प्रेस बंबई... आदि...।

*

"बिहारी : सतसई टीकाएँ"

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—अज्ञात। बिहारी के दोहों पर अलंकार-सहित ब्रजभाषा-गद्य-टीका।[१]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० जयमंगल राय, बी० ए०, एल० टी०, गाजीपुर।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—अज्ञात, टीका-ना०—'बिहारी-रत्नाकर' (प्राचीन), रच०—अज्ञात।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—'अजवेश'। प्रास्था०—कन्हैयालाल महापात्र, असनी : फतेपुर।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—अनवर खाँ, टीना०—'अनवर-चंद्रिका', रसं०—१७७१ वि०।[२] प्रास्था०—गीता-प्रेस गोरखपुर, सं०—१६९७ शक की प्रति। २. पं० राम खिलावन भट्ट, पाँडे टोला : रीवाँ (म० भा०)। ३. पं० श्रीपाल, खजूरी : सुलतापुर (अवध), सं०—१८५५ वि० की प्रति।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—'अमरसिंह कायस्थ', राजनगर : छतरपुर, (म० भा०), टीना०—'अमर-चंद्रिका', रसं०—अज्ञात।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—अयोध्याप्रसाद, रसं०—१९३० वि०। प्रास्था०—पं० बद्रीप्रसाद, बाँदीकुई।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—आत्माराम (संस्कृत-टीका)।

बिहारी : सतसई, (सटीक), टीक०—ईश्वर कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर' शिवालाघाट, काशी।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—ईशब खाँ, टीना०—'रस-चंद्रिका।'[३]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा—काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १५, तीसरा—भाग।

२. अवर या अनवर-चंद्रिका "बिहारी : सतसई की टीका" शुभकर्ण कवि के नाम से भी मिलती है, सं०—१८९५ वि० की। सुना जाता है यह टीका दो कवि—'शुभकर्ण' तथा 'कमलनयन' ने लिखी थी।

३. कविवर : बिहारी (रत्नाकर), पृ० २२८।

प्रास्था०—मन्नूलाल-पुस्तकालय, गया (बिहार), रसं०—१८०९ वि०। यह 'नरवरगढ़' के राजा 'छत्र सिंह' के अनुरोध पर लिखी गयी है। २. पं० शुभनारायण तिवारी, सिहाकुंड—बलिया। ३. रत्नाकर-संग्रह, ना० प्र०-सभा—काशी, लिका०—१९७६ वि०।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—उम्मेद राय, रसं०—अज्ञात।[१]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—करण भट्ट, : पन्ना, टीना०—'साहित्य-चंद्रिका', रसं०—१७९५ वि०।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—कुलपति मिश्र, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—हरिनारायण जी प्रोहित, तहवीलदार-रास्ता, जयपुर (रा० स्था०)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—कृष्ण कवि, रसं०—१७८२ वि०, टीना०—"कवित्त-वंध"। प्रास्था०—ठा० श्री नारायण सिंह, हुसेनपुर, पो०—पैतेपुर: सीतापुर, सं०—१८२४ वि० की प्रति। २, राजा श्रीप्रकाश सिंह, मल्लापुर : सीतापुर। ३, पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, फतहाबाद : आगरा।[२] ४. सरस्वती-भंडार, उदयपुर (मेवाड़)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—कृष्ण भट्ट। विशेष विवरण—अज्ञात।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—कृष्णलाल, रसं०—१७३२ वि०। प्रास्था०—बा० जगन्नाथदास—'रत्नाकर', शिवालाघाट—काशी।[३]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—केसरीदास-रामलोचन।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—गंगाधर, टीना०—'उप-सतसईया', रसं०—१९०६ वि०।[४]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—गणपति भारती, रस०—१८६० वि०।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—गदाधर भट्ट (पद्माकर-वंशज), रसं०—अज्ञात।[५]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—गिरिधर।[६]

१. कविवर : बिहारी (रत्नाकर), पृ० २९५।
२. रत्नाकर-कृत—'कविवर : बिहारी', पृ० २२०।
३. रत्नाकर-कृत—'कविवर : बिहारी', पृ० २१४। बिहारी : सतसई की टीकाओं में यह 'प्रथम' टीका मानी जाती है।
४. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २७६।
५. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २७२।
६. कविवर : बिहारी लाल,—रत्नाकर, पृ० २७३।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—गोकुलदास, टीना०—'गोकुल-चंद्रिका', रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—भरतपुर : राज्य-पुस्तकालय ।

बिहारी : सतहसई (सटीक), टीक०—गोपाल शरण टीना०—'प्रबंध-घटना', रसं०—१७२७ वि० ।[1]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—घनश्याम कवि ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—चरणदास, रसं०—१७५० वि० ।[2]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—चंद्रकवि, रसं०—१६९२ वि० ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—छोटूराम, (वैद्यक ··· ···), रसं०—अज्ञात ।[3]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—जोखूराम, रसं०—अज्ञात ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—महंत जानकीप्रसाद, उना०—"रसिक-बिहारी", रसं०—१९२७ वि० । प्रास्था०—कनक-भवन, अयोध्या, टीना०—"रसकौमुदी" । केवल तीन सौ सोलह (३१६) दोहों पर छंद-बद्ध टीका ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—ठाकुर कवि, टीना०—'सतसईया-वर्णनार्थ', रसं०—१८६१ वि० । प्रास्था०—राजा श्रीप्रकाश सिंह, मल्लापुर : सीतापुर । पुस्तक पर—'देवकी—नंदन-तिलक' लिखा है । सं०—१९६३ वि० की प्रति ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—धनीराम, रसं०—अज्ञात ।[4]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—देवकीनंदन, टीना०—'सतसई-वर्णनार्थ', रसं०—१८६१ वि० ।[5]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—धनंजय ।[6]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—प्रतापचंद्र ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—प्रभुदयाल पाँडे (चतुर्वेदी) ।[7] रसं०—अज्ञात ।

१. यह टीका 'नवल किशोर' प्रेस लखनऊ में कई बार छपी है।
यह टीका 'नवल किशोर' लखनऊ प्रेस से प्रकाशित हुई है।
२. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २०७ तथा मि० बं० वि०, अंक—५२९ ।
३. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २८१ ।
४. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २९५ ।
५. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २४३ ।
६. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २७३ ।
७. यह टीका, बंगवासी, प्रेस कलकत्ता से सं० १९५३ वि० में प्रकाशित हुई है ।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—प्रतापसाहि, टीना०—"रत्नचंद्रिका", सं०—१८९६ वि० की। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : बूंदी, (राजस्थान)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—परमानंद (संस्कृत-टीका)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—बिहारी दास।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—दंदन बाबू, रसं०—अज्ञात।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—बिहारी लाल चौबे, टीना०—"बिहारी-भूषण"।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—भानुप्रताप तिवारी, रसं०—१९६० वि०। प्रास्था०—पं० भानुप्रताप मिश्र : चुनार (मिर्जापुर)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—मदन भट्ट।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—मनोराम, टीना०—'प्रताप-चंद्रिका', सं०—१८५० वि० की। प्रास्था०—बा० जगन्नाथ दास "रत्नाकर" शिवाला-घाट, काशी।[1]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—मानसिंह जैन, रसं०—१७३७ वि०। प्रास्था०—बा० जगन्नाथ दास—'रत्नाकर', शिवालाघाट, काशी। सं०—१७७२ वि०, 'गद्य'।[2]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—मानसिंह, जोधपुर (रा० स्था०)। प्राप्र०—सं०—१८२३ वि० की। प्रास्था०—सरस्वती भंडार, उदयपुर (मेवाड़). पुसं०—५५९, सं०—१७७३ वि० की प्रति।[3]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—मावक-मावजी, टीना०—'बिहारी-प्रकाश' सं०—१९२६ वि० की प्रति। प्रास्था०—पुरातत्व-संग्रहालय, जामनगर (सौराष्ट्र)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—यूसुफ़ खाँ, रसं०—१७८० वि० के आस-पास।[4]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—रघुनाथ वंदीजन, रसं०—१८०२ वि०। ये कवि काशिराज 'बरिवंड सिंह' के आश्रित थे। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, रामनगर (काशी)।

१. कविवर : बिहारी (रत्नाकर), पृ० २३९।
२. मानसिंह : जैन की दो टीकाएँ मिलती हैं, दोनों अलग-अलग हैं।
३. कविवर : बिहारी (रत्नाकर), पृ० २५४।
४. कविवर : बिहारी (रत्नाकर), पृ० २२८।

बिहारी : सतसई, (सटीक) टीक०—रणछोड़ कवि (दीवान), रसं०—१८६५ वि०। शब्दार्थ, भावार्थ और अलंकार-कथन सहित।[1]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—राम कवि, (रामजू कवि)।[2]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—रामचंद्र, टीना०—"चंद्र-चंद्रिका"। प्रास्था०—प्रयाग-संग्रहालय, प्रयाग (म्यूजियम)। स०—१९०४ वि० की प्रति, गद्य-पद्यमय टीका।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—रामबकस कवि, उना०—'रामजू', रसं०—१९०६ वि० के आस-पास।[3]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—राजा गोपालशरण, रसं०—१९७५ वि०।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—राधाकृष्ण चौबे, प्राप्र०—सं० १८५० वि० की। प्रास्था०—संकटाप्रसाद अवस्थी, कोटरा : सीतापुर (अवध)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—लल्लू लाल, टीना०—"लाल-चंद्रिका", रसं०—१८७५ वि०।[4]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—लाल बंदीजन (काशी), टीना०—"लाल-चंद्रिका"।[5] प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, अमेठी (अवध)। २. ठा० नौनिहाल-सिंह, काठाँ—उन्नाव। ३, ठा० दुर्गासिंह दिकौलिया : सीतापुर।[7] ४, राज्य-पुस्तकालय : रामनगर काशी।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—वेणीदत्त कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय दरभंगा (विहार), पुसं०—११८१ (संस्कृत-टीका)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—वंशराज, वा वंशमणि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी। टीना०—'रस-चंद्रिका'। बारह अध्यायों में विभक्त।

१. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ०—२५०।
२. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ०—२६८।
३. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ०—२७६।
४. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ०—२४३।
५. बनारस लायट प्रेस काशी से यह टीका स०—१८८७ ई० में छपी है।
६. यह टीका छोटे लाल लक्ष्मीचंद : लखनऊ-द्वारा स०—१९०६ ई० में प्रकाशित हुई है।
७. जार्ज ग्रीयर्सन ने 'मा० व० लि० ऑफ हिंदुस्तान', पृ० २४५ में एक टीका "लाल-चंद्रिका" लाल कवि बनारसी के नाम के साथ भी लिखी है।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—शिरोमणि कवि, टीना०—नहीं, रसं०—१८३४ वि०। प्रास्था०—मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—शुभकरण, टीना०—"युगल-टीका"। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। २, बा० जगन्नाथदास-"रत्नाकर" शिवालाघाट, काशी।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—सरदार कवि काशी, रसं०—१९२१ वि० के आसपास। टीना०—"सतसई-तिलक"।[1]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—सवितानारायण-गणपतिनारायण, टीना०—"भावार्थ-प्रकाशिका" (गुजराती)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—सुरत मिश्र, रसं०—१७९४ वि० के आस-पास, टीना०—"अमर-चंद्रिका"। प्रास्था०—पं० श्यामविहारी मिश्र, गोलागंज, लखनऊ, सं०—१९७३ वि० की प्रति।[2] २. महाराज प्रकाश-सिंह, मल्लापुर : सीतापुर, सं०—१८५८ वि० की प्रति। ३. नीमराना-राज्य-पुस्तकालय, नीमराना, सं०—१८८२ वि० की प्रति। ४. ठा० बलवंत-सिंह, लीलामऊ, पो०—संडीला : हरदोई, सं०—१९६८ वि० की प्रति। ५. सरस्वती-भंडार उदयपुर (मेवाड़)। ६. भंडारकर-इन्स्टीट्यूट, पूना, पुसं०—१४८७। ७ मोटी हवेली, जामनगर (सौराष्ट्र), पुसं०—२४२। १०, दो प्रतियाँ प्रथम सं०—१७९५ वि० की प्रति। ८. बा० जगन्नाथदास —"रत्नाकर" शिवालाघाट, काशी।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—सूरजमल्ल, रसं०—अज्ञात।

बिहारी : सतसई की टीका, रच०—सूर्यमल्ल बारहट, "वंश-भाष्कर" के प्रसिद्ध रचयिता, रसं०—अज्ञात।[3]

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—श्यामाचरण, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० जगन्नाथदास "रत्नाकर", शिवालाघाट, काशी।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—हरजू कवि, टीना०—"हरि-प्रकाश"। प्रास्था०—कविराव मोहन सिंह, उदयपुर (मेवाड़), सं०—१८३४ वि० की प्रति। २. ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१८७६ वि० की प्रति। पुस्तक-नाम—"सप्तसतिका"।

१. यह टीका 'भारत-जीवन प्रेस' काशी, से स०—१८९३ ई० में प्रकाशित हुई है।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १४४७।
कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २२४।
३. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २९५।

प्रास्था०—ला० भगवती प्रसाद, अनूपसहर-बुलंदसहर। २, बा० जगन्नाथदास-रत्नाकर, शिवालाघाट, काशी।[1] ३, पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर (राजस्थान)।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—हिमाचल सिह कायस्थ, रसं०—अज्ञात।

बिहारी : सतसई पर 'कुंडलिया' साहित्य :

कर्त्ता—पं० अंबिका दत्त व्यास।[2]

कर्त्ता—ईश्वरीप्रसाद कायस्थ, रसं०—अज्ञात।[3]

कर्त्ता—गंगाधर भट्ट।

कर्त्ता—जुल्फ़कार नबाब, रसं०—१९०३ वि०।[4] प्रास्था०—सरस्वती भंडार, रामनगर, काशी, सं०—१९०३ वि० की प्रति। २. ना० प्र० सभा काशी। ३. रा० क० अंबिकेश, खलगा-रीवाँ (बघेलखंड)।

कर्त्ता—पठान सुल्तान, रसं०—१७६१ वि० के आसपास।

कर्त्ता—जोखूराम पंडा : काशी, रसं०—१९६५ वि० के आस-पास।[5]

कर्त्ता—भानुप्रताप तिवारी।

कर्त्ता—साहबजादे बाबा सुमेर सिंह, पटना, रसं०—१९५५ वि०।

कर्त्ता—भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र।

कर्त्ता—कवित्त, सवैया छंदों में टीका :

रच०—कृष्ण कवि (माथुर चौबे मथुरा)।

रच०—जानकी प्रसाद (रसिकेश), टीना०—"रस—कौमुदी'।

रच०—ईश्वर कवि, रसं०—१९६१ वि०।[6]

'संस्कृत' : टीका

आर्या : गुंफ, रच०—हरिप्रसाद, रसं०—१८२७ वि०। बिहारी-कृत दोहों का संस्कृत भाषा में रूपांतर।[7] २. आत्माराम-कृत, टीना०—"शृंगार-

१. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २३२।
२. यह 'भारत' जीवन यंत्रालय, काशी से सं०—१९५५ वि० में छपकर प्रकाशित हुआ है।
३. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २६९।
४. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २७१।
५, ६. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० ३०४। ३१२।
७. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २९७।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—हरिचरणदास, रसं०—१८३४ वि०।

सप्तशती", रसं०—१९२५ वि०। बिहारी-कृत दोहों का संस्कृत-भाषा में रूपांतर।

अन्य : **संस्कृत-टीका,** दे०—बिहारी-बिहार : "अंबिकादत्त व्यास" रसं०—अज्ञात।[1]

संस्कृत : **गद्य टीका,** रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० शिवशंकर-सहाय, छपरा, सं०—१८४४ वि० की प्रति।[2]

संस्कृत : टीका, रच० परमानंद भट्ट, रसं०—१९२५ वि०।[3]

संस्कृत : टीका, रच० वेणीदत्त झा। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय : दरभंगा (बिहार)।

उर्दू : टीका

बिहारी : **सतसई,** टीक०—जोषी आनंदो लाल (फ़ारसी-टीका), टीना०—सफरंगे-सतसई, रस०—१८९३ ई०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय-अलवर (रा० स्था०)।

बिहारी : सतसई, टीक०—देवीप्रसाद—"पीतम" : टीना०—"गुलदस्तए-बिहारी", प्रका०—साहित्य-सेवासदन, काशी, मु०—नेशनल प्रेस, काशी, सं०—१९८१ वि०।

गुजराती : टीका

बिहारी : **सतसई** (सटीक), टीक०—सवितानारायण-गणपतिनारायण, अहमदाबाद, (गुजरात), टीना०—'भावार्थ-प्रकाशिका', रसं०—१९६९ वि०। प्रास्था०—वर्नाक्यूलर सोसायिटी, भद्र : अहमदाबाद।

आधुनिक टीकाएँ :

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—जार्ज ग्रीयर्सन।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—पं० ज्वालादत्त शर्मा, रसं०—१८५४ वि०। टीना०—'भावार्थ-प्रकाशिका', प्र०मु०—वेंकटेश्वर प्रेस : बंबई, सं०—१९६० वि०।

१. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २९८।
२. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० २९६।
३. कविवर : बिहारी-रत्नाकर, पृ० ३००।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—पं० पद्मसिंह शर्मा, टीना०—"संजीवन-भाष्य"।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—ला० भगवानदीन, टीना०—"बिहारी-बोधिनी" प्र०—साहित्य-सेवा-सदन काशी, मु०—नेशनल प्रेस काशी, सं० १९८२ वि० प्रथमवार। (यह पुस्तक अनेकबार छपी है, पाँचवाँ-संस्करण हमारे देखने में आया है जो "सरला प्रेस, काशी में सं०—२००३ वि० में छपा है।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—बा० जगन्नाथदास "रत्नाकर", टीना०—"बिहारी-रत्नाकर", सं०—दुलारेलाल भार्गव, प्र०—गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, मु०—गंगा-फायन आर्ट प्रेस, लखनऊ, सं०—१९८३ वि०। नवीन-संस्करण, प्र०—ग्रंथकार प्रकाशन, शिवालाघाट काशी, मु०—अमरभारती-यंत्रालय काशी, स०—१९५१ ई०।

बिहारी : सतसई (सटीक), टीक०—रामवृक्ष शर्मा "बेनीपुरी", प्र०—हिंदी-पुस्तक-भंडार : लहरिया-सराय, दरभंगा, मु०—लक्ष्मीनारायण-प्रेस, काशी, सं०—१९८२ वि०।*

सतसई पर कुछ नयी पुस्तकें :

कविवर बिहारी, ले०—स्वर्गीय बा० जगन्नाथदास "रत्नाकर", संपा०—रामकृष्ण एम० ए०, प्र०—ग्रंथकार, शिवालाघाट, बनारस, स०—१९५३ ई०। पुस्तक सात प्रकरणों में विभक्त है। बा०—जगन्नाथदास "रत्नाकर" कृत "बिहारी : रत्नाकर", अर्थात् बिहारी-सतसई टीका की विशद "भूमिका" है।[१] मु०—सुलेमानी प्रेस, बनारस।

बिहारी, ले०—विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्र०—वाणी-वितान, ब्रह्मनाल : बनारस, मु०—विद्यामंदिर प्रेस, बनारस, सं०—२०१० वि०। पुस्तक, विस्तृत भूमिका के साथ—"तदीय वांमय, मूल-ग्रंथ (सतसई) तथा शेष-संग्रह से संनद्ध है।

बिहारी : परिचय, ले०—द्वारिकानाथ चतुर्वेदी, प्र०—श्री माथुर-चतुर्वेदी सभा, कलकत्ता, मु०—सिंह प्रेस, कलकत्ता, सं०—२०११ वि०। यह एक छोटी-सी पुस्तक है—बिहारी पर। इतनी अल्प-कृति में सब कुछ बता देना इसकी विशेष खूबी है।

१. यह पुस्तक अभी देखने में नहीं आयी है।

बिहारी और उनका साहित्य, ले०—डा० हरवंश लाल शर्मा, प्र०—भारत-प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ ।

मुक्तक-काव्य परंपरा और बिहारी, ले०—राम सागर त्रिपाठी एम० ए०, प्र०—अशोक-प्रकाशन, दिल्ली, । आगरा : विश्व-विद्यालय की "पी० एच० डी०" के लिये लिखा गया—"शोध-प्रबंध" ।

हिंदी-काव्य में श्रृंगार-परंपरा और महाकवि बिहारी, ले०—डा० गणपति चंद्र गुप्त, प्र०—विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, मु०—आगरा : फाइन आर्ट प्रेस, आगरा । सं०—१९५९ ई० । चार-खंडों में विभाजित, प्रथम खंड में—"सैद्धांतिक विवेचन", द्वितीय खंड में—"ऐतिहासिक-अनुशीलन", तृतीय खंड में—"हिंदी काव्य में श्रृंगार-परंपरा", चतुर्थ खंड में—"महा कवि विहारी और श्रृंगार रस"—इत्यादि. . . ।

अन्य सतसई :

बुधजन : सतसई, रच०—बुधजन, रसं०—१८९५ वि० । प्रास्था०—लाला-प्रभूदयाल, आलमनगर, लखनऊ, सं०—१९०५ वि० की प्रति । भक्ति-काव्य ।

भूपति : सतसई, रच०—रा० गुरुदत्त सिंह, उना०—'भूपति : अमेठी (सुल्तानपुर)', रसं०—१७९१ वि० । प्रास्था०—पं० कृष्णविहारी मिश्र, सिधौली-सीतापुर, सं०—१९५८ वि० की प्रति ।

मतिराम : सतसई, रच०—मतिराम त्रिपाठी (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—पं० शिवदुलारे दुबे, हुसेनगंज : फतेपुर । २. याज्ञिक-संग्रहालय : अलीगढ़, (खंडित प्रति) । ३. भगीरथप्रसाद मिश्र, बटेश्वर आगरा ।

रसनिधि : सतसई ।

रामसहाय : सतसई ।

विक्रम : सतसई, रच०—राजा विक्रमाजीत-विजयबहादुर : चरखारी, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय : चरखारी (म० भा०) ।

विक्रम : सतसई (सटीक), टीक०—विहारी लाल (मतिराम : प्रसिद्ध वंशज),

श्रृंगार : सतसई, रच०—रामसहाय, रसं०—१८६७ वि० के आस-पास । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : रामगर काशी ।

सतसैया ।

सिद्धराय : सतसई ।

रतन-हजारा, रच०—रसनिधि, संपा०—बा० जगन्नाथप्रसाद कायस्थ : छतरपुर, प्र०—बा० रामकृष्ण वर्मा, मु०—भारत जीवन प्रेस, काशी, स०—१८-९२ ई०।

सतसई-सप्तक, अर्थात् सात सतसईयाँ—"तुलसीदास, बिहारी, मतिराम, रसनिधि, रामसहाय, वृंद और विक्रम", सं०—बा० श्यामसुंदर दास बी० ए०, प्र०—हिंदुस्तानी-एकेडेमी प्रयाग, मु०—इंडियन प्रेस, प्रयाग, सं०—१९३१ ई०।

कुछ संग्रह-ग्रंथ

—"श्रृंगार-रस"

दोहासार-संग्रह, संक०—दाराशिकोह (बादशाह शाहजहाँ के पुत्र), सं०—१७१०-वि०, लिसं०—१७९४ वि० । श्रृंगारादि छः विषयों पर १७७२ दोहों का संग्रह । प्रास्था०—डा० भवानीशंकर याज्ञिक, लखनऊ ।[1]

अकबर : संग्रह (फुटकर—सवैया और दोहा), संक०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक पुस्तकालय : ना० प्र० सभा काशी, पुसं०—३२.३ ।

कवित्त : संग्रह, कवि जयकृष्ण कृत । प्रास्था०—स्टेट पुस्तकालय, जोधपुर (राजस्थान), श्रृंगाररस के कवित्त । रसपुंज, रसचंद्र, भूषण, रामराव, कुंदन, मकरंद, बलभद्र, वृंद तथा काशीराम के भी कवित्त ।

कवित्त : दोहरा-संग्रह, संक०—अज्ञात। प्रास्था०—महाबीर सिंह गहलौत, जोधपुर (रा० स्था०), पुसं०—४१, ४४१ । आलम, कृष्णदास, तुलाराम, गंग, रघुनाथ, रसिक, मुकुंद और मंडन कवि के कवित्त-दोहों का संग्रह ।

कवित्त: दोहा-संग्रह, संक०—अज्ञात, संक—अज्ञात । प्रास्था०—दीनदयाल गुप्त, एम० ए०, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ । इस संग्रह में लगभग चौबीस (२४) कवियों के कवित्त, सवैया तथा दोहों का संग्रह है। कवित्त-सवैया प्रथम और दोहों का संग्रह बाद में है । कवि-नाम इस प्रकार हैं—आलम, शेख़, वेनी, व्रह्म, नारायण, मंडन, जगन, परबत, अनंत, अभिमन्यु, गंग, नवल-सुजान, आनंद, जगत्प्रसिद्ध, कवि नायक, भगवंत, अकबरशाह, दयादेव, रहीम, गोकुल सुकवि, संमन, एदिल, कासिम और तोलन या लालन व 'ललन'...। पुस्तक में दो-चार कवियों के आश्रय-दाताओं का नामोल्लेख भी किया गया है, जैसे—मंडन कवि—'खान तुरकमान' के आश्रित, अनंत—'जहाँगीर' के, अभिमन्यु—'अब्दुल रहीम खानखाना' के, गंग—'दानिशाह—अकबर बादशाह का पुत्र 'दानियाल' के, नवलसुजान—"दाराशाह" (शाहजहाँ का प्रथम पुत्र) के, कवि नायक—"शाहजहाँ के, जगत् प्रसिद्ध—

१. इस पुस्तक के कितने-ही नाम मिलते हैं, जैसे : "सत्कविराजोक्ति : सार संग्रह" (सं०—१७२० वि० की प्रति)। दूहा : सार (सं०—१७२० वि० की प्रति) । दोहा-सार, सार-संग्रह और दोहा : स्तव-संग्रह इत्यादि....।

जहाँगीर के आश्रित-इत्यादि...। इस जगत् प्रसिद्ध कवि ने जहाँगीर के उस फरमान का भी उल्लेख इस पुस्तक में किया है जिसमें हिंदुओं को माला, कंठी, तिलक—आदि न रखने की आज्ञा दी गयी थी। इसका विरोध भी काफी हुआ, इस विरोध के नेता थे—श्री वल्लभाचार्य वंशज गो० विट्ठलनाथ जी के चतुर्थ पुत्र, गो० गोकुलनाथ जी (गोकुल) इत्यादि।

कवित्त-पद : संग्रह, संक०—अज्ञात। प्रास्था०—पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर (रा०-स्था०)। बयालिस (४२) कवियों के कवित्त और पदों का संग्रह।

कवित्त : रत्न-मालिका, संक०—रामनारायण ब्रह्म—"रस-रास": जयपुर (रा०-स्था०), रसं०—१८२७ वि०। प्रास्था०—लक्ष्मणदास जोधपुर (रा० स्था०), पुसं०—१।९३। छंस०—९०९ जिसमें १०८ स्वयं कर्त्ता के, अन्य—८०१ पुराने विविध कवियों के, विषय—शृंगार।

कवित्त-संग्रह, किशोर कृत, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ठा० नौनिहाल सिंह सेंगर, काँठा—उन्नाव, पुसं०—२३।२१२। संग्रह : किशोर, पद्माकर, मंडन, भूधर, महबूब इत्यादि।

कवित्त और पद-संग्रह, संक०—अज्ञात, लिका०—१९०४ वि०। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी। छत्रसाल और अन्य कवियों का संग्रह।

कवित्त : काशीराम, रच०—काशीराम (संग्रह), नायिका-भेद। सं०—१७८७-वि० की प्रति। प्रास्था०—अयोध्यासिंह जी उपाध्याय, आजमगढ़।

कवित्त : संग्रह, संक०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी। संग्रह—'ठाकुर, गंग, पद्माकर, देव और मतिराम—इत्यादि की रचनाएँ।

कवित्त : संग्रह, संक०—बेनी कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्थ०—ठा० नौनिहाल सिंह सेंगर, काँठा : उन्नाव, पुसं०—२३।२१२।

कवित्त : संग्रह, संक०—अज्ञात। रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पुसं०—४१।४३७। हुलासी, रसखान, निवाज, आलम इत्यादि की रचनाएँ।

कवित्त : संग्रह, संक०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० श्यामसुंदर, नंदगाँव (मथुरा)। विभिन्न कवियों के कवित्त-सवैया।

कवित्त : संग्रह, संक०—अज्ञात। प्रास्था०—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

कवित्त : संग्रह "रसखान", रच०—रसखान। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी। सं०—१९७६ वि० की प्रति।

कवित्त : संग्रह, सेनापति कृत। प्रास्था०—ना० प्र० सभा, काशी।

कवित्त : सागर, संक०—अज्ञात, संस०—अज्ञात। प्रास्था०—ना० प्र० सभा : काशी, विभिन्न कवियों के राम-चरित्र विषयक—कवित्त।

कवित्त : सार, संक०—गोविंद, संस०—अज्ञात। प्रास्था०—पुरातत्व-संग्रहालय, प्रयाग। देव, कालिदास, केशव, ठाकुर, भवानी, घासीराम—इत्यादि के षट् ऋतु-विषयक कवित्त-सवैयों का संग्रह।

कृष्णलीलामृत : लहरी (संग्रह ग्रंथ), संक०—कृष्णप्रसाद भट्ट। प्रास्था०—कला-भवन, ना० प्र० सभा : काशी। बारह (१२) तरंगों में पूर्ण। पचास (५०) कवियों की कविताओं का संग्रह।

फुटकर कवित्त, संक०—मकरंद कवि, संस०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य-पुस्तका-लय—जोधपुर (रा० स्था०)। रघुनाथ, पर्वत, किशोरी, महाराज, गंग, देव—इत्यादि की रचनाओं का संग्रह।

फुटकर : संग्रह, गणेश कवि कृत, संस०—१८४२ वि०। प्रास्था०—ठा० नौनिहाल सिंह सेंगर, काँठा—उन्नाव। रघुनाथ, कर्ण, संपति, केशव, कृष्णलाल, देवीदास, घनश्याम, प्रवीण, देवकीनंदन, गोपालदास, लघु. गो० तुलसीदास, पुंडरीक, हुसेन, सुलतान, खेम, मतिराम, 'रसखान', मंसाराम, रसराज, वीर, राय, तोष, दूलह, श्रीधर, शिव, परसाद, वंशीधर, संगम, रहीम, नागर, भोजराज, संमन, कमलनाभ, रघुनाथ, शंभु, नवल, घनानंद, कालिदास, कविंद्र, चिंतामणि, मुरलीधर, श्रीपति, बोधा, धीर, मुबारक, बेनी, ब्रह्म (बीरबल), लाल, गोविंद, मोहन, मकरंद, अब्दुल्ला खाँ, बेताल, दास, बकसी, मिश्र, प्राणनाथ, पुहकर, शेखर, नरोत्तम, गंग, जगदीश, श्याम, नाथ, मीरन, सेनापति, प्रीतम, सोमनाथ, रूप, गंगापति, निपट निरंजन, अवध, दिनेश, छत्रपति, मदन और भोज के कवित्त-सवैयों का संग्रह।

भाषा-सार : संग्रह, संक०—चतुर्भुज मिश्र, संस०—१७०२ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : काँकरौली—मेवाड़। इस संग्रह में १२०० छंद हैं, जिनमें १६० चतुर्भुज मिश्र के अन्य विविध कवियों के, जैसे—"गंग, केशव, अनंत, सुंदर, प्रसिद्ध, सुनविदाई, बीरबल, रामकृष्ण, गोपीनाथ मिश्र, प्रेमनाथ मिश्र, शंकर मिश्र, नरोत्तम मिश्र, गोवर्धन मिश्र, इत्यादि।

संग्रह, संक०—अज्ञात, संस०—अज्ञात। तुलसी, गंग, बिहारी और सुंदर कवियों के कवित्त, सवैया तथा दोहा-संग्रह।

संग्रह, संक०—केवल कृष्ण, उना०—'कृष्ण कवि' संस०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० भवदेव शर्मा, कुरावली (मैनपुरी)। विविध कवियों के कवित्त-सवैयों का संग्रह।

संग्रह, संक०—शिवप्रसाद सिंह, संस०--अज्ञात। प्रास्था०—बा० रणवीर सिंह जमींदार, खानीपुर, पो०—तालाव वक्सी (लखनऊ)। पुरुषोत्तम, लेखराज, तोष, नरहरि इत्यादि के कवित्त।

संग्रह, संक०—अज्ञात। प्रास्था०--ना० प्र० सभा : काशी। संग्रह--तोषनिधि, ठाकुर, पुखी, लोचन, रामजी सुकवि इत्यादि...।

संग्रह : कवित्त फुटकर, संक०--अज्ञात, रसं०--अज्ञात। प्रास्था०--ना० प्र० सभा : काशी। देव, ठाकुर, श्री गोविंद, सोमनाथ, कवि सूदन, मतिराम, शिरोमणी इत्यादि के कवित्त-सवैया।

नख-सिख : "साहित्य"

"नख-सिख"

वर्णनीय-विषय :

१. "नख, अंगुली, लाली, पद-तल, महावर, मेहदी, नूपुर, बिछिया (पद-उंगलियों के भूषण-विशेष), चूरा, तरोछा (पद-भूषण-विशेष), जेहरि, चरण, पिंडरी, नितंब, जंघा, स्मर-मंदिर, कटि, छुद्रघंटिका (कटि-भूषण), नाभि, त्रिवली, रोमराजी, कुच, कुचाग्र की अरुणता, उनकी श्यामता, फुनगी, कुच-संधि, विविध प्रकार की अँगिया, कंचुकी, कुच-तिल, भुज, आँगुरी, इन दोनों के आभूषण, मेहदी, कंठ, कंठ-त्रिवली, कंठ-भूषण, मुख, ठोड़ी, ठोड़ी-गाड़, तिल, ओष्ठ, दंत, पान की लाली, मिस्सी, जिह्वा, चिबुक, चिबुक-गाड़ और तिल, नेत्र, पलक, बरुनी, पुतली, कोए, कोए की लाली, काजल, कटाक्ष, सूधी चितवन, तिरछी चितवन, नेत्र-लाली, नेत्र-तिल, नासिका, नासिका-भूषण : नथ, बुलाक, सींक, भ्रू (भवें), जुड़ी भ्रू, भाल, बिंदी, खौर, दिठोंना, समग्र मुख-वर्णन, हास्य, मुख-सुगंध, वाणी, केस, माँग, पाटी, जूड़ा, सिरोभूषण—इत्यादि।"

२. सिख-नख : 'नख-सिख' से विपरीत—उल्टा, अर्थात् 'सिर' से लेकर 'पद-नख' तक का वर्णन।

नख-सिख : "साहित्य"

अंग-चंद्रिका, रच०—खूबचंद राठ, उना०—"रसीले", रसं०—१९२० वि०।[1]

अंग-दर्पण, रच०—गुलाम नबी, उना०—'रसलीन', रसं०—१७९४ वि०।[2] प्रास्था०—राज्य पुस्तकालय, पन्ना (मध्यप्रदेश)।[3]

अंग-वर्णन, रच०—अज्ञात।[4]

अंगादर्श, रच०—ठा० रंगनारायणपाल सिंह।[5]

अंगादर्श, रच०—रामपाल सिंह।

अंगादर्श, रच०—ठा० विश्वेश्वरवख्श सिंह।[6]

अलक-सतक, रच०—मुबारक अली बिलग्रामी, रसं०—१६४० वि०।

उ

उदैराज : दोहावली, रच०—उदैराज, रसं०—१६७० वि० के पास। प्रास्था०—महावीर सिंह गहलौत, पुस्तक-प्रकाश जोधपुर—जोधपुर (मारवाड़)। नख-सिख के साथ संयोग-वियोग वर्णन।

उपमालंकार, अर्थात् नख-सिख वर्णन, रच०—बलवीर कवि, रसं०—१८७० वि०। प्रास्था०—पं० वंशगोपाल, दीनापुर : एटा।

उपवन-विनोद (अर्थात् नख-सिख वर्णन), रच०—भोजराज, रसं०—१८९७-वि०।

१. यह सं०—१८९० ई० में आगरे के 'विजय-विलास' प्रेस में छपी है।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ६५१। यह स०—१९०५ ई० में काशी के 'भारत-जीवन' प्रेस में छपी है। इससे भी प्रथम यह स०—१८८५ ई० दिल्ली में छपी थी।
३. दे०—सूचना—ना० प्र० सभा : काशी, सं०—२०१८ वि०। तदनुसार प्राप्र०— सं०—१९४१ वि० की।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९०६ ई०।
५. यह सं०—१८९३ ई० में 'भारत-जीवन' प्रेस काशी में छपी है।
६. यह स०—१८९४ ई० में काशी के 'भारत-जीवन' प्रेस में छपी है।

क

कर्ण-मंजुमणि, रच०—करनेश (सौराष्ट्र), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मित्र-मंडल पुस्तकालय, पोरबंदर (सौराष्ट्र)।

कवित्त : कुसुम-वाटिका, रच०—मृगेंद्र कवि, रसं०—१९१७ वि० (नख-सिख तथा षट्ऋतु वर्णन)।

कृ

कृष्ण जू कौ नख-सिख, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध) मथुरा, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना०प्र० सभा, काशी। २. नानूराम ब्रह्मभट्ट, जोधपुर (राजस्थान)। ३. ठा० हरीबकस सिंह रईस, कुठारिया : प्रतापगढ़ (अवध)।

गु

गुनवंती : चंद्रिका (अर्थात् नख-सिख वर्णन), रच०—चंदरस कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना० प्र० सभा : काशी।

गो

गोविंद : विनोद (अर्थात् नख-सिख वर्णन), रच०—गोविंद कवि। प्रास्था०—इतिहास-समिति—रीवाँ (बघेलखंड)।

च

चरण-चंद्रिका, रच०—रामचंद्र, रसं०—१८३० वि०।[1]

छ

छवि-रत्न, रच०—कालीदत्त, उना०—"छविनागर" उरई के, लिका०-१९५२ वि०। प्रास्था०—चंद्रशेषर दुबे, बहनेवा, पो०—बिसवाँ (सीतापुर)।[2]

छवि : सरोजनी, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई सीहौर : (सौराष्ट्र), रसं०—१९५४ वि०।

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ७८१।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९२६ ई०, पृ० ३४८।

ज

जगत : प्रकाश (अर्थात् नख-सिख वर्णन), रच०—महाराज जगत सिंह, रसं०—१८६५ वि० । प्रास्था०—राज्य पुस्तकालय, भिनगा (बहरायच) ।[1]

जु

जुगल : नख-सिख, रच०—प्रताप शाहि, रसं०—१८९६ वि० ।[2]

ति

तिलक-बिंदु : विनोद, रच०—कवि पजनेश, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—हिं०-सा० सम्मेलन, प्रयाग, पुसं०—७९ ।

तिल-सतक, रच०—जगतनंद वा जुगतराय, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी । २. ठा० विक्रम सिंह, सयपुरा, पो०—तौरा : उन्नाव । ३. श्री देवकीनंदनाचार्य : पुस्तकालय—कामवन (भरतपुर) ।[3]

तिल-सतक, रच०—मुबारक अली बिलग्रामी, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—हनुमान पुस्तकालय, सलकिया : हबड़ा (कलकत्ता), पुसं०—डी० ६, १०३४६ ।

न

नख-सिख, रच०—अंगराय (बिलग्राम : हरदोई के) । रसं०—१८८६ वि०

नख-सिख, रच०—अंबुज, रसं०—१८७५ वि० ।[4]

नख-सिख, रच०—अज्ञात । प्रास्था०—अभय-जैन ग्रंथालय : बीकानेर (राजस्थान) ।[5]

नख-सिख, रच०—अज्ञात । प्रास्था०—अभय-जैन ग्रंथालय : बीकानेर (राजस्थान) ।[6]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ६९३ ।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९०६ ई० ।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ तथा १९३२ ई०, पृ० ३४४, १७५ ।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८२ ।
५-६. ये दोनों पुस्तकें विभिन्न हैं ।

नख-सिख, रच०—अज्ञात। प्रास्था०—जिन-चरित्र-सूरि संग्रह, बीकानेर (राजस्थान)।

नख-सिख, रच०—अनुर्नेन, रसं०—१६९६ वि०।[1]

नख-सिख, रच०—अबदुर्रहमान मिर्जा, उना०—'प्रेमी', प्राप्त-प्रति सं०—१९१५ वि० की।

नख-सिख, रच०—आजम, रसं०—१८६६ वि०।[2]

नख-सिख, रच०—ईश्वर कवि : धौलपुर (रा० स्था०)।

नख-सिख, रच०—उत्तम रसिक, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—भुवनेश्वरी : पीठ-पुस्तकालय. गौंडल (सौराष्ट्र)।

नख-सिख, रच०—उम्मेदसिंह, उना०—उमेद, रसं०—१८५३ वि०।[3]

नख-सिख, रच०—कलानिधि (लाल-कलानिधि), रसं०—१६७२ वि०।[4]

नख-सिख, रच०—कान्ह कवि (राजनगर : बुंदेलखंड), प्राप्र०—सं०१९१४-वि० की। प्रास्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी।[5]

नख-सिख, रच०—कान्हू लाल गुर्दा।[6]

नख-लिख, रच०—कामता प्रसाद (असोथर), रसं०—१९११ वि०।[7]

नख-सिख, रच०—कालिका प्रसाद, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय भिनगा : बहरायच, स०—१८८२ ई० की प्रति।[8] यह पुस्तक 'रामचंद्र जू कौ नख-सिख' है।

नख-सिख, रच०—काली दत्त, रसं०—अज्ञात।

नख-सिख, रच०—कुलपति मिश्र (प्रसिद्ध), प्राप्त-प्रति सं०—१९१५ वि० की।[9]

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ११५६।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० १०६५।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ९३८।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ७८४ तथा ८१६।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९३२ ई०, पृ० २०२ तथा मि० बं० वि०—३, पृ० १२९३।
६. यह पुस्तक 'मागध सुभंकर' प्रेस गया (बिहार) में सं०—१८९३ ई० में छप चुकी है।
७. मि० बं० वि०—३, पृ० ९३१।
८. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ८०२।
९. मि० बं० वि०—२, पृ० ४७२।

नख-सिख, रच०—कुशल सिंह, प्राप्त-प्रति सं०—१९११ वि० की। प्रास्था०—वालगोविंद हलवाई, नवाबगंज—बाराबंकी।[१]

नख-सिख, रच०—केशवदास (प्रसिद्ध), सं०—१८५३ वि० की प्रति। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़), पुसं०—६२-११।

नख-सिख (सटीक), रच०—केशवदास (प्रसिद्ध). टीक०—अज्ञात। प्रास्था०—अभय-जैन ग्रंथालय, बीकानेर (राजस्थान)।

नख-सिख, रच०—कृपाराम, रसं०—१८५७ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार उदयपुर (मेवाड़), पुसं०—२००।

नख-सिख, रच०—कृष्ण कवि (कृष्ण भट्ट), रसं०—१८४० वि०। प्रास्था०—ला० वद्रीदास वैश्य, वृंदावन (मथुरा)।[२]

नख-सिख, रच०—खुमान कवि बंदीजन (चरखारी: बुंदेल खंड), उना०—'मान', रसं०—१८४० वि०।

नख-सिख, रच०—गोकुल कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, काँकरौली (मेवाड़), पुसं०—११०। सं०—१९३३ वि० की प्रति।

नख-सिख, रच०—गोविंद कवि, रसं०—१८९४ वि०। प्रास्था०—पं० चुन्नीलाल वैद्य, ढुंढपाणि, काशी। इस पुस्तक के नाम—'उपमा-रत्नाकर' तथा 'वृष-भानु-नंदिनी-सिख-नख' भी मिलता है तथा कवि नाम—"श्री गोविंद"।[३]

नख-सिख, रच०—गोविंद-गिल्ला भाई (सौराष्ट्र)।

नख-सिख, रच०—गोविंद कवि (दूसरे)।

नख-सिख, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध), रसं०—१८८० वि०। प्रास्था०—राज्य-पुस्तकालय, बलरामपुर (गोंड़ा)।[४] २—ठा० नौनिहाल सिंह सेंगर, काँठा : उन्नाव।[५] ३—ठा० हरीबकस सिंह : कुठारिया उन्नाव, सं०—१८८४ वि० की प्रति।[६] यह कृति "कृष्ण जू कौ नख-सिख" है।

नख-सिख, रच०—घनश्याम कवि, रसं०—१८०५ वि०। प्रास्था०—अभय-जैन-

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ९६३ तथा ११५६।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९०९ तथा १९१२ ई०, पृ० २२७ अंतिम रिपोर्ट।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ९३९।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९२० ई०, पृ० २४०।
५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९२३ ई०, पृ० ६०३।
६. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९२९ ई०, पृ० २९२।

ग्रंथालय : बीकानेर (राजस्थान)। इसका नाम—"राधा जू कौ सिख-नख" भी है।

नख-सिख, रच०—घासीराम, रसं०—१६४५ वि०।

नख-सिख, रच०—चंदनराय, रसं०—१८६४ वि०। प्रास्था०—लालमणि वैद्य, पबायाँ : शाहजहाँपुर।[1]

नख-सिख, रच०—चंद रसकंद, रसं०—अज्ञात।

नख-सिख, रच०—चंद्रशेखर बाजपेयी, रसं०—१८८० वि०।[2]

नख-सिख, रच०—छितिपाल, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।

नख-सिख, रच०—जगतसिंह (भिनगा-राज्य), रसं०—१८७७ वि०। प्रास्था०—बा० महादेव सिंह, बी० ए० (वकील), फैजाबाद। २. राज्य-पुस्तकालय, भिनगा-बहरायच (दो प्रतियाँ)।[3]

नख-सिख, रच०—जवानसिंह, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—द्वारिकाधीश मंदिर, पाटन (गुजरात)। इसे 'सिख-नख' भी कहते हैं।[4]

नख-सिख, रच०—जवाहरराय (बंदीजन), रसं०—१८४५ वि०।[5]

नख-सिख, रच०—तारापति, रसं०—१७९० वि०।[6]

नख-सिख, रच०—तोषनिधि कवि, रसं०—१७९४ वि० के आस-पास।[7]

नख-सिख, रच०—दिनेश कवि (टिकारी : बुंदेलखंड), रसं०—१६५० वि०।[8] आपकी उपयुक्त रचना सं०—१८८३ वि० के आस-पास भी कही-सुनी जाती है।

नख-सिख, रच०—दिवाकर भट्ट, रसं०—अज्ञात।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, सं०—१९१२ ई०, पृ० ४४।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ९१६। यह सं०—१८९४ ई० में 'भारत-जीवन' प्रेस, काशी में प्रकाशित हुआ है।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९२३ ई०, पृ० ६९४।
४. मि० बं० वि०—२, पृ० ८२८।
५. यह सं०—१९६५ वि० में 'वेंकटेश्वर' प्रेस, बंबई में छप चुका है।
६. मि० बं० वि०—२, पृ० ७६७।
७. मि० बं० वि०—२, पृ० ४१३।
८. मि० बं० वि०—२, पृ० ८८२।

नख-सिख, रच०—देवकवि (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—तालुकेदार सुदर्शन सिंह, सुजाखर, पो०—लक्ष्मीकांत गंज : प्रतापगढ़ (अवध)।[1]

नख-सिख, रच० देवकीनंदन शुक्ल (मकरंदपुर : कानपुर), रसं०—१८७० वि०।[2]

नख-सिख, रच०—देवकीनंदन बंदीजन, रसं०—अज्ञात।

नख-सिख, रच०—देवीदीन बिलग्रामी, प्राप्र० सं०—१९४८ वि० की।[3]

नख-सिख, रच०—नवनीत कवि (चौबे : मथुरा)। प्रास्था०—नवनीति-पुस्तकालय, मथुरा।

नख-सिख, रच०—नबी कवि (वृंदावन), रसं०—१९०४ वि०। प्रास्था०—ला० वासुदेव सहाय, कोसी कलाँ (मथुरा)।

नख-सिख, रच०—नवीन कवि (वृंदावन), रसं०—ज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।

नख-सिख, रच०—नाथ कवि, रसं०—१८२९ वि०।

नख-सिख, रच०—नूर कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। यह संग्रह-ग्रंथ है, अपने नामानुसार इसमें अनेक कवियों की रचनाओं का संग्रह है।

नख-सिख, रच०—नृप शंभु, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बक्शी गयाप्रसाद, उपरहटी : रीवाँ, सं०—१८३२ वि० की प्रति।[4]

नख-सिख, रच०—पजनेश कवि (पन्ना-बुंदेल खंड), रसं०—१८९९ वि०।

नख-सिख, रच०—परम बंदीजन (महोबा : बुंदेल खंड), रसं०—१८७९ वि०।[5]

नख-सिख, रच०—परबत कवि (ओड़छा निवासी, जाति-सुनार), रसं०—१७१०-वि० के पास।

नख-सिख, रच०—परमानंद (अजयगढ़ : बुंदेल-खंड), रसं०—१८६४ वि०।

नख-सिख, रच०—परसुराम, रसं०—अज्ञात।[6] संभवत : रसं०—१६६० वि०।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२६ ई० पृ० २१९।
२. मि० बं० वि०—२, पृ० ७९३।
३. मि० बं० वि०—३, पृ० १२९५।
४. यह सं०—१८९३ ई० में 'नारायण' प्रेस : मुजफ्फरपुर (बिहार) में छपा है। बाद में यह बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर' द्वारा संपादित होकर 'भारत-जीवन' प्रेस, काशी से भी प्रकाशित हुआ है।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० १०८६।
६. मि० बं० वि०—२, ३, पृ० ४२१, ९८२।

नख-सिख, रच०—पारसराम, रसं०—अज्ञात ।[1]

नख-सिख, रच०—पुहकर, रसं०—१६७३ वि० ।[2]

नख-सिख, रच०—प्रताप कवि, रसं०—१८८६ वि० । इसका द्वितीय नाम—"रामचंद्र जू कौ नख-सिख" भी है ।

नख-सिख, रच०—प्रेम सखी, रसं०—१७९१ या १८१४ वि० । प्रास्था०—१. महंत लखनलाल शरण, लक्ष्मण किला : अयोध्या । २. सरस्वती-भंडार, लक्ष्मणकोट अयोध्या (दो प्रतियाँ)।[3] ३. पं० रघुनंदन जी, अलबलपुर : फैजाबाद ।[4]

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि, रसं०—१६४२ वि० । प्रास्था०—१. पं० महावीर प्रसाद मिश्र, गुरुटोला—आजमगढ़ ।[5] २. जैन-सिद्धान्त भवन : आरा, पुसं—४१, २६ । ३. सरस्वती-भंडार : उदयपुर (मेवाड़), तीन प्रतियाँ, पुसं०—३३, ४०९ तथा ४२४ सं०—१७९८ वि० की । ४. कविराव मोहन सिंह : उदयपुर (मेवाड़), सं०—१९४२ वि० की प्रति । ५. याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी (तीन प्रतियाँ) । ६. रत्नाकर-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।[6] ७. मन्नूलाल : पुस्तकालय, गया (बिहार) । ८. गीता-प्रेस : गोरखपुर, पुसं०—३३८ । ९. जगन्नाथ लालाजी त्रिगृही, गोकुल (मथुरा) ।[7] १० पुरातत्त्व-संग्रहालय : जामनगर (सौराष्ट्र) । ११. द्वारिकाधीश-मंदिर, पाटन (गुजरात) । १२. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (दो प्रतियाँ) । १३. पं० रघुबीर चरण मिश्र, बिल्हौर (कानपुर) ।[8] १४. अनूप-संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर—(राजस्थान) । १५. अद्वैत चरण गोस्वामी, राधारमण-घेरा : वृंदावन (मथुरा)। १६. पं० संतबकस तिवारी, तिवारी का पुरवा :

---

१. मि० बं० वि०—३, पृ० ९८३ ।

२. मि० बं० वि०—३, पृ० ४०७ ।

३-४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ तथा १९१७ ई०, पृ० ३२१ व २८७ । इस पुस्तक का नाम—"सीताराम : नखसिख" भी मिलता है ।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९०९ ई०, पृ० ४२ ।

६. बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर' वाली यह प्रति हस्तलिखित नहीं, 'भारत जीवन' प्रेस, काशी की छपी प्रति है ।

७. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९१२ ई०, पृ० १४० ।

८. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९२६ ई०, पृ० १३८ ।

बहरायच।[1] १७. पं० शिवकुमार, अहनापुर, पो०—बसौरा : सीतापुर (अवध)। १८. नवनीत पुस्तकालय, मथुरा, पुसं०—५३–१५। १९, सरस्वती-भंडार, काशी : विश्वविद्यालय, पुसं०—४६२५१।

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि (सटीक), टीक०—गोपाल कवि, टीना०—"सिखनख-दर्पण", रसं०—१८९१ वि०।

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि (सटीक), टीक०—गोपाल बंदीजन, रसं०—१८५३ वि०।[2] इसका द्वितीय नाम—"राधा : नख-सिख" भी मिलता है और रच०—नाम "गोपालराय"।

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि (सटीक), टीक०—पजनेश, टीना०—"मधु-प्रिया", रसं० १९०५ वि०।

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि (सटीक), टीक०—प्रताप शाहि, रसं०—१८९५ वि०। प्रास्था०—बूंदी-राज्य-पुस्तकालय, बूंदी (राजस्थान)।

नख-सिख, कवि बलभद्र-कृत (सटीक), टीक०—मनीराम, रसं०—१८४२ वि०, कुनियारा के राजा महासिंह तोमर के आश्रित।

नख-सिख, बलभद्र कवि कृत (सटीक), टीक०—रसराम, रसं०—अज्ञात।

नख-सिख, रच०—बलवीर, रसं०—अज्ञात, प्राप्र०—सं० १८४६ वि० की। प्रास्था०—ठा० शिवसिंह, हिम्मतपुर, पो०—सिधौली (सीतापुर)। २ पं० जनार्दन जी, खाले का बाजार (लखनऊ)।

नख-सिख, रच०—बेनी कवि, रसं०—१६९० वि० के आस-पास।[3]

नख-सिख, रच०—भद्र कवि, रसं०—अज्ञात।[4]

नख-सिख, रच०—भरमी कवि, रसं०—१७२० वि०।

नख-सिख, रच०—भीष्म कवि (भीषम), प्राप्र०—१८५८ वि० की। प्रास्था०—पं० हुकुमचंद चतुर्वेदी, मकंदूगंज : प्रतापगढ़ (अवध)।

नख-सिख, रच०—मनीराम द्विज, रसं०—१८५० वि०।[5]

नख-सिख, रच०—महताब, रसं०—१७८० वि०।[6]

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९२३ ई०, पृ० २४२। यह पुस्तक सं०—१८९४ ई० में काशी के 'भारत-जीवन' प्रेस में छपी है।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८३६।

३. ४. मि० बं० वि०—२, ३, पृ० ४१० एवं ९९३।

५. ६. मि० बं० वि०—२, पृ० ६९६, ८२२।

नख-सिख, रच०—माधवदास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—गोकुलप्रसाद चतुर्वेदी, छिपैटी : इटावा।

नख-सिख, रच०—माधौदास सौनी : काशी, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—नवनीत-पुस्तकालय, मथुरा, पुसं०—२१, १०

नख-सिख, रच०—मान कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी। इसका द्वितीय नाम— 'राधाजू कौ नख-सिख'' भी कहा जाता है।

नख-सिख, रच०—मानालाल त्रिवेदी, मल्लवाँ : हरदोई, रसं०—१९४० वि०।

नख-सिख, रच०—मीरन कवि, रसं०—१९०५ वि० के आस-पास।

नख-सिख, रच०—मुरलीधर मिश्र (माथुर ब्राह्मण—आगरा के), रसं०—१८११ वि०।

नख-सिख : रच०—मुरलीधर मिश्र (आगरा) रसं०—१९०२। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९०२ वि० की प्रति। २. पं० बद्रीनाथ भट्ट, लखनऊ यूनिवर्सिटी।

नख-सिख, रच०—रतन कवि (श्रीनगर-गढ़वाल के राजा 'फतेशाह' के दरबारी कवि), रसं०—१७५० वि० के आस-पास।

नख-सिख, रच०—रसलीन (सैयद-गुलामनबी), रसं०—१७९४ वि०। प्रास्था०—ठा० त्रिभुवन सिंह, सैहापुर : नीलगाँव (सीतापुर)। दे०—'अंग-दर्पण'—रसलीन-कृत।

नख-सिख, रच०—रसराज, रसं०—१७८० वि०।[१]

नख-सिख, रच०—रसरूप, रसं०—१७३७ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : उदयपुर (मेवाड़), पुसं०—३४, सं०—१७३० की प्रति।

नख-सिख, रच०—रसाल, रसं०—१८१० वि०।

नख-सिख, रच०—रहीम कवि (प्रसिद्ध), पुस्तक-नाम—"नख-सिख : बरवै"।

नख-सिख (रामचंद्र जू कौ), रच० तथा रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० प्यारेलाल अगरा।

नख-सिख, रच०—रूप जी, रसं०—१७१० वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, उदयपुर (मेवाड़), पुसं०-३५, सं०—१७३० वि० की प्रति।

नख-सिख, रच०—लीलाधर (जोधपुर के महाराज 'राजसिंह' के आश्रित), रसं०—१६७० वि०।

१. मि० बं० वि०—२, ३, पृ० ७०८, ११०५।

नख-सिख, रच०—वासुदेव (व्रजपाल भट्ट : जयपुर के पुत्र), रसं०—१९०० वि०।

नख-सिख, रच०—शिवलाल द्विवेदी (डोंडिया : खेरा), रसं०-१८३९ वि०।[१]

नख-सिख, रच०—शेख़ अहमद, रसं०—१७७८ वि०।[२]

नख-सिख, रच०—संत कवि (बंदीजन : रीवाँ), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बजरंगबली ब्रह्मभट्ट, होलपुर : बाराबंकी सं० १९४८ वि० की प्रति।

नख-सिख, रच०—सरदार कवि (काशी)। प्रास्था०—सरस्वती : भंडार, रामनगर (काशी)।

नख-सिख (सवैया), रच०—तथा रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—जिन-चरित्र-सूरि संग्रहालय : बीकानेर (राजस्थान)। २. पं० आैतमाराम, रावल, मथुरा।

नख-सिख, रच०—सुखदेव, रसं०—अज्ञात।[३]

नख-सिख, रच०—सुरत मिश्र, रसं०—१७६६ वि०। प्रास्था०—नवनीत पुस्तकालय : मथुरा, पुसं०-२२,-७। २, ठा० नौनिहालसिंह, काँठा—उन्नाव। सं०—१८५३ वि० की प्रति। ३, हिं० सा० सं० प्रयाग, पुसं०—१०९।

नख-सिख, रच०—सेवक कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—हिं० सा० सं०—प्रयाग, पुसं०—७१-१।

नख-सिख, रच०—सेवकराम, प्राप्र०—सं० १९५३ वि० की। प्रास्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। इसका दूसरा नाम—"नखसिख बरवै" भी है। २. पं० चुन्नीलाल वैद्य, ढुंढपाणि, काशी।

नख-सिख, रच०—सेवादास, रसं० अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी।

नख-सिख (हजारा), संक०—परमानंद सुहाने।[४]

नख-सिख, रच०—हनुमान कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी। २. पं० महावीर प्रसाद, गणेशगंज : रायबरेली।

नख-सिख रच०—हरिवंश (घसीटे कवि), रसं०—१७६१ वि०। प्रास्था०—गोपालराम ब्रह्मभट्ट, बिलग्राम-हरदोई।

---

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ८८३।

२. यह 'काशी' के किसी प्रेस में छपा है।

३. मि० बं० वि०—२, पृ० ४७६।

४. यह 'नवल किशोर' प्रेस, लखनऊ में छपा है।

नख-सिख, रच०—हरीराम, रसं०—१६८० वि०।[1]

नख-सिख (जीवनलाल जी महाराज, काशी), रच०—बा० माधौदास सोनी : काशी, प्रका०—अर्जुनदास—मुजफ्फरपुर (बिहार), मु०-वर्मन : यंत्रालय, मुजफ्फरपुर (बिहार), सं०-११६२ वि०। व्यक्तिगत होते हुए भी यह पुस्तक बहुत सुंदर रचना है।

नख-सिख : दर्पण, रच०—कवि गोपाल (बुंदेलखंडी), रसं०—अज्ञात, फिर भी सं०—१८६६ वि० के आस-पास 'भगवंतराय खीची' के समय।

नवल : अंग-प्रकाश, रच०—युगलानंद शरण, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना०-प्र० सभा, काशी। श्रीरामचंद्र जी का "नख-सिख"।

ने

नेत्र-वर्णन, रच०—आलम कवि (प्रसिद्ध)। प्रास्था०—कवि राव मोहनसिंह, उदयपुर (मेवाड़)।

नै

नैन-पचासा, रच०—मंडन कवि, रसं०—१७२२ वि०। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार—संस्कृत विश्व-विद्यालय, काशी। पुसं०—४६०३८। पुस्तक पर नाम—"नेत्र-पंचाशिका" लिखा है।

नैन-बावनी, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई (सौराष्ट्र), रसं०—१९५२ वि०।

नैन-मंजरी, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई (सौराष्ट्र)।

नैन-रसरूप, रच०—नागरी दास (कृष्णगढ़ : राजस्थान)।

प

पयोधर-पच्चीसी, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई (सौराष्ट्र), रसं०—१९५१ वि०।

प्या

प्यारीजू कौ नख-सिख, रच०—लाल बिहारी मिश्र, उना०—"द्विजराज", गँधौली : सीतापुर।[2]

१. मि० बं० वि०—२, पृ० ४५७।

२. मि० बं० वि०—३, पृ० १२५९।

ब

बनिता-भूषन, रच०—कविराज गुलाब सिंह, रसं०—अज्ञात।[1]

बृ

बृंदावनचंद: सिख-नख-ध्यानमंजूषा, रच०—दामोदर कवि, प्राप्र०—सं०१९२३ वि० की।[2] पूर्ण कवि-नाम 'दामोदर देव भट्टाचार्य', टीकमगढ़—मध्यप्रदेश। प्रास्था०—सरस्वती-भंडार : काँकरौली (मेवाड़)।

बृहद्-बनिता-भूषन, रच०—राव गुलाब सिंह, प्राप्र०—सं०१९४७ वि० की। प्रास्था०—हिं० सा० सम्मेलन, प्रयाग।

म

मनोज-लतिका, रच०—माधौसिंह, उना०—छितिपाल : अमेठी के राजा, रसं०—१९१३ वि०। प्रास्था०—रत्नाकर-संग्रह : ना० प्र० सभा, काशी।

मा

माधुरी-प्रकाश, अर्थात्—'नख-सिख 'सीता' जू कौ', रच०—कृपानिवास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना० प्र० सभा : काशी।

र

रस-कौमुदी, अर्थात् 'नख-सिख राधा जू कौ', रच०—कृष्णचैतन्य गोस्वामी, रसं०—१९३४ वि० की प्राप्त-प्रति। प्रास्था०—पं० दीनदयाल, गोसाल-पुर : सीतापुर।[3]

रा

राधा-कृष्ण-कटाक्ष, रच०—सुखलाल भाट, ओड़छा-निवासी, रसं०—१८९६ वि०।[4]

राधा जू कौ नख-सिख, रच०—गोकुलनाथ कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—महाराजा-लायब्रेरी : बलरामपुर (अवध)। २. ला० भगवानदीन, काशी।[5]

१. २. मि० बं० वि०—३ तथा २, पृ० १०५५, ९४७।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ८४४।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १०९२।
५. मि० बं० वि०—२, पृ० ७३९।

राधा जू कौ नख-सिख, रच०—चंदन कवि, रसं०—अज्ञात ।

राधा जू कौ नख-सिख, रच०—बाबा सरनामसिंह, रीवाँ : बघेलखंड, रसं०—अज्ञात ।

राधा जू कौ नख-सिख, रच०—मान कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—याज्ञिक संग्रहालय : ना० प्र० सभा, काशी ।

राधा जू कौ नख-सिख, रच०—लेखराज, रसं०—अज्ञात ।[1]

राधा जू कौ नख-सिख, रच०—सूरत मिश्र, रसं०—१७९२ वि० । प्रास्था०—गो० रामचंद्र जी, छीपी टोला : आगरा ।

राधा : नख-सिख, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—द्वारिकाधीश मंदिर : पाटन (गुजरात) ।

राधा : नख-सिख, रच०—गिरिधर भट्ट, बाँदा, रसं०—१८८६ वि० ।[2]

राधा : नख-सिख, रच०—द्विज कवि, प्राप्र०—सं० १८५५ वि० की ।[3]

राधा : नख-सिख, रच०—द्विज कवि (दूसरे)।

राधा : नख-सिख, रच०—रघुनाथप्रसाद कायस्थ चरखारी, रसं०—१९३७ वि० ।[4]

राधा : नख-सिख, रच०—हरिदत्त सिंह, रसं०—अज्ञात, प्राप्त-प्रति सं०—१९०० वि० की । प्रास्था०—सरस्वती-भंडार, अयोध्या-राज्य ।

राधा-मुख वर्णन, रच०—शंकरदत्त-पटना, रसं०—१८३० वि० ।[5]

(श्री) राधा-मुख : षोडशी, रच०—गोविंद, रसं०—१८५० वि० । प्रास्था०—गोविंद-गिल्ला भाई : पुस्तकालय-सीहौर (सौराट्र) । २. परसुराम चतुर्वेदी-एम०ए०, बलिया ।

राधा : रूप-मंजरी, रच०—गोविंद-गिल्ला भाई (सौराष्ट्र), रसं०—१९४१ वि० । प्रास्था०—गोविंद-गिल्लाभाई : पुस्तकालय, सीहौर (सौराष्ट्र) ।

राधा : नख-सिख, रच०—हरीदास कायस्थ : चरखारी, रसं०—१८८० वि० ।

राधिका : नख-सिख, रच०—राधाचरण कायस्थ, राजगढ़ (बुंदेलखंड), रसं०—१९२१ वि० ।

१. मि० बं० वि०—३, पृ० १०५९ ।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० ९४५ ।
३. मि० बं० वि०—२, पृ० ९३० ।
४. मि० बं० वि०—३, पृ० १३३३ ।
५. मि० बं० वि०—३, पृ० ७८० ।

राधिका : नख-सिख, रच०—हरिदत्त सिंह, प्रा-प्रति सं०—१९०० वि० की। इसका द्वितीय नाम 'राधा-विनोद' भी मिलता है।[1]

राधिका-भूषण, रच०—हरिदास कायस्थ—पन्ना (बुंदेलखंड), रसं०—अज्ञात।[2]

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—प्रतापशाहि, रसं०—अज्ञात। इसका द्वितीय नाम—'नख-सिख रामचंद्र जू कौ' भी मिलता हैं।[3]

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—बलवीर कवि, रसं०—अज्ञात।

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—कवि विहारी, रस०—१८२० वि०। प्रास्था०—बालगोबिंद हलवाई, नवाबगंज—बाराबंकी।[4] २. गो० राधाचरण, राधा-रमण—घेरा : वंदावन (मथुरा)।

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—भगवंत सिंह, रसं०—अज्ञात।[5]

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—रसरूप, रसं०—१९२५ वि०।[6]

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—लाल बिहारी मिश्र, उना०—'द्विजराज', गँधौली : सीतापुर, रसं०—अज्ञात।

रामचंद्र जू कौ नख-सिख, रच०—सेवादास, रसं०—अज्ञात।

ल

लक्ष्मी : नख-सिख, रच०—गिरिधरदास : भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र के पिता, रसं०—अज्ञात।

शृं

शृंगार-दर्पण, अर्थात् नख-सिख वर्णन, रच०—नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह, उना०—'ईश कवि', दलीपपुर-शाहपुर के राजा।

शृंगार-षोडशो, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई, रसं०—१९४५ वि०। प्रास्था०—गोविंद-गिल्लाभाई : पुस्तकालय, सीहोर—(सौराष्ट्र)।

शृंगार-सुखसागर-तरंग, रच०—देव (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राजा

१ २. मि० बं० वि०—३, पृ० ९४०, १०७२।

३. ४. मि० बं० वि०—२, पृ० ९२१, ७६८। यह प्रतापशाही-कृत : "नखसिख" समालोचक-पत्र सं०—१९८५ वि० के ज्येष्ठ-आषाढ़ अंकों में छपा है।

५. यह पुस्तक नवल किशोर प्रेस लखनऊ में छपी है।

६. मि० बं० वि०—३, पृ० ११५९।

ललिता बकशसिंह, नीलगाँव : सीतापुर ।[१] २. पं० उमाकांत शुक्ल, हँडिया: बाराबंकी । इसका दूसरा—नाम "सुख-सागर-तरंग' भी है ।[२]

श्री

श्री राधा-मुख षोडशी, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई (सौराष्ट्र), रसं०—१९५० वि० । प्रास्था—गोविंद-गिल्लाभाई-पुस्तकालय : सीहोर (सौराष्ट्र) ।[३]

स

संग्रह : नख-सिख, संक०—नूर कवि, संका०—अज्ञात । प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी ।

सरस-शांति (नख-सिख), रच०—राम विधुशरण, उना०—'विधु', रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—मन्नूलाल : पुस्तकालय, गया (विहार) ।

सि

सिख-नख, रच०—गोपाल कवि (बंदीजन), रसं०—१८९१ वि० ।

सिख-नख, रच०—चंदन राय, रसं०—१८२५ वि० । प्रास्था०—राजा ललिता-बकस सिंह, नीलगाँव : सीतापुर ।

सिख-नख, रच०—जवाहर राय, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—भगवानदास ब्रह्म-भट्ट, बिलग्राम : हरदोई ।

सिख-नख, रच०—प्रताप कवि, रसं०—अज्ञात ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ४७० ।

२. यह श्री देव-कृत—"सुखसागर-तरंग" नायिका भेद का विस्तृत ग्रंथ है, जो बारह अध्यायों में संपूर्ण हुआ है । 'शृंगार-सुख-सागर तरंग' उसी का तीसरा अध्याय है, जिसमें रात्रि के शेष यामों की शृंगारिक-क्रीड़ाओं के वर्णन के साथ नायिका के 'नख-सिख' का वर्णन किया गया है। अतः प्रस्तुत पुस्तक 'सुख-सागर-तरंग' का अंश विशेष है। सुखसागर तरंग का रचना काल—सं०—१८२४ वि० के आस-पास है । उसी में से किसी ने यह संग्रह किया है ।

३. यह पुस्तक बिना मुख-पृष्ठ के छपी हुई त्रुटित—"द्वारिकेश पुस्तकालय, पोर-बंदर (सौराष्ट्र) में देखने में आयी है। साथ ही ऐसा खयाल होता है कि उक्त पुस्तक 'बा० रामकृष्ण वर्मा, काशी' की देखरेख में उनके ही 'भारत-जीवन-प्रेस' काशी में छपकर प्रकाशित हुई थी ।

सिख-नख, रच०—बलभद्र कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—अद्वैत-चरण गोस्वामी राधारमण-घेरा : वृंदावन (मथुरा)।[१]

सिख-नख, रच०—मणिदेव, रसं०—अज्ञात।

सिख-नख, रच०—रसरूप, रसं०—अज्ञात।

सिख-नख, रच०—रसलीन (सैयद गुलाम नवी—'रसलीन'), रसं०—अज्ञात।

सिख-नख, रच०—रसानंद (भरतपुर : रा० स्था०), रसं०—१९१० वि०।[२]

सिख-नख, रच०—शिवनाथ द्विवेदी, रसं०—अज्ञात।

सिख-नख, रच०—सुखदेव मिश्र, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—गो० कृष्णलाल, वृंदावन (मथुरा)। २. पं०—रघुनाथ राम, गायघाट : काशी।

सिख-नख, रच०—हनुमान कवि, रसं०—अज्ञात।[३]

सिख-नख, रच०—गणेशप्रसाद फर्रुखाबाद, रसं०—१९२५ वि०।[४]

सिख-नख, रच०—सुजान, रसं०—अज्ञात।[५]

सिख-नख : चंद्रिका, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई, रसं०—१९४१ वि०। प्रास्था०—गोविंद-गिल्लाभाई : पुस्तकालय, सीहोर (सौराष्ट्र)।

सिख-नख : सतसई, रच०—परमानंद सुहाने, रसं०—अज्ञात।[६]

सिख-नख : सतसई, रच०—सुखदेव मिश्र, प्राप्र०—सं०—१९४३ वि० की।

सी

सीता-राम : नख-सिख, रच०—रसरंग, लखनऊ, रसं०—१९३० वि०।[७]

सौं

सौंदर्य-चंद्रिका, रच०—कृष्ण चैतन्य देव, रसं०—अज्ञात, प्राप्र०—सं०—१९२२ वि० की।[८] प्रास्था०—पं० रघुनाथराम गायघाट, काशी।

१. दे०—नख-सिख 'बलभद्र' कवि।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० ११६८।
३. सूचना : ना० प्र० पत्रिका काशी, सं० २००७ वि०, वर्ष ५५, अंक ३।
४-५. मि० बं० वि०—३, पृ० १०३१, १००९।
६. यह विविध 'ब्रजभाषा' के कवियों की कृतियों का संग्रह है, जो कि 'नवल-किशोर' प्रेस लखनऊ में छपा है। हमें इसको ह० लि० प्रति जबलपुर में मिली थी। डायरी पानी में भींग जाने के कारण ठीक प्रास्था०—नहीं दिया गया है।
७-८. मि० बं० वि०—३, पृ० १२३३, ११५७।

सौंदर्य-लता, रच०—रसिक दास, रसं०—अज्ञात, (दोहा-छंदों में श्री राधिकाजी का 'नख-सिख' वर्णन)।

सौंदर्य-लहरी, रच०—मनियार सिंह, रसं०—१८४३ वि०।

ह

हनुमत : नख-सिख, रच०—खुमान कवि बंदीजन, खड़ागाँव : चरखारी (बुंदेल-खंड), रसं०—१८४० वि०। प्रास्था०—ठा० नौनिहाल सिंह सेंगर, काँठा उन्नाव।[1] २. गीताप्रेस : गोरखपुर, पुसं०—२६७ बंध में। ३. जवाहरलाल पेशकार, चरखारी (बुंदेल-खंड)।

हनुमत : नख-सिख, रच०—देवीदास कायस्थ, रसं०—१८६५ वि०।[2]

हनुमान : नख-सिख, रच०—मान कवि, प्राप्र०—सं० १९५२ वि० की। प्रास्था०—जवाहरलाल पेशकार, चरखारी (बुंदेलखंड)।[3]

हनुमान : नख-सिख, रच०—हनुमानप्रसाद कायस्थ, मैहर (बघेल-खंड)।[4]

हयग्रीव : नख-सिख, रच०—थानसिंह कायस्थ चरखारी, रसं०—१८८४ वि०। यह पुस्तक 'कान्ह' कवि के नाम से भी मिलती है।[5]

---

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९२३ ई०, पृ० ८२९।

२. मि० बं० वि०—२, पृ० ८८३।

३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा, काशी, सं०—१९२६ ई०, पृ० ३७६ तथा मि० बं० वि०—२, पृ० ७७७।

४. ५. मि० बं० वि०—३, पृ० १०११, १०९५।

नख-सिख : मुद्रित

"नख-सिख : मुद्रित"

नख-सिख, रच०—केशवदास, संपादक—बा० जगन्नाथदास—'रत्नाकर', प्र०—भारत-जीवन प्रेस, काशी सं०—१८९६ ई० प्रथम बार। द्वितीय बार सं०—१९२३ ई० में।

नख-सिख, रच०—गोविंद-गिल्लाभाई, प्र०—स्वयं रचयिता, भावनगर (सौराष्ट्र) के किसी प्रेस में सं०—१८९४ ई० में छपा। प्रास्था०—द्वारिकेश : पुस्तकालय, पोरबंदर (सौराष्ट्र)।

नख-सिख, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध), प्र०—लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, सं०—१९०३ ई० प्रथम-बार, द्वितीय-बार के संपा०—गो० गोवर्धन लाल, वृंदावन, प्रमु०—वही लक्ष्मीनारायण प्रेस मुरादाबाद, सं०—१९६० वि०।

नख-सिख, रच०—चंद्रशेषर, संपा०—बा० जगन्नाथदास—'रत्नाकर', प्रमु०—भारत-जीवन प्रेस : काशी सं०—१८९४ ई०।

नख-सिख, रच०—दिवाकर भट्ट, प्रमु०—भारत-जीवन-प्रेस, काशी, सं०—१८८४ ई०।

नख-सिख, रच०—नृप शंभु, प्रमु०—नारायण-प्रेस मुजफ़्फरपुर (बिहार), सं०—१८९३ ई०।

नख-सिख, रच०—विहारी लाल (प्रसिद्ध), प्रमु०—कैलाश प्रेस कानपुर, सं०—१८९२ ई०।

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि, संपा०—गोविंद-गिल्लाभाई (सौराष्ट्र), प्रमु०—भारत-जीवन-प्रेस, काशी, सं०—१८९४ ई०।

नख-सिख, रच०—बलभद्र कवि (सटीक), टीका—प्रतापसाहि, संपा०—बा० जगन्नाथ दास—'रत्नाकर', प्रमु०—भारत-जीवन प्रेस, काशी।

नख-सिख, रच०—माधवदास, प्रमु०—अर्जुनदास, मुजफ़्फरपुर (बिहार), सं०—१९०५ ई०।

नख-सिख, रच०—माधोदास सोनी (काशी), प्र०—अर्जुनदास, मुजफ़्फपुर (बिहार), मु०—वर्मन यंत्रालय, मुजफ़्फरपुर (बिहार), सं०—१९६३ वि०।

नख-सिख, रच०—सेवक कवि, प्रमु०—भारत-जीवन प्रेस, काशी, सं०—१८९३ ई०.

नख-सिख : बत्तीसी, रच०—गणेशदत्त मिश्र, प्रमु०—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, सं०—१८९२ ई० ।

नख-सिख : भूषण, रच०—बिहारीसिंह, प्रमु०—खड्ग-विलास प्रेस, बाँकीपुर : पटना (बिहार), सं०—१८८१ ई० ।

नख-सिख : राधिका, रच०—कालिका प्रसाद, प्र०—मणिराम प्रयाग, मु०—जार्ज-प्रेस, प्रयाग ।

नख-सिख : वर्गन, रच०—बैजनाथ कुर्मी, प्रमु०—नवलकिशोर प्रेस : लखनऊ, सं०—१९१४ ई० ।

नख-सिख : वर्णन, रच०—पं० राधावल्लभ, प्रमु०—व्यास-यंत्रालय, मानमंदिर काशी।

नख-सिख : संग्रह, संक०—मुंशी गिरिधारी लाल कायस्थ, प्र०—रामरत्न बाजपेयी, मु०—लखनऊ-प्रिंटिंग प्रेस लखऊ, सं०—१९०२ ई० । इसमें एक सौ आठ (१०८) कवियों का संग्रह है, जैसे :—आनंद, आलम, ईश्वर, ऊधौराम, कलानिधि, कमलापति, काशीराम, किशोर, केशवदास, कविंद्र, कुलमणि, कोविद, गुलाब, गोकुल, गोपाल, गोविंद, गंग, ग्वाल, घासीराम, चिंतामणि, चंदन, जयसुख, जगदीश, जगत, जगतसिंह, तारापति, ताहिर, तोष, दत्त, दयानिधि, दास, दिनेश, दिवाकर, द्विज, देव, धुरंधर, नबी, नाथ, नायक, निधि, नीलकंठ, नूर, नेही, नौरंग, नंदन, परशुराम, पजनेस, पद्माकर, पुखी, प्रसाद, बलदेव, बलभद्र, बारन, ब्रज, ब्रह्म, भगवंत, भरमी, भानु, भुवनेश, भूधर, भंजन, मकरंद, मणिकंठ, मति, मतिराम, मदनगोपाल, मनीराम, माखन, मीरन, मुबारक, मुरली, मून, मंडन, मंसाराम, रघुनाथ, रतन, रसराज, रसिक, रसिक बिहारी, राय, लाल मकुंद, लीलाधर, शोभानाथ (सोमनाथ), शंभु, शंभुराज, शिव, शिवदीन, शोभनाथ, संदानंद, सुखदेव, सुखराज, सुंदर, सुवंश, सेख, सेनापति,सेवक, संतनु, हरिकेश, हरिसेवक, हरिभक्त, हरिऔध, (प्राचीन), हनुमान, श्रीपति, श्रीधर, रसलीन, मन्नालाल और गिरिधारी—इत्यादि ··· ।

नख-सिख : हजारा (सग्रह), सं०—परमानंद सुहाने, प्रमु०—नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, सं०—१८९३ ई० । कवि यथा : अंबुज, अमरेश, आलम, औध, ईश्वर, उदयनाथ, ऊधव, ऊधवराम, कमलापति, कविंद्र, कविराज, कामताप्रसाद, कालिदास, कान्ह, काशीराम, किशोर, कुशलसिंह, कृष्णलाल, केशव, केशौ,

कोविद, गंग, गदाधर, गिरिधारन, गिरिधरदास, गुंवर, गुपाल, गुलाब, गोकुल, गोकुलचंद, ग्वाल, घनश्याम, घनानंद, घासीराम, चदन, चिंतामणि, जगदीश, जय कवि, जीवन, ठाकुर, तारा कवि, तुलसी, तोष कवि, दत्त कवि, दयादेव, दयानिधि, दयारत्न, दामोदर, दास, दिनेश, दिवाकर, देव, देवकीनदन, देवमणि, द्विज, द्विजनंद, द्विज बलदेव, द्विजराज, धुरंधर, नंदन, नंदराम, नवी, नवीन, नाथ, नारायण, नीलकंठ, नूर, नृपशंभु, नेसुक, नेही, नोनेराम, पजनेस, पद्माकर, परम, परमेश. परसराम, पारस, पुखी, प्रसाद बलभद्र, बलदेव, बल्लभ रसिक, बिजय, बिदुष कवि, बेनी, वेनीप्रवीण, ब्रजचंद, ब्रह्म. भंजन, भगवंत, भरमी, भूधर, भूपति, भोज, भौन, मंडन, मति जू, मतिराम, मदनगुपाल, मधुपति, मकरद, मनमा, मनिकंठ, मनीराम, मनोहर, महाकवि, माखन, मान, मारकंडे, मीरन, मीर, मुरली, मुबारक, मोतीराम, मोहन, यशवंत, युगलकिशोर, रघुनाथ, रघुराज, रतन, रतिनाथ, रसरंग, रसराज, रसिकविहारी, रसीले, राम, रिझवार, लाल, लालमन, लाल मकुंद, लीला-धर, शभु, शंभुराज, शिव कवि, शिवदीन, शिवनाथ, शेष, शोभ, शोभनाथ, संतन कवि, सदानंद, सरदार, साहिब राम, सुमेरहरि, सूरज, सेख, सेना-पति, सेवक, सोमनाथ, हठी, हनुमान, हरिऔध, हरिकेश, हरिसेवक, हरीराम, श्रीधर और श्रीपति—एक सौ पैंतालीस (१४५) कवि।"

आधुनिक : ग्रंथ

आँख और कवि-गण, संपा-संग्रा०—जवाहरलाल चतुर्वेदी, मथुरा, प्रका०—साहित्य-सेवा-सदन काशी, मु०—महाशक्ति-प्रेस, काशी, सं०—१९८८ वि०। आँख पर संस्कृत, हिंदी (ब्रजभाषा) और उर्दू के विविध कवियों-द्वारा रची गयी कविताओं का आलोचनात्मक—दोसौ (२००) संस्कृत, हिंदी और उर्दू के कवियों के श्लोकों, छंदों और शेरों का बृहद्-संग्रह।

नयन, संग्रा०-संपा०—सत्यजीवन वर्मा एम० ए०, प्र० रामनारायणलाल अग्रवाल, बुकसेलर, प्रयाग, मु०—नेशनल प्रेस, प्रयाग, सं०—१९३० ई०। श्रीसूरदास (अष्टछाप) के नयन-सबधी पदों का छोटा-सा संग्रह।

नयनामृत-प्रवाह, संग्रा०-संपा०—छन्नूलाल पाठक, काशी। नयन (आँखों) पर केवल दोहा छंदों का एक बृहद्-संग्रह विविध कवियों का, प्रमु०—अज्ञात।

षट्-ऋतु और बारह : मासा

षट्-ऋतु और बारह : मासा

षट्-ऋतु : "वसंत"—चैत्र : वैशाख मास । वर्णनीय-विषय—"वसंत-रूपक, फूल, सुगंध, संयोग-वियोग, फाग, रंग, गुलाल, अबीर : फाग-उपकरण । फाग-खेल के अनंतर अवस्था, छवि, फाग-फलस्तुति, फाग : वियोग-संयोग ।"

२, "ग्रीष्म"—ज्येष्ठ : आषाढ़ मास । वर्णनीय-विषय—गर्मी, प्यास, फूल-शय्या, जल-केलि, फुहारे, ग्रीष्म : संयोग-वियोग, पवन, लूँ ।"

३, "वर्षा"—श्रावण : भाद्रपद मास । वर्णनीय-विषय—"वर्षा, छोटी-बड़ी : बूँदें, वायु, बिजली, कड़क, वर्षा : रूपक, संयोग-वियोग, पावस-विहार, मेघ, मेघ-रंग ।"

४, "शरद"—आश्विन : कार्त्तिक मास । वर्णनीय-विषय—"शरद-विभावरी, चंद्र, चाँदनी, तारागण, उद्दीपन-रूप, रास, संयोग-वियोग, पवन, शरद : रूपक ।"

५, "हेमंत"—मार्गशीर्ष : पौष मास । वर्णनीय-विषय—"शीत, पवन, वस्त्र : रजाई, तोष, तकिया, वास, सुगंध, धूप, अग्नि, संयोग-वियोग, रूपक, हेमंत-सुखद-वस्तुएँ ।"

६, "शिशिर"—माघ : फाल्गुण मास । वर्णनीय-विषय—"शीत, शीत : दारुणता, मिटाने के साधन, पवन, संयोग-वियोग ।"

बारहमास या मासी—"चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद्र, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुण"—इत्यादि-जन्य विरह-संयोग : वर्णन ।"

षट्-ऋतु और बारह : मासा

ऋतु-प्रमोद, रच०—चंद्र गोपाल, रस०—१५३० वि० ।

ऋतुराज : मंजरी, रच०—हृषीकेश, रस०—अज्ञात । प्रास्था०—याज्ञिक-संग्रहालय : ना० प्र० सभा काशी ।

ऋतुराज : सतक, रच०—गौरीशंकर, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ठा० दीनदयाल-सिंह, झाझामऊ : एटा ।[1] २. ठा० दीनपाल सिह राठौर, झाझामऊ : एटा, सं०—१९३९ वि० की प्रति ।

ऋतु : विहार—रच०—चंद्रगोपाल, रसं०—१५९५ वि० ।

ऋतु : विलास, रच०—सरदार कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—बा० ब्रजरत्न-दास बी० ए०, काशी ।

कवित्त : सार-संग्रह, संक०—गोविंद कवि । प्रास्था०—संग्रहालय (अजायबघर) प्रयाग । षट्-ऋतु वर्णन के आठ कवियों का संग्रह ।

चतुरमासा, रच०—देवकीनंदन । प्रास्था०—महंत श्री राजाराम, चिटबड़ा (बलिया), सं०—१८८६ वि० की प्रति ।

चारों दिसाओं के सुख-दुःख : वर्णन, रच०—गोपाल लाल, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—रामलाल, रमुआपुर : खीरी, सं०—१९११ वि० की प्रति । २. पं० बद्रीप्रसाद शुक्ल, शिवगंज : सीतापुर, सं०—१९४४ वि० की प्रति । ३. पं० रामसेवक मिश्र, चीतामऊ : एटा, सं०—१८९६ वि० की प्रति ।

पवन : पचीसी, रच०—वृंद कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर (राजस्थान) । षट्-ऋतुओं में बहते पवन का सुंदर वर्णन ।

पावस : पच्चीसी, रच०—नाथ कवि, रसं०—१९३७ वि० । प्रास्था०—परशुराम चतुर्वेदी, बलिया ।

फूल : बत्तीसी, रच०—मोहन सुंदर, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर (राजस्थान) । वसंतादि ऋतुओं में प्रफुल्लित फूलों के वर्णन के साथ "उद्दीपन-विभाव" का वर्णन ।

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० २४९ ।

बारह : मासा—अध्यात्म, रच०—भवानीदास, रसं०—१९९१ वि०। प्रास्था०—जैन कार, रामघाट : काशी ।

बारह : मासा, रच०—अवधबिहारी लाल कायस्थ, रसं०—१९३७ वि०। प्रास्था०—ब्रजबहादुरलाल : प्रतापगढ़ (अवध)। २. पं० महावीर प्रसाद मिश्र, भगवाँ : प्रतापगढ़ (अवध)।

बारह : मासा, रच०—केशवदास (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं०-राजाराम, नरहरा : सीतापुर ।

बारह : मासा, रच०—खैरशाह, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ठा० रामनरेश सिंह, तारापति : खीरी, सं०—१९२७ वि० की प्रति । २. बा०शिवसहाय खत्री, नवाबगंज : प्रतापगढ़ (अवध) ।

बारह : मासा, रच०—गंगाराम तिवारी, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—देवीदत्त-शुक्ल, संपादक—सरस्वती, कटरा : प्रयाग ।

बारह : मासा (रामायन), रच०—घासीराम, रसं०—१९२४ वि० । प्राप्र०-सं०—१९४४ वि० । प्रास्था०—रामभद्र पुजारी, कलावघा : उन्नाव ।

बारह : मासा, रच०—नत्थन कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—बा० गोपीदास, महेसरी-मुहाल, कानपुर ।

बारह : मासा, रच०—नंदलाल, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ठा० जयराम सिंह, मिर्जापुर, पो०—महमूदाबाद : सुलतांपुर ।[1]

बारह : मासा, रच०—बालमुकुंद, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—रामाधार मिश्र, नगरा : खीरी। २. पं० शिवराम वैद्य, बिजौलिया, पो०—नौखेड़ा : एटा ।[2]

बारह : मासा (सुमति-कुमति कर), रच०—भवानीदास, रसं०—१७५१ वि० । प्रास्था०—जैन-मंदिर, रामघाट : काशी ।

बारह : मासा, रच०—भोलानाथ, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—रामनारायण-लाल, भीषमपुर : एटा । भोलानाथ के "बारह : मासा-विरह" तथा "बारह : मासा कृष्ण जू" का भी मिलते हैं ।

बारह : मासा, रच०—मकसूद, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ठा० रामनरेशसिंह, तारापत : खीरी ।

बारह : मासा, रच०—रसाल कवि, रसं०—१८८६ वि० । प्रास्था०—रामेश्वर

१. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० १०९६।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० १२४।

सिंह जमींदार, नरी : सीतापुर । २. ठा० बलवंत सिंह, लोमामऊ. पो०—संडीला : हरदोई ।[1] सं०—१९३३ वि० की प्रति ।

बारह : मासा (राजुल), रच०—शंकर कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—पं० विश्वनाथ, कैमहरा : खीरी, सं०—१८९३ वि० की प्रति ।

बारह : मासा, रच०—शेख तकी, रसं०—अज्ञात, प्राप्र०—सं०—१९८० वि० की ।

बारह : मासा, रच०—जगन्नाथ, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ला० भगतराम बनैला : उन्नाव, सं०—१९३७ वि० की प्रति, (रामचंद्रजू की बारहमासी) ।

बारह : मासा, रच०—मंडन कवि, रसं०—१७३५ वि० ।

बारह : मासा, रच०—महादेव, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ला० जयनारायण नगला-राजा : एटा । "विरहनी की बारहमासी" भी इसे कहते हैं ।

बारह : मासा, रच०—मुरलीदास, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ला० बद्रीदास, लोईबजार, वृंदावन (मथुरा) ।[2]

बारह : मासा, रच०—तुलसीदास, रसं०—अज्ञात, प्राप्र०—१९१९ वि० ।[3]

बारह : मासा, रच०—लालदास, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ला०महावीरप्रसाद पटवारी, सराय खीमा, पो०—रामनगर : सुलतांपुर (अवध) ।

बारह : मासा, रच०—लाल विनोदी । प्रास्था०—प्रयाग-संग्रहालय (म्यूजियम) प्रयाग, सं०—१८४४ वि० की प्रति ।

बारह : मासा, रच०—वहाब, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—पं० बाबूराम बिथरिया, सिरसागंज, मैनपुरी, सं० १८४८ वि० की प्रति । २. शिवकंठ तिवारी, बरगदिया : सीतापुर, प्रसं० १९१६ वि० की । ३. ला० दिलसुख-राय, महोली : सीतापुर, प्रसं०—१९२७ वि० की ।

बारह: मासा, रच०—सूरदास, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ठा० मूरतसिंह, सिवरा, पो०—महमूदाबाद : सीतापुर, सं०—१९१० वि० की प्रति । २. चौधरी अंगदसिंह, नया नगला : मैनपुरी ।

बारह : मासा, रच०—हरनाम कवि, रसं०—अज्ञात । प्रास्था०—ला०भोलानाथ हकीम, जगरावाँ—एटा ।[4] २. पं० रामभरोसे मिश्र, वटौली : सीतापुर,

१. रसाल कवि (बंदीजन) बिलग्रामी का शुभ नाम—'अँगनेराय' था ।
२. सूचना—ना० प्र० सभा काशी, सं०—२०१७ वि० ।
३. सूचना—ना० प्र० सभा काशी, सं०—२०१८ वि० ।
४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० २९६ ।

सं०—१९१७ वि० की प्रति। ३. अजयपाल सिंह गाजीमऊ : सीतापुर, सं०—१९१० वि० की प्रति।

बारह : मासा, रच०—हरिदास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० रामनाथ शुक्ल, शिवगढ़ : सीतापुर, सं० १९०४ वि० की प्रति।

बारह : मासा, रच०—हरीदास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० देवतादीन मिश्र, सुलतांपुर : उन्नाव, सं०—१९२७ वि० की प्रति।

बारह : मासा, रच०—हंसराज, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ना०प्र० सभा, काशी।

बारह : मासियाँ

बारह : मासी, रच०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र, खेड़ा : इटावा। २. पं० राधाकृष्ण, व्यारी : भटपुरा—इटावा। ३. पं० श्यामलाल शर्मा, इंधौजा, इटावा।

बारह : मासी, रच०—अहमद कवि, पूर्णनाम—"ताहिर अहमद", आगरा निवासी।

बारह : मासी, रच०—कबीरदास (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं०-रामनारायण, नगला—मुकुंद : मैनपुरी।

बारह : मासी, रच०—गनेश प्रसाद, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—किसनसहाय, झाझानी, अलीगढ़।[१]

बारह : मासी, रच०—लालदास। प्रास्था०—ना० प्र० : सभा काशी। रसं०—अज्ञात।

बारह : मासी, रच०—गोविंद दास, रसं०—अज्ञात। लिसं०—१९३५ वि०। प्रास्था०—पं० गोविंद लाल, नारायनदास का खेड़ा : उन्नाव।

बारह : मासी, रच०—जवाहर, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० रामबली दुबे, भिटौरा, बाराबंकी।[२]

बारह : मासी, रच०—दुल्लीसिंह (दुल्ली चेतसिंह), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० बाबूराम शर्मा, हवलिया—करहल : मैनपुरी। सं०—१९२४ वि० की प्रति।

बारह : मासी, रच०—देवीप्रसाद, रसं०—१९०५ वि०। प्रास्था०—पं० रामसनेही मिश्र, मादिक खेड़ा, पो०—फिसेरगंज : एटा।[३] इसे "बारहमासी : विरहनी" भी कहते हैं। सं०—१९१२ वि० की प्रा०प्र०।

१ खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई०, पृ० २२४।
२. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२३ ई०, पृ० ७२२।
३. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२९ ई० पृ० २२४।

बारहमासी, रच०—रसखॉन, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० नारंगी लाल, भदेसरा, मैनपुरी।[१]

बारहमासी, रच०—रसाल गिरि, रसं०—१७०४ वि०। प्रास्था०—पं० द्वारिका-प्रसाद पुरोहित, खेड़ा बुजुर्ग : इटावा।[२]

बारहमासी, रच०—रुद्रनाथ, रसं०—१८७६ वि०। प्रास्था०—रामभजन पाठक, महमूदपुर-नबाव, सीतापुर (अवध)।[३] सं०—१८९९ वि० की प्र०।

बारहमासी, रच०—रामसनेही मिश्र, रसं०—अज्ञात।

बारहमासी, रच०—लखनसेन, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० रामनरेश चौबे, सहतवार (बलिया)। इसे "कान्ह की बारहमासी" भी कहा जाता है। २, सेठ शिवप्रसाद साहु, मु०—सदावर्त्ती—आजमगढ़। सं० १९८५ वि० की प्र०।

बारहमासी, रच०—सुंदर कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—अनूप संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर (राजस्थान)।

बारहमासी, रच०—हजारी लाल, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ठा० जनक सिंह जायमई, मैनपुरी।[४]

बारहमासी, रच०—हरिनारायण, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० रेवतीरमण मिश्र, बेरी—परखम : मथुरा।

बारहमासी : कृष्णचंद्र जू की, रच०—जगन्नाथ, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—मे०-गोविंदराम-भगतराम मारवाड़ी, अमिलहा, उन्नाव। २, गंगादीन मुराव, लछमनपुर, सीतापुर सं०—१८१० वि० की प्र०।

बारहमासी : कौसल्या जू की, रच०—देवीसिंह, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—गयादीन तिवारी, बिलरहा : सीतापुर (अवध)।[५]

बारहमासी : गदर, रच०—अज्ञात। प्रास्था०—ओंकारनाथ जैन, रुनुकता : आगरा।[६]

बारहमासी : जुगलकिशोर रच०—जगन्नाथ, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० गयादीन तिवारी, बिलरहा : सीतापुर (अवध)।

१, २. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३५ ई०, पृ० २४६, २५६।

३. ४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ५८। २२४।

५. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९३५ ई०, पृ० १४६।

६. स०—५७ ई० के गदर की बारहमासी।

बारहमासी : प्रेमसागर, रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—गयादीन तिवारी, बिलरहा, सीतापुर (अवध)।[1]

बारह मासी : बिरहनी, रच०—अज्ञात (मुद्रित)

बारहमासी : बेनीमाधौ रच०—अज्ञात, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ब्रजबहादुर-लाल, प्रतापगढ़ : अवध।[2]

बारहमासी : राम चंद्र जू की, रच०—तथा रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० रामाधार मिश्र, नगर : खीरी।[3]

बारहमासी : निपट नदान, रच०—रंगीलाल, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—ला० पुरुषोत्तमदास, कालाकाँकर : प्रतापगढ़ (अवध)।

बिरहनी : बारहमासी, रच०—बलदेव प्रसाद, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० विष्णु भरोसे, बालामऊ : उन्नाव।[4]

"स्वर्गीय याज्ञिक (मायाशंकर जी याज्ञिक) जी का विशाल ग्रंथालय जब वह "अलीगढ़ और गोकुल" (मथुरा) में था, तब उसे उलटने-पलटने पर कुछ और "बारहमासा या मासी" देखने में आये थे, जैसे : अज्ञात—अवधूत, अहमद, खैर-शाह, तुलसीदास, नंदराम, वेणीमाधव, मंगन, मुरलीदास, जगन्नाथ, रघुनाथ, राधा-कृष्ण, लालदास, सूरदास, हरिनाथ, हीरालाल हलवाई—कृत...इत्यादि...। इनमें से कई का उल्लेख हो चुका है, कई का नहीं। अज्ञात महानुभावों की बारहमासी-रचनाएँ चार थीं, उनके शीर्षक निम्न प्रकार थे—१. "पठए-री तैनें नारि, बैरिन–बनि बालक मेरे"। यह राम-चरित्र से संबंधित है और श्रीराम-माता "कौशिल्याजी" की उक्ति जैसी मालूम देती है। द्वितीय का मुखड़ा था:—"चैत चिता व्यापी हो, बिन पीतम ए प्राँन न निकसें ऐसे पापी हो।" इसमें दोहा और शेर भी मिश्रित थे। तीसरा था ? "हो कैसें जीऔं ऊधौ ग्याँनी, जादोंनाथ मिलाऔ आँनी।" दो गुजराती भाषा की थीं। कुछ 'बारहमासा तथा मासी, मुद्रित भी मिलते हैं, जैसे—बारहमासा : खैरशाह : वेंकटेश्वर प्रेस बंबई, स०—१६०७ ई०। गो० तुलसीदास : वेल्वेडयर प्रेस प्रयाग (स०—१९०९)। बारहमासा : द्रोपदी, जमुना प्रिंटिग प्रेस, मथुरा। नवरत्न-कृत : जमुना प्रिंटिग प्रेस मथुरा। नेमिनाथ, प्र०—सिताबचंद नाहर कलकत्ता, स०—१८७४ ई०।

१. २. ३. ४. खोज रिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२६ ई०, पृ० ५२४, १५०, १४१, १६८। द्वितीय पुस्तक—बारहमासी, अनेक स्थानों से छपकर प्रकाशित हुई है, और ब्रज में वर्षा-ऋतु के समय रात्रि में स्त्रियों-द्वारा विशेष-रूप से गायी जाती हैं।

परमानंद, कन्हैया लाल बुकसेलर पटना, तथा जमुना प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा। वेनीमाधौ: कन्हैयालाल बुकसेलर, पटना-बनारस। भरत: जमुना प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा। रामचंद, जमुना प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा। सुंदर कवि कृत, जमुना प्रि० प्रे०, मथुरा। हनूमान कृत, ज० प्रि० प्रे०, मथुरा। हरनाम कृत, ज० प्रि० प्रे०, मथुरा तथा बलदेव प्रसाद झा, नवल किशोर प्रेस लखनऊ-इत्यादि और बारहमासी जैसे—"कवि जगरूप" की अबला-बिलाप, बाल-विधवा, बिरहिनी एवं बारहमासी-संग्रह-हाथरस, मथुरा, नवल किशोर प्रेस लखनऊ—आदि अनेक स्थानों मे प्रकाशित हुई हैं।

बिरह : मंजरी, रच०—अष्टछाप के महा कवि "नंददास", रसं०—अनिश्चित। प्रास्था०—(दे०—रस-मंजरी : नंददास, "नायिका-भेद"—ग्रंथ) पृ०—७९।

राधा और ललिता सखी कौ बारह : मासा, रच०—मोहन सूरत कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—गयादीन तिवारी, बिलरहा (अवध)।

राधा जू की बारह : मासी, रच०—शिवदयाल, रसं०—१९१५ वि०, लिसं०—१९१८ वि०। प्रास्था०—ला० दीनदयाल, देवरिया : उन्नाव।

राम जू कौ बारह : मासा, रच०—सूरदास, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—सीताराम सिंह, महाराज नगर, सीतापुर (अवध), लिसं०—१७८४ वि०। ये सूर-दास—श्री सूरदास (अष्टछाप) से पृथक हैं।

षट्ऋतु

षट्ऋतु, रच०—आजम, रसं०—१८९० वि०।[1]

षट्ऋतु, रच०—ग्वाल कवि (प्रसिद्ध), रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—चौबे प्रसादराम शर्मा, भरथना : इटावा। २. कविराव मोहन सिंह, उदयपुर (मेवाड़)। ३, पं० श्री नारायण, भाँडरी : मैनपुरी। ४, पं०—रघुवर दयाल, रजौरा : मैनपुरी।

षट्ऋतु, रच०—शिवलाल, डोंडिया खेरा—बैसवाड़ा, रसं०—१८१८ वि० के पास।

षट्ऋतु : कवित्त, रच०—सेनापति (प्रसिद्ध)।

षट्ऋतु : दर्पण, रच०—रघुनाथ कायस्थ-चरखारी, रसं०—१९४० वि०।[2] प्रास्था०—राज्य : पुस्तकालय, चरखारी (मध्य प्रदेश)।

षट्ऋतु : पचासा, रच०—मंगलदीन उपाध्याय—राजापुर : बाँदा।

१. २. मि० बं० वि०—३, पृ० १०६५, १२३३।

षट्ऋतु : पदावली, रच०—रसिक अली, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० विहारीदत्त, पूरा बाजार, फैजाबाद (अवध)।

षट्ऋतु : वर्णन, रच०—अज्ञात। प्रास्था०—गीताप्रेस : गोरखपुर, पुसं०—४७०।[१]

षट्ऋतु : वर्णन, रच०—गंग कवि, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पुरतत्त्व : संग्रहालय, प्रयाग।

षट्ऋतु : वर्णन, रच०—रामनारायण कायस्थ, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—राज्य, पुस्तकालय—अयोध्या।

षट्ऋतु : वर्णन, रच०—सरदार कवि काशी, रसं०—अज्ञात। प्रास्था०—पं० चुन्नीलाल वैद्य, ढुंढ़ पाणी, काशी।

षट्ऋतु : बरवै, रच०—सवलश्याम, रसं०—१७०० वि०।[१] प्रास्था०—पं० कृष्ण विहारी मिश्र, गँधौली (सीतापुर)।[२]

षट्ऋतु : विनोद, रच०—गजराज सिंह, बाराबंकी, रसं०—अज्ञात।

मुद्रित

ब्रजभाषा-साहित्य का ऋतु : सौंदर्य, सं०—प्रभुदयाल मीतल, प्रका०—अग्रवाल प्रेस, मथुरा, सं०—२००७ वि०।

षट्ऋतु : काव्य-संग्रह, संक०—हफीजुल्लाह खाँ, प्रका०—नवल किशोर प्रेस लखनऊ, सं०—१८८९ ई०।

षट्ऋतु : हजारा, संक०—परमानंद सुहाने (मुद्रित), प्रका०—नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, स—१८८४ ई०।

हिंदी-काव्य में प्रकृति-चित्रण, ले०—किरण कुमारी गुप्ता, एम० ए०, प्र०—हिंदी-साहित्य : सम्मेलन प्रयाग, मु०—सम्मेलन : मुद्रणालय प्रयाग, सं० २००६ वि०, दो खंडों में विभक्त।

१. खोजरिपोर्ट : ना० प्र० सभा काशी, स०—१९२० ई०, पृ० ४१७।
२. मि० बं० वि०—३, पृ० १५५।

ग्रंथ : रचयिता

१. नायिका : भेद,
२. सतसई : टीका-कर्त्ता,
३. नखसिख,
४. बारहमासा : मासी,

कवि : नायिका-भेद

आ

इ

ई

उ

क

१. २. ये दोनों कवि एक हैं।

१.२. ये दोनों पुस्तकें एक हैं।

३.४ इन दोनों ग्रंथों के रचयिता—"केशवराय" भिन्न-भिन्न हैं। प्रथम ग्रंथ के रचयिता—मथुरावासी तथा दूसरे ग्रंथ-रचयिता—'बघेलखंडी'।

५.६ इस ग्रंथ के रचयिता—गोकुल : मथुरा के निवासी हैं।

ग

१. इस ग्रंथ के रचयिता—गणेश कवि (दूसरे) करौली (राजस्थान) के निवासी हैं।

२. ३. ये दोनों कवि एक ज्ञात होते हैं।

४. प्रथम पुस्तक-रचयिता 'गुलाब सिंह' भरतपुर (राजस्थान) के तथा दूसरी के गुलाब सिंह 'पंजाबी' हैं।

५. ६. ये दोनों पुस्तकें एक हैं।

घ

च

१. आप—गोपालराय, वृंदावन (मथुरा) निवासी हैं।

२. ३. ४. ये तीनों ग्रंथ एक ही कवि के हैं—विभिन्न नामों से।

छ

ज

१. जगत सिंह नाम के तीन कवि हुए हैं, प्रथम 'जगत-विलास' के कर्त्ता—जगत सिंह उदयपुर (मेवाड़) के राणा। द्वितीय 'रस-मृगांक' जगत-बिलास, जगत-प्रकाश, नायिका-'दर्शन' और 'नखसिख' के रचयिता—म० कु० जगतसिंह द्युतिहा गोंड़ा (अवध) के राजा, रसिक-प्रिया की टीका भी आप की है तथा तीसरे जगतसिंह भिनगा के राजा। जिन्होंने 'साहित्य-सुधानिधि' ग्रंथ लिखा। राजा जगतसिंह—गोंड़ा जिन्हें द्युविहा भी कहा जाता है, वे बिसेनराज-वंश भिनगा की-ही एक शाखा विशेष 'देवनहा' में तालुकेदार थे, जो आगे चलकर

"द्युतिहा" के बोले जाने लगे। आप-रचित ऊपर लिखे-ही ग्रंथ नहीं—अलंकार-साठि-दर्पण (रसं०—१८६४ बि०), उत्तम-मंजरी, चित्र मीमांसा, भारती-कंठाभरण—इत्यादि ग्रंथ भी हमारे देखने में आये हैं। अंतिम ग्रंथ—'भारतीय-कंठाभरण सं०—१८६४ वि० का लिखा देखा है।

१. परमानंद-रस-तरंग तथा ब्रज-विनोद-हजारा के रचयिता—"जगदीशलाल" भी अलग-अलग हैं। प्रथम ग्रंथ के रचयिता जगदीशलाल उना०—'लाल कवि हैं तथा द्वितीय ग्रंथ के रचयिता—जगदीश लाल बूंदी (राजस्थान) के गोस्वामी हैं। परमानंद-रस-तरंग को कोई-कोई नवीन कवि (वृंदाबन) कृत भी कहते हैं।

ध

न

१. कुब्जा-पच्चीसी, गोदा : मंगल, गोपी : प्रेम-पीयूष-प्रवाह, छंद : नवनीत, नवीनोत्सव-संग्रह, पावस-पचासा, पिंगल, प्रश्नोत्तर : सोलह-मात्राओं के छंदों का निरूपण, प्रेम-पच्चीसी, प्रेम-रत्न, वृंदावनाष्टक, वसंत-पचीसी, भाषा : काव्य-प्रकाश, मंजाष्टक, मनोरथ-मुक्तावली, मूर्ख-सतक, रहिमन-(कुंडलिया), राम-जानकी : अष्टक, श्यामांगावयव-भूषण, अर्थात् श्यामा : नख-सिख वर्णन, वैष्णव धर्म, स्नेह-सतक, स्फुट : काव्य, स्मार्त्त-रसाष्टक, हरिदासाष्टक––इत्यादि…।

भ

म

य

र

ल

व

श

स

ह

१. २. ये दोनों एक हैं।

३. ४. दो दोनों कवि एक हैं।

सतसई : टीका-कर्ता

ई

उ

क

ग

परमानंद, १५० । ग्रंथ : बिहारी-सतसई सटीक।
हरिप्रसाद, १२५ । ग्रंथ : संस्कृत-भाषांतर।

उर्दू : टीका

जोशी आनंदीलाल, १२६ । ग्रंथ : "सफ़रंग—सतसई" ।
देवीप्रसाद 'पीतम', १२६ । ग्रंथ : गुलजार-चमन ।

गुजराती : टीका

सवितानारायण, १२६ । ग्रंथ : भावार्थ-प्रकाशिका ।

सतसई : कुंडलियाँ

अंबिकादत्त व्यास, १२५ । ग्रंथ :
अज्ञात, १२५ ।
ईश्वर कवि, १२५ । ग्रंथ :
कृष्ण कवि, १२५ । ग्रंथ :
जानकी प्रसाद, १२५ । ग्रंथ :
ईश्वरी प्रसाद कायस्थ, १२५ । ग्रंथ :
गंगाधर भट्ट, १२५ । ग्रंथ :
जुल्फ़कार नवाब १२५ । ग्रंथ :
कर्त्ता-जोखूराम, १२५ ।
भानुप्रताप, १२५ । ग्रंथ :
भारतेंदु, १२५ । ग्रंथ :
साहबजादे-सुमेर सिंह, १२५ । ग्रंथ :
सतसई : कवित्त-सवैया ।

कुछ प्रसिद्ध : टीका-नाम

अनवर-चंद्रिका, अनवरखाँ ११८।
अमर-चंद्रिका, अमरसिंह कायस्थ ११८।
अमर-चंद्रिका, सूरतमिश्र १२४।

ग

गोकुल-चंद्रिका, गोकुल कवि १२१।

नख-सिख

ख

ग

घ

च

न

प

ब

भ

म

र

मुद्रित : ग्रंथ

ज

जवाहरलाल चतुर्वेदी, १५९ । ग्रंथ : आँख और कवि-गण ।

द

दिवाकर भट्ट, १५७ । ग्रंथ : नखसिख ।

न

नृपशंभु, १५७ । ग्रंथ : नखसिख ।

प

परमानंद सुहाने, १५८ । ग्रंथ : नखसिख-हजारा ।
प्रताप शाहि, १४५ । ग्रंथ : नखसिख (बलभद्र) की टीका ।

ब

बलभद्र, १४५ । ग्रंथ : नखसिख, संपा०—गोविंद गिल्लाभाई ।
बिहारी लाल, १५७ । ग्रंथ : नखसिख ।
बिहारी सिंह, १५८ । ग्रंथ : नखसिख : भूषण ।
बैजनाथ कुर्मी, १५८ । ग्रंथ : नखसिख-वर्णन ।

भ

भरमी कवि, १४ । ग्रंथ : नखसिख ।

म

माधौदास सोंनी, १५७ । ग्रंथ : नखसिख ।
माधवदास १५७ । ग्रंथ : नखसिख ।
मुं० गिरिधारी लाल, १५८ । ग्रंथ : नखसिख-संग्रह ।

र

राधावल्लभ, १५८ । ग्रंथ : नखसिख-वर्णन ।

ल

लीलाधर, १४६ । ग्रंथ : नखसिख ।

स

सत्यजीवन वर्मा, १५९। ग्रंथ : नयन (सूरदास)।
सेवक, १५८। ग्रंथ : नखसिख।

बारह-मासा : षट्ऋतु

अज्ञात, १६६, १६७, १६८, १७०। ग्रंथ : बारहमासी, बारहमासी : 'गदर' की, बारहमासी : प्रेम-सागर, बारहमासी : बिरहनी, बारहमासी : बेनीमाधौ, बारहमासी-रामचंद्र जू की, षट्ऋतु : वर्णन।
अवध बिहारी लाल, १६४। ग्रंथ : बारहमासा।
अहमद, १६६। ग्रंथ : बारहमासी।
आजम, १६४। ग्रंथ : षट्ऋतु।

क

कबीरदास, १६६। ग्रंथ : बारहमासी।
किरण कुमारी (गुप्ता), १७०। ग्रंथ : हिंदी-काव्य में प्रकृति-चित्रण।
केशवदास, १६४। ग्रंथ : बारहमासा।

ख

खैरशाह, १६४। ग्रंथ : बारहमासा।

ग

गंग कवि, १७०। ग्रंथ : षट्ऋतु-वर्णन।
गंगराम तिवारी, १६४। ग्रंथ : बारह-मासा।
गजराज सिंह, १७०। ग्रंथ : षट्ऋतु-विनोद।
गणेश प्रसाद, १६६। ग्रंथ : बारहमासी।
गोविंद कवि, १६३। ग्रंथ : कवित्त-संग्रह (षट्ऋतु-संग्रह)।
गोपाल कवि, १६३। ग्रंथ : चारों दिशाओं के सुख-दुख वर्णन।
गौरी शंकर, १६३। ग्रंथ : ऋतुराज-सतक।
गोविंद दास, १६६ ग्रंथ : बारहमासी।
ग्वाल कवि, १६९। ग्रंथ : षट्ऋतु।

भ

म

र

ल

श

शंकर कवि, १६५। ग्रंथ : बारह मासा : राजुल।
शिवदयाल, १६९। ग्रंथ : राधा जू की बारहमासा।
शिवलाल, १६९। ग्रंथ : षट्ऋतु।
शेख तकी, १६५। ग्रंथ : बारहमासा।

स

सबल स्याम, १७०। ग्रंथ : षट्ऋतु : बरवै।
सरदार कवि, १६३, १७०। ग्रंथ : ऋतु-विलास, षट्ऋतु-वर्णन।
सुंदर कवि, १६७। ग्रंथ : बारहमासी।
सूरदास, १६५ १६९। ग्रंथ : बारहमासा, राम जू कौ बारहमासा।
सेनापति, १६९। ग्रंथ : षटऋतु : कवित्त।

ह

हंसराज, १६६। ग्रंथ : बारहमासा।
हजारी लाल, १६७। ग्रंथ : बारहमासी।
हफीजुल्लाह खाँ, १७०। ग्रंथ : षट्ऋतु-काव्य संग्रह।
हरनाम कवि, १६५। ग्रंथ : बारहमासा।
हरिदास, १६६। ग्रंथ : बारहमासा।
हरिनारायण, १६७। ग्रंथ : बारहमासी।
हरीदास, १६६। ग्रंथ : बारहमासा।
हृषीकेश, १६३। ग्रंथ : ऋतुराज-मंजरी।

इति